सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष
वर्ष 03, अंक 147, नई दिल्ली, मंगलवार 05 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पांच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार .

03 दिल्ली का अपना, सबसे बड़ा फिल्म फेस्टिवल...
06 भारतीय महिला गणितज्ञ रमन परिमाला जिन्होंने विश्व को बदल दिया
08 नगर निगम द्वारा मकबूलपुरा चौक पर 7 दिवसीय सफाई एवं सौंदर्यीकरण

जन सुविधा एवं ग्रीन परिवहन के नाम पर सडकों पर उतारे गए ई-रिक्शा अब बन गए हैं मुसीबत, क्या है इससे बचाव का हल

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। आम जनता की सुविधाओं एवं ग्रीन परिवहन के नाम पर लगभग सभी राज्य सरकारों द्वारा देश के हर छोटे- बड़े शहरों व कस्बों में सड़कों पर बड़े पैमाने पर ई-रिक्शा उतारे। ई- रिक्शे उन लोगों को थमाए जो या तो तांगा, इक्का चलाते थे या हाथ रिक्शा।

पर्यावरण के मद्देनजर खटारा और धुआं उगलने वाले टेंपो का विकल्प भी ई- रिक्शे लोडिंग समझे गये। बेआवाज यह ई रिक्शे शुरू में तो सभी को अच्छे लगे, लेकिन अब यही ई रिक्शे धीरे- धीरे देशभर के घरेलू परिवहन के लिए मुसीबत बनते जा रहे है ।

पर्यावरण हितैषी परिवहन के नाम पर प्रयोग में लाए जा रहे ई रिक्शे यातायात व्यवस्था के लिए नित नई चुनौती बनने लगे हैं।

ई रिक्शा का ना तो ढंग से पंजीयन हुआ, ना इनके चालकों का प्रशिक्षण, ना ही इनके लिए स्टापेज बने और ना ही मार्गों का निर्धारण किया गया ।

फलस्वरुप इन ई रिक्शा वालों को जहां सवारी ने हाथ दिया, वहीं रिक्शा रोक दिया, चाहे पीछे से आ रहे वाहन चालक दुर्घटना का शिकार हो जाएं।

महानगरों और छोटे शहरों से लेकर कस्बों तक भले ही दो पहिया वाहन चलाने की जगह न हो, लेकिन इन्हें जगह- जगह पर अपने ई रिक्शे खड़े करने की जैसे अघोषित आजादी मिली हुई है।

ई रिक्शा चलाने वाले ज्यादातर लोग ना तो यातायात के नियम जानते हैं और ना ही इनके चालकों के पास कोई नागरिक सुरक्षा का बोध है। ऊपर से दिनों-दिन इनकी अराजकता भी सामने आ रही है।

लगभग हर शहर में प्रशासन द्वारा इन पर सख्ती कर ई रिक्शों के लिए रूट तय किए गए, रंग लगाकर पहचान देने की भी कोशिश की गई। ई रिक्शों को पालियों में भी चलवाने का प्रयास किया गया, लेकिन इनमें बढ़ रही बेलगाम प्रवृत्ति को देखते हुए कहा जा सकता है कि प्रशासन की सारी कसरत जाया हो रही है।

बता दें कि ई रिक्शा संचालकों के विरोध के बाद प्रशासन की तमाम सख्ती हवा हो गई। इतना ही नहीं प्रशासन, यातायात पुलिस व आरटीओ भी इनके आगे बेबस साबित हो रहे हैं । अब सुविधा और पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए लाये गये ये ई रिक्शे सिरदर्द बन गये हैं और खामियाजा आम जनता भुगत रही है।

भारत में ई-रिक्शा की संख्या लाखों में है, जिसमें पंजीकृत और गैर पंजीकृत दोनों शामिल हैं। 2022-23 में ही अंदाजन 3 लाख पंजीकृत ई-रिक्शा थे और गैर-पंजीकृत ई-रिक्शा की संख्या कहीं अधिक। बीते दो वर्षों में इनकी संख्या अनुमान से भी कहीं अधिक बढ़ चुकी है।

शहरों में पिछले कई वर्षों से वन-वे घोषित मार्गों पर ई-रिक्शा वाले बिना रोक टोक, बेधड़क दौड़ते नजर आते है। यातायात पुलिस एवं पुलिस खड़ी रहती हैं। जहां पहले तांगों, टेम्पो के कारण आम लोगों को परेशानी होती थी वहां अब इसकी जगह ई-रिक्शा ने ले ली है। हर शहर में ई-रिक्शा के अघोषित अस्थायी स्टैंड बन गये है। इससे बार-बार ट्रैफिक जाम होता रहता है। पैदल निकलने तक की जगह नहीं रहती है। ई रिक्शा वाले परम स्वतंत्र हैं। जहां से इच्छा हुई, वहीं से सवारी बैठा ली। कोई रोकने वाला नहीं है। रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, घनी आबादी वाले क्षेत्र इनके पसंदीदा जगह बनते जा रहे हैं।

सवाल ये है कि इन ई रिक्शा चालकों की बढ़ती अनुशासन हीनता व अराजकता का इलाज क्या है?

दुनिया के अनेक गरीब, अमीर देशों में भी आज सड़कों पर ई रिक्शे

क्या दिल्ली परिवहन विभाग कानून, नियम, अधिनियम और नीति कार्य-योजना को मानने के लिए बाध्य नहीं ?

संजय बाटला संपादक
परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग वर्ष 2020 से लगातार अपनी कार्यशैली के लिए सुर्ख़ियों में हैं उसके बावजूद उच्चतम न्यायालय, गृह मंत्रालय भारत सरकार, उपराज्यपाल, उच्च न्यायालय, मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार सब कुछ देखते और जानते हुए भी मूक होकर बैठे हैं आखिर क्यों ?

क्या दिल्ली परिवहन विभाग अपनी इसी कार्यशैली के दम पर जनता को लूटकर और परेशान कर राजस्व में इजाफा करवा और विभागीय खर्चे में कटौती दिखाकर सबको मौन किए हुए है।

आप सभी भली भांति परिचित हैं की गैजेट नोटिफिकेशन द्वारा जनहित में शुरू किए गए कार्यालयों को बिना पूर्व सूचना और जनता से शिकायत, सुझाव और राय लिए बिना तथा बंद करने का गैजेट नोटिफिकेशन जारी किए बिना बंद नहीं किया जा सकता पर दिल्ली परिवहन विभाग ने दिल्ली में जनहित में चल रहे 13 क्षेत्रीय कार्यालयों में से बिना पूर्व सूचना प्रदान किए और बिना जनता से आब्जेक्शन/ सजेशन मांगे बिना बंद

करने का गैजेट नोटिफिकेशन जारी किए बंद कर दिखाया।

दिल्ली परिवहन विभाग ने सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, कैट और दिल्ली लॉ विभाग के दिशा निर्देश/ परामर्श/ के साथ सर्विस बुक के नियमों को ताक पर रख कर तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त कर दिखाया,

विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार दिल्ली परिवहन विभाग अब दिल्ली से सभी क्षेत्रीय कार्यालयों को बंद कर बुराड़ी परिसर में पूरी दिल्ली की जनता के लिए मात्र एक कार्यालय बनाने का मन बना चुका है और इसकी घोषणा कभी भी कर सकता है।

आपकी जानकारी हेतु बता दें बुराड़ी परिसर में दिल्ली के व्यवसायिक वाहनों को जांच प्रमाण पत्र जारी किया जाता हैं और विश्वस्त जानकारी के अनुसार अगर सभी क्षेत्रीय कार्यालयों को बंद कर बुराड़ी परिसर में एकलौता कार्यालय बनना है तो इसका अर्थ हुआ दिल्ली परिवहन विभाग बुराड़ी परिसर से वाहन जांच पड़ताल शाखा को बंद करने का अपना मन बना चुका है।

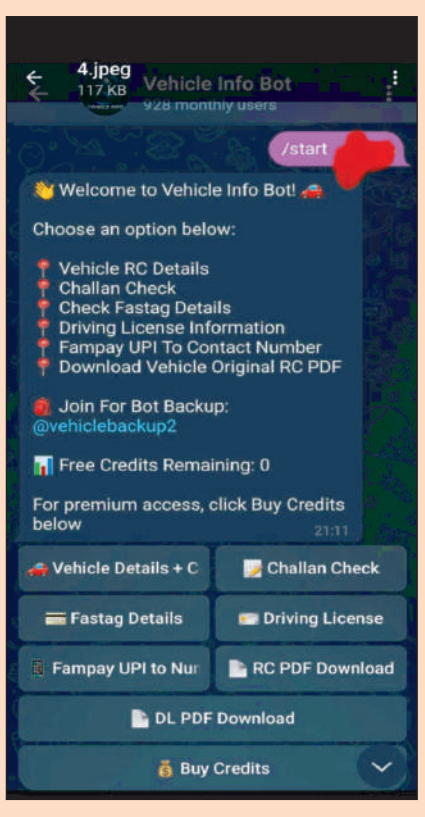

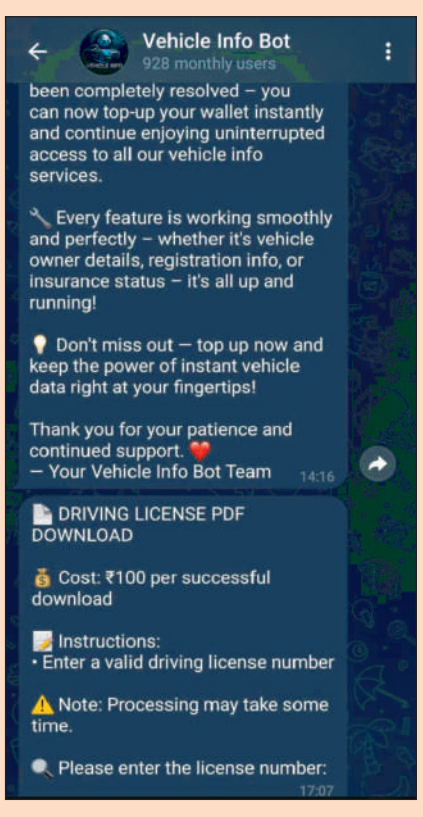

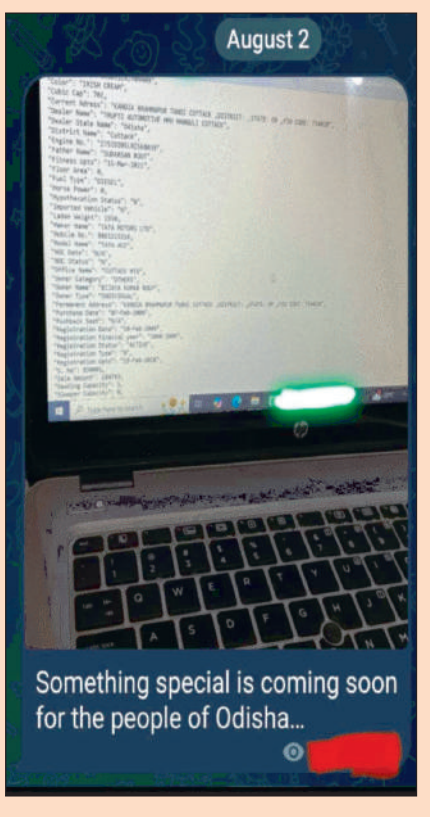

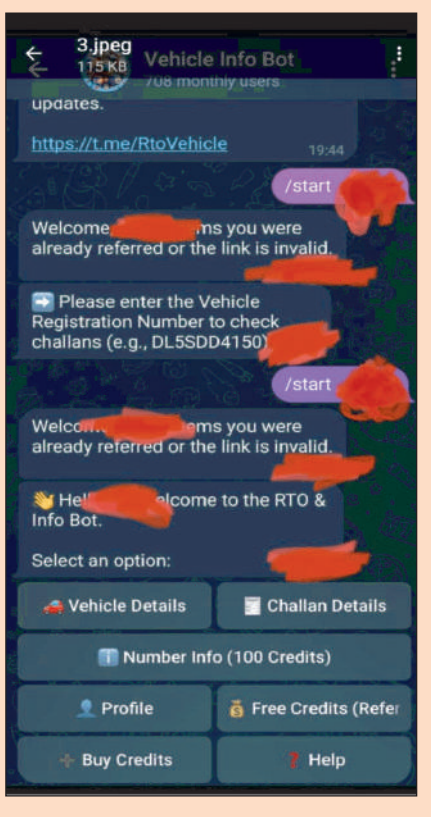

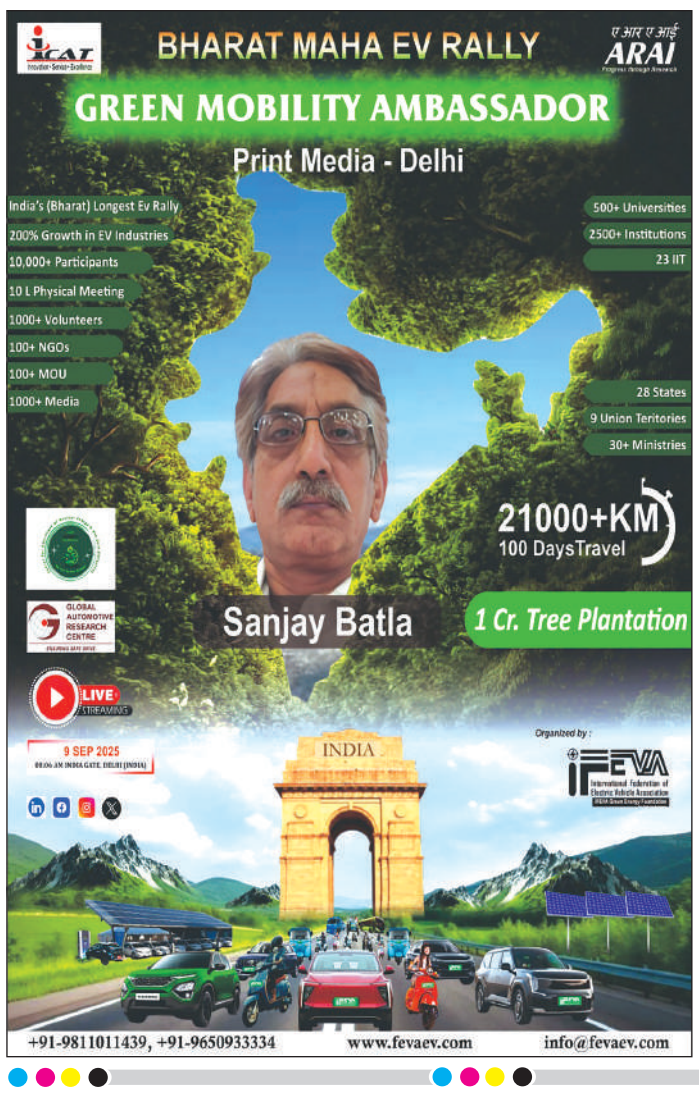

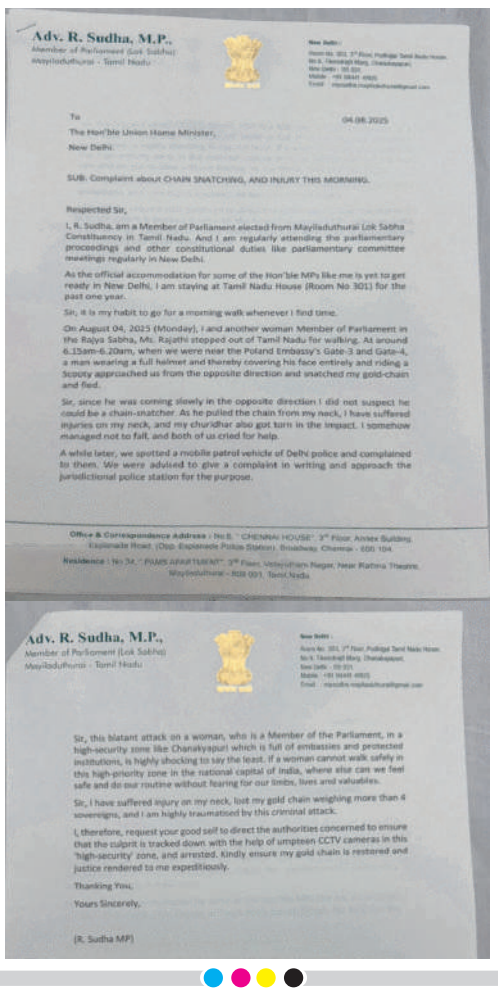

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा गैर कानूनी तरीके से किए जा रहे कार्यों पर आखिर प्रशासन, दिल्ली सरकार और गृह मंत्रालय कोई कार्यवाही क्यो नहीं कर रहा और उच्च न्यायालय दिल्ली एवम् उच्चतम न्यायालय भारत संज्ञान क्यों नहीं ले रही।

जनहित, जन सुरक्षा और जन अधिकारों की रक्षा हेतु परिवहन विभाग द्वारा गैर कानूनी तरीके से किए गए सभी आदेशों को वापिस करवाने के आदेश उपराज्यपाल दिल्ली को तत्काल जारी करने चाहिए।

वाहन मालिकों के डेटा की निरंतर चोरी और अधिकारियों की निष्क्रियता के संबंध में तत्काल शिकायत

संजय बाटला

मैं यह वाहन मालिकों, चालान विवरण और ड्राइविंग लाइसेंस संबंधी जानकारी से जुड़े डेटा चोरी के लगातार और चिंताजनक मुद्दे पर गंभीर चिंता व्यक्त करने के लिए लिख रहा हूँ। इस मुद्दे की पूर्व में कई बार स्पष्ट और विश्वसनीय प्रमाणों के साथ रिपोर्ट किए जाने के बावजूद, जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा इस चोरी को रोकने के लिए कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

यह निरंतर निष्क्रियता प्रशासनिक पदानुक्रम में उदासीनता और संभवतः गहरी जड़ें जमाए भ्रष्टाचार के चिंताजनक स्तर को दर्शाती है। निर्दोष नागरिकों के चुराए गए डेटा का कथित तौर पर विभिन्न अवैध गतिविधियों के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है, जिससे आम जनता खतरे में पड़ रही है और उनकी व्यक्तिगत सुरक्षा और गोपनीयता से समझौता हो रहा है।

यह शर्मनाक है कि बार-बार चेतावनी देने के बाद भी, अधिकारियों ने इस मुद्दे पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। मैं एक बार फिर पहले से साझा किए गए सबूत पेश करने के लिए तैयार हूँ, बस इस उम्मीद में कि संबंधित विभाग अपनी नींद से जागेंगे और आगे और नुकसान होने से पहले ही कार्रवाई करने के लिए मजबूर होंगे।

मैं यह माँग करता हूँः

डेटा लीक के स्रोत और पैमाने का पता लगाने के लिए तुरंत एक उच्च स्तरीय जांच शुरू की जानी चाहिए।

इसमें शामिल व्यक्तियों या संस्थाओं के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए।

नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए उठाए गए कदमों के संबंध में एक पारदर्शी रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए।

उन लोगों की जवाबदेही तय की जानी चाहिए जिन्होंने सबूत उपलब्ध होने के बावजूद पूर्व चेतावनियों को नजरअंदाज किया।

यदि इस मामले की उपेक्षा इसी प्रकार जारी रही, तो इससे जनता में यह धारणा और मज़बूत होगी कि व्यवस्था से समझौता किया जा रहा है और नागरिकों के अधिकारों का हनन किया जा रहा है। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस शिकायत को गंभीरता से लें और जनकल्याण एवं डेटा सुरक्षा के हित में तत्काल कार्रवाई करें।

दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल

परिवहन विशेष न्यूज, नई दिल्ली। दिल्ली के हाईसिक्योरिटी एरिया में तमिलनाडु की सांसद सुधा से चेन स्नेचिंग की घटना यह साबित करती है कि दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था बद से बद्तर हो गई है। सुधा तमिलनाडु भवन में रहती हैं।आज सोमवार को सुबह टहलने निकली थी, तभी ये वारदात हुई। जब हाईसिक्योरिटी एरिया में ऐसी वारदात घट रही है तो दिल्ली की आम जनता कैसे रहे सुरक्षित, बड़ा सवाल ?

ट्रक ड्राइवर के अपहरण और टॉर्चर का सनसनीखेज मामला, दो गिरफ्तार, आरोपी फरार

परिवहन विशेष न्यूज

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के जगदलपुर में एक ट्रक ड्राइवर के अपहरण और क्रूरतापूर्वक की गई मारपीट के मामले ने सनसनी फैला दी है। उत्तर प्रदेश के कौशांबी निवासी पीड़ित ड्राइवर खुर्शीद अहमद के साथ न सिर्फ बेरहमी से मारपीट की गई, बल्कि उसे निर्वस्त्र कर अपमानित किया गया, वीडियो कॉल पर टॉर्चर दिखाया गया, और एक लाख रुपये की फिरौती भी मांगी गई। इस घटना ने पूरे इलाके में कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह मामला बोधघाट थाना क्षेत्र का है। घटना के खुलासे के बाद बस्तर पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि मुख्य आरोपी अब भी फरार हैं। पुलिस ने फार्म हाउस को सील कर साक्ष्य जुटा लिए हैं और फरार आरोपियों की तलाश में दबिश दी जा रही हैं।

फार्म हाउस में बनाई गई टॉर्चर की योजना बताया गया है कि खुर्शीद अहमद बीते 10 वर्षों से जगदलपुर के गीदम नाका स्थित भुवन कबाड़ी यार्ड में मालिक नितिन साहू के अधीन काम करता था। उसका आरोप है कि उससे अवैध रूप से तांबा और पीतल जैसे कीमती स्क्रैप को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का दबाव डाला जा रहा था। जब उसने इससे इनकार किया, तो उसे धमकियां मिलनी शुरू हो गईं और उसने नौकरी छोड़ दी। कुछ समय बाद उसे वापस बुलाया गया और यह कहकर झांसा दिया गया कि "सब भूल जाओ, वापस आ जाओ"। वह लौट आया, लेकिन २५ जुलाई को कबाड़ी यार्ड का मालिक नितिन साहू और उसका दोस्त आयुष राजपूत उसे कार में जबरदस्ती बिठाकर अजुनी फार्म हाउस ले गए, जहां पहले से नीलम नाग और संजू उर्फ पिंटू नामक दो युवक मौजूद थे।

साढ़े तीन घंटे तक अमानवीय यातना फार्म हाउस में चारों आरोपियों ने मिलकर करीब साढ़े तीन घंटे तक खुर्शीद को बेल्ट, लात-घूंसे और हाथों से बुरी तरह पीटा। उसे निर्वस्त्र किया गया और उस पर पेशाब तक किया गया। इस दौरान यह पूरा घटनाक्रम वीडियो कॉल के माध्यम से खुर्शीद के गांव के एक युवक को दिखाया गया, जिसने चतुराई से स्क्रीन रिकॉर्डिंग की और बोधघाट थाने में शिकायत दर्ज कराई। जैसे ही पुलिस को शिकायत की भनक लगी, आरोपी खुर्शीद को तेलंगाना के हैदराबाद की ओर ले गए। वहां उसे एक सुनसान इलाके में चाकू दिखाकर धमकाया गया और स्क्रिप्ट के अनुसार बोधघाट थाने से आए कॉल पर जबरन "सब ठीक है" कहने के लिए मजबूर किया गया।

जंगल में छोड़ा, किसी तरह बचकर पहुंचा गांव इसके बाद खुर्शीद को एक सुनसान जंगल में छोड़ दिया गया, जहां से वह किसी तरह पास की दुकान तक पहुंचा, फोन चार्ज किया और गांव के एक जानकार ड्राइवर से मदद लेकर वापस गांव पहुंचा। फिर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती हुआ। २ अगस्त को वह परिजनों के साथ दोबारा बोधघाट थाना पहुंचा और विस्तृत आवेदन दिया, जिसमें उसने अपहरण, मारपीट, फिरौती मांगने और जान से मारने की धमकी देने की बात कही।

दो आरोपी गिरफ्तार, मुख्य आरोपी अब भी फरार बस्तर एसपी शलभ कुमार सिन्हा, एएसपी माहेश्वर नाग और सीएसपी अमित देवांगन के मार्गदर्शन में एक विशेष टीम गठित की गई। टीम प्रभारी लीलाधर राठौर के नेतृत्व में जांच शुरू की गई और पीड़ित की निशानदेही पर फार्म हाउस को सील कर दिया गया। पूछताछ में दो आरोपियों नीलम नाग और संजू उर्फ पिंटू ने अपनी संलिप्तता कबूल की और नितिन साहू एवं आयुष राजपूत के नाम उजागर किए। दोनों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया है। फरार मुख्य आरोपी नितिन साहू और आयुष राजपूत की तलाश के लिए विशेष टीमें रवाना की गई हैं।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए टॉर्चर के वीडियो घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें एक आरोपी सिगरेट मुंह में दबाकर खुर्शीद को बेल्ट से मारते हुए डांस कर रहा है और उसे भी नाचने के लिए मजबूर कर रहा है। एक अन्य वीडियो में खुर्शीद की पत्नी वीडियो कॉल पर आरोपी से विनती कर रही है कि उसके पति को छोड़ दिया जाए, जबकि खुर्शीद डरा हुआ कहता है – "सब ठीक है"। खुर्शीद ने कहा है कि वह अब भी डरा हुआ है और आरोपियों से उसे जान का खतरा है। उसने प्रशासन और पुलिस से सुरक्षा की मांग की है और कहा है कि यदि जल्द आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया गया, तो कोई अनहोनी हो सकती है। पुलिस ने मामले में IPC की धारा 140(२), 309(६), 133, और आर्म्स एक्ट की धारा २५ व २७ के तहत अपराध पंजीबद्ध किया है।

पुत्रदा एकादशी आज

एकादशी हिंदू धर्म का प्रमुख व्रत है, जिसे हर महीने की ग्यारहवीं तिथि पर रखा जाता है। इस दिन सृष्टि के संचालक भगवान विष्णु की उपासना की जाती है। इसके प्रभाव से साधक की सभी इच्छाएं पूरी और जीवन में सुख-समृद्धि वास करती हैं। यह तिथि महिलाओं के लिए अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। दरअसल, एकादशी पर तुलसी पूजन का विधान है। इसके प्रभाव से वैवाहिक जीवन सुखमय और रिश्ते मजबूत होते हैं। इस दौरान पुत्रदा एकादशी पर तुलसी पूजन करना और भी लाभकारी माना जाता है। बता दें, तुलसी को देवी लक्ष्मी का अवतार माना जाता है, इसलिए इस दिन उनके पास दीप जलाने और आरती करने से संतान सुख के योग बनते हैं। यही नहीं संतान प्राप्ति का आशीर्वाद भी महिलाओं को मिलता है। इस बार 5 अगस्त को पुत्रदा एकादशी है। इस तिथि पर ज्येष्ठा नक्षत्र और ऐन्द्र योग बना रहेगा।

पुत्रदा एकादशी शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, सावन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि की शुरुआत 04 अगस्त को सुबह 11 बजकर 41 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन 05 अगस्त को दोपहर 01 बजकर 12 मिनट पर होगा। ऐसे में पुत्रदा एकादशी व्रत 05 अगस्त को किया जाएगा और व्रत का पारण अगले दिन यानी द्वादशी तिथि पर किया जाएगा।

पुत्रदा एकादशी व्रत पारण का समय

==========

पुत्रदा एकादशी व्रत का पारण 06 अगस्त को किया जाएगा। इस दिन व्रत का पारण करने का शुभ मुहूर्त सुबह 07 बजकर 15 मिनट से 08 बजकर 21 मिनट तक है।

पुत्रदा एकादशी व्रत पारण की विधि

==========

इस दिन स्नान करने के बाद सूर्य देव को अर्घ्य दें। इसके बाद मंदिर की सफाई करने के बाद पूजा-अर्चना करें। देसी घी का दीपक जलाकर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की आरती करें। मंत्रों का जप और विष्णु चालीसा का पाठ करें। इसके बाद सात्विक चीजों का भोग लगाएं। गरीब लोगों या मंदिर में दान करें।

पुत्रदा एकादशी शुभ योग

==========

सावन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि पर कई मंगलकारी संयोग बन रहे हैं। इनमें इंद्र योग का संयोग सुबह 07 बजकर 25 मिनट तक है। वहीं, रवि योग का संयोग सुबह 05 बजकर 18 मिनट से सुबह 11 बजकर 23 मिनट तक है। इसके साथ ही शिववास योग का संयोग दोपहर 01 बजकर 13 मिनट से है। इन योग में लक्ष्मी नारायण जी की पूजा करने से साधक की हर एक मनोकामना पूरी होगी।

पद्म पुराण के अनुसार इस व्रत का महत्व

==========

पद्म पुराण में वर्णित कथा के अनुसार भूतपूर्व काल में माहिष्मती नगरी के राजा महीजित के कोई संतान नहीं थी। उन्होंने ऋषि-मुनियों से परामर्श लिया और अंततः महर्षि लोमश ने उन्हें श्रावण शुक्ल एकादशी का व्रत करने की सलाह दी। राजा ने विधिपूर्वक इस व्रत का पालन किया, जिससे उन्हें शीघ्र ही संतान की प्राप्ति हुई। इस प्रसंग के आधार पर यह एकादशी 'पुत्रदा' के नाम से विख्यात हुई। इस दिन का व्रत सभी पापों का नाश करता है और संतान सुख के साथ-साथ समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है।

पूजा विधि

==========

पवित्रा एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। घर के मंदिर या पूजा स्थल को गंगाजल से शुद्ध करें। भगवान विष्णु की प्रतिमा या चित्र को स्थापित करें। उन्हें पीले वस्त्र पहनाकर पीले पुष्प, तुलसीदल, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित करें। इसके बाद श्रद्धापूर्वक 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करें तथा विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। दिनभर निराहार या फलाहार व्रत रखें और व्रत के नियमों का पालन करें। रात्रि में भगवान विष्णु का कीर्तन, भजन और जागरण करना अत्यंत पुण्यदायक होता है।

व्रत के लाभ और किन्हें यह व्रत करना चाहिए

==========

यह व्रत उन दंपतियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है जो संतान सुख की इच्छा रखते हैं। या फिर संतान की किसी भी समस्या से जूझ रहे हों। पद्म पुराण में कहा गया है कि जो श्रद्धा और नियमपूर्वक इस व्रत को करता है उसके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि आती है। यह व्रत विद्यार्थियों, गृहस्थों और मोक्ष की अभिलाषा रखने वालों के लिए भी अत्यंत कल्याणकारी है।

बातें बिल्व वृक्ष की

1. बिल्व वृक्ष के आसपास सांप नहीं आते
2. अगर किसी की शव यात्रा बिल्व वृक्ष की छाया से होकर गुजरे तो उसका मोक्ष हो जाता है
3. वायुमंडल में व्याप्त अशुध्दियों को सोखने की क्षमता सबसे ज्यादा बिल्व वृक्ष में होती है
4. चार पांच छः या सात पत्तो वाले बिल्व पत्रक पाने वाला परम भाग्यशाली और शिव को अर्पण करने से अनंत गुना फल मिलता है
5. बेल वृक्ष को काटने से वंश का नाश होता है।और बेल वृक्ष लगाने से वंश की वृद्धि होती है।
6. सुबह शाम बेल वृक्ष के दर्शन मात्र से पापो का नाश होता है।
7. बेल वृक्ष को सींचने से पितर तृप्त होते है।
8. बेल वृक्ष और सफ़ेद आक को जोड़े से लगाने पर अटूट लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
9. बेल पत्र और ताम्र धातु के एक विशेष प्रयोग से ऋषि मुनि स्वर्ण धातु का उत्पादन करते थे।
10. जीवन में सिर्फ एक बार और वो भी यदि भूल से भी शिव लिंग पर बेल पत्र चढ़ा दिया हो तो भी उसके सारे पाप मुक्त हो जाते है
11. बेल वृक्ष का रोपण, पोषण और संवर्धन करने से महादेव से साक्षात्कार करने का अवश्य लाभ मिलता है।

कृपया बिल्व पत्र का पेड़ जरूर लगाये । बिल्व पत्र के लिए पेड़ को क्षति न पहुचाएं

शिवजी की पूजा में ध्यान रखने योग्य बात 1

शिव पुराण के अनुसार भगवान शिव को कौन सी चीज़ चढाने से मिलता है क्या फल -

किसी भी देवी-देवता का पूजन करते वक्त उनको अनेक चीज़ें अर्पित की जाती है। प्रायः भगवन को अर्पित की जाने वाली हर चीज़ का फल अलग होता है। शिव पुराण में इस बात का वर्णन मिलता है की भगवन शिव को अर्पित करने वाली अलग-अलग चीज़ों का क्या फल होता है। शिवपुराण के अनुसार जानिए कौन सा अनाज भगवान शिव को चढ़ाने से क्या फल मिलता हैः

1. भगवान शिव को चावल चढ़ाने से धन की प्राप्ति होती है।
2. तिल चढ़ाने से पापों का नाश हो जाता है।
3. जौ अर्पित करने से सुख में वृद्धि होती है।
4. गेहूं चढ़ाने से संतान वृद्धि होती है।यह सभी अन्न भगवान को अर्पण करने के बाद गरीबों में वितरीत कर देना चाहिए।

शिव पुराण के अनुसार जानिए भगवान शिव को कौन सा रस (द्रव्य) चढ़ाने से उसका क्या फल मिलता है

1. ज्वर (बुखार) होने पर भगवान शिव को जलधारा चढ़ाने से शीघ्र लाभ मिलता है। सुख व संतान की वृद्धि के लिए भी जलधारा द्वारा शिव की पूजा उत्तम बताई गई है।
2. नपुंसक व्यक्ति अगर शुद्ध घी से भगवान शिव का अभिषेक करे, ब्राह्मणों को भोजन कराए तथा सोमवार का व्रत करे तो उसकी समस्या का निदान संभव है।
3. तेज दिमाग के लिए शक्कर मिश्रित दूध भगवान शिव को चढ़ाएं।
4. सुगंधित तेल से भगवान शिव का अभिषेक करने पर समृद्धि में वृद्धि होती है।
5. शिवलिंग पर ईख (गन्ना) का रस चढ़ाया जाए तो सभी आनंदों की प्राप्ति होती है।
6. शिव को गंगाजल चढ़ाने से भोग व मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है।
7. मधु (शहद) से भगवान शिव का अभिषेक करने से राजयक्ष्मा (टीबी) रोग में आराम मिलता है।

शिव पुराण के अनुसार जानिए भगवान शिव को कौन का फूल चढ़ाया जाए तो उसका क्या फल मिलता है

1. लाल व सफेद आंकड़े के फूल से भगवान शिव का पूजन करने पर भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।
2. चमेली के फूल से पूजन करने पर वाहन सुख मिलता है।
3. अलसी के फूलों से शिव का पूजन करने से मनुष्य भगवान विष्णु को प्रिय होता है।
4. शमी पत्रों (पत्तों) से पूजन करने पर मोक्ष प्राप्त होता है।
5. बेला के फूल से पूजन करने पर सुंदर व सुशील पत्नी मिलती है।
6. जूही के फूल से शिव का पूजन करें तो घर में कभी अन्न की कमी नहीं होती।
7. कनेर के फूलों से शिव पूजन करने से नए वस्त्र मिलते हैं।
8. हरसिंगार के फूलों से पूजन करने पर सुख-सम्पत्ति में वृद्धि होती है।
9. धतूरे के फूल से पूजन करने पर भगवान शंकर सुयोग्य पुत्र प्रदान करते हैं, जो कुल का नाम रोशन करता है।
10. लाल डंठलवाला धतूरा पूजन में शुभ माना गया है।

।।ॐ का रहस्य ।।

ओ म् का उच्चारण करने से आपके मन में निराशा के भाव उत्पन्न नहीं होते है। आत्म हत्या जैसे विचार भी मन में नहीं आते है। जो बच्चे पढ़ाई में मन नहीं लगाते है या फिर उनकी स्मरण शक्ति कमजोर है, ॐ के उच्चारण से उनकी एकाग्रता बढ़ती है, तनाव में कमी आती है, पाचन शक्ति दुरुस्त होती है

मन पर नियन्त्रण करके शब्दों का उच्चारण करने की क्रिया को मन्त्र कहते है। मंत्रों का प्रभाव हमारे मन व तन पर पड़ता है। कहा जाता है जैसा रहेगा मन वैसा रहेगा तन। यदि हम मानसिक रूप से स्वस्थ्य हैं तो हमारा शरीर भी स्वस्थ्य रहेगा। मन को स्वस्थ्य रखने के लिए मन्त्र का जाप जरूरी है। ओ म तीन अक्षरों से बना है। अ उ और म से निर्मित यह शब्द सर्व शक्तिमान है। अदम्य साहस देने वाले ओ म के उच्चारण मात्र से विभिन्न प्रकार की समस्याओं का नाश होता है। शिव ही सत्य है। शिव ही धरती को ऊर्जा है। जीवन का हर सार शिव में ही समाहित है। शिव की महिमा का वर्णन सभी ग्रन्थों में मिलता है।

सृष्टि के आरंभ में ध्वनि गूंजी ओ म और पूरे ब्रह्माण्ड में इसकी गूंज फैल गयी। पुराणों में ऐसी कथा मिलती है कि इसी शब्द से भगवान शिव विष्णु और ब्रह्मा प्रकट हुए। ओ म को सभी मंत्रों का बीज मंत्र ध्वनियों एवं शब्दों की जननी कहा जाता है। ओ म शब्द के नियमित उच्चारण मात्र से रोग एवं तनाव से मुक्ति मिलती है। धर्माचार्य ओ म का जप करने की सलाह देते हैं। जबकि वास्तुविदों का मानना है कि ओ म के प्रयोग से घर के वास्तु दोषों को भी दूर किया जा सकता है। ओ म मंत्र में ब्रह्माण्ड का स्वरूप व त्रिदेवों का वास होता है इसलिए हर मंत्र में इसका उच्चारण होता है। जैसे- ओ म नमो भगवते वासुदेव व ओ म नमः शिवाय। ओ म मंत्र के जप से मनुष्य ईश्वर के करीब पहुंचता है।

शास्त्रों के अनुसार योग दर्शन में यह स्पष्ट है कि ओम शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है। अ, उ, म। प्रत्येक अक्षर ईश्वर के नामों को समेटे हुए है। जैसे अ से व्यापक सर्वदेशीय उपासना करने योग्य है। उ से बुद्धिमान सूक्ष्म सब अच्छाइयों का नियम करने वाला है। म से अनंत अमर ज्ञानवान वास्तव में ईश्वर के अनगिनत नाम ओ म शब्द में ही आ सकते हैं।

अनेक बार ॐ का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनावरहित हो जाता है।

अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है तो ओ म के उच्चारण से उत्तम कुछ भी नहीं!

यह शरीर के विषैले तत्त्वों को दूर करता है, अर्थात तनाव के कारण पैदा होने वाले द्रव्यों पर नियंत्रण करता है।

यह हृदय और खून के प्रवाह को संतुलित रखता है।

इससे पाचन शक्ति तेज होती है।

इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है।

थकान से बचने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं।

नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है। रात को सोते समय नींद आने तक मन में इसको करने से निश्चित नींद आएगी।

कुछ विशेष प्राणायाम के साथ इसे करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

इस तरह से अगर आप ॐ का उच्चारण करेंगे तो निश्चित आपको इसके लाभ भी प्राप्त होंगे। इस महामंत्र का जाप करना हर कष्टों का निवारण करना है। ऐसा शास्त्रों में बताया गया है।

ॐ एक महामंत्र है। ओ म अद्भुत है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक है। बहुत-सी आकाश गंगाएँ इसी तरह फैली हुई है। ब्रह्म का अर्थ होता है विस्तार फैलाव। ओंकार ध्वनि के १०० से भी अधिक अर्थ दिए गए हैं। यह अनादि और अनंत तथा निर्वाण की अवस्था का प्रतीक है। ॐ को ओम कहा जाता है। उसमें भी बोलते वक्त ओ पर ज्यादा जोर होता है। इसे प्रणव मंत्र भी कहते हैं। इस मंत्र का प्रारंभ है अंत नहीं। यह ब्रह्मांड की अनाहत ध्वनि है। इसे अनहद भी कहते हैं। तपस्वी और ध्यानियों ने जब ध्यान की गहरी अवस्था में सुना की कोई एक ऐसी ध्वनि है जो लगातार सुनाई देती रहती है शरीर के भीतर भी और बाहर भी। हर कहीं वही ध्वनि निरंतर जारी है। और उसे सुनते रहने से मन और आत्मा शांती महसूस करती है। तो उन्होंने उस ध्वनि को नाम दिया ओ म। साधारण मनुष्य उस ध्वनि को सुन नहीं सकता लेकिन जो भी ओ म का उच्चारण करता रहता है, वह इस ध्वनि को महसूस कर सकता है। परमात्मा से जुड़ने का साधारण तरीका है ॐ का उच्चारण करते रहना।

ॐ उच्चारण की विधि-

प्रातः उठकर पवित्र होकर ओंकार ध्वनि का उच्चारण करें। ॐ का उच्चारण पद्मासन, अर्धपद्मासन, सुखासन, वज्रासन में बैठकर कर सकते हैं। ॐ जोर से बोल सकते हैं। इससे शरीर और मन को एकाग्र करने में मदद मिलेगी। दिल की धड़कन और रक्तसंचार व्यवस्थित होगा। इससे मानसिक बीमारियाँ दूर होती हैं। अप्रिय शब्दों से निकलने वाली ध्वनि से मस्तिष्क में उत्पन्न काम क्रोध मोह भय लोभ खत्म होते है। कम से कम १०८ बार ओ म का उच्चारण करना चाहिए। ।।**हर हर महादेव**।।

पशुपतिनाथ की महिमा

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर की है अनोखी महिमा ?

अगर आप कभी नेपाल घुमने जाते है तो आपको वहां जाकर इस बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं होगा कि आप एक अलग देश में है। कुछ भारत जैसी संस्कृति और संस्कारों को देखकर आप आश्चर्यचकित जरुर हो जायेंगे। आप अगर शिव भगवान के भक्त है तो आपको एक बार नेपाल स्थित भगवान शिव का पशुपतिनाथ मंदिर जरुर जाना चाहिए।

नेपाल में भगवान शिव का पशुपतिनाथ मंदिर विश्वभर में विख्यात है। इसका असाधारण महत्व भारत के अमरनाथ व केदारनाथ से किसी भी प्रकार कम नहीं है। पशुपतिनाथ मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू से तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम देवपाटन गांव में बागमती नदी के तट पर स्थित है।

यह मंदिर भगवान शिव के पशुपति स्वरूप को समर्पित है। यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक विरासत स्थल की सूची में शामिल भगवान पशुपतिनाथ का मंदिर नेपाल में शिव का सबसे पवित्र मंदिर माना जाता है।

यह मंदिर हिन्दू धर्म के आठ सबसे पवित्र स्थलों में से एक है। नेपाल में यह भगवान शिव का सबसे पवित्र मंदिर है। इस अंतर्राष्ट्रीय तीर्थ के दर्शन के लिए भारत के ही नहीं, अपितु विदेशों के भी असंख्य यात्री और पर्यटक काठमांडू पहुंचते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव यहां पर चिंकारे का रूप धारण कर निद्रा में चले बैठे थे। जब देवताओं ने उन्हें खोजा और उन्हें वाराणसी वापस लाने का प्रयास किया तो उन्होंने नदी के दूसरे किनारे पर छलांग लगा दी। कहा जाता है इस दौरान उनका सींग चार टुकड़ों में टूट गया था। इसके बाद भगवान पशुपति चतुर्मुख लिंग के रूप में यहीं प्रकट हुए थे।

पशुपतिनाथ लिंग विग्रह में चार दिशाओं में चार मुख और ऊपरी भाग में पांचवां मुख है। प्रत्येक मुखाकृति के दाएं

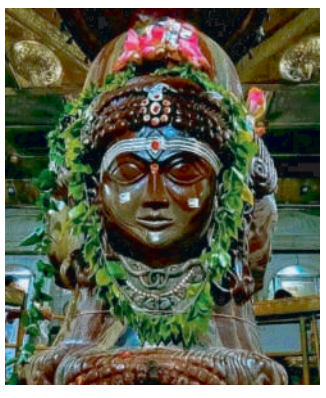

हाथ में रुद्राक्ष की माला और बाएं हाथ में कमंडल है। प्रत्येक मुख अलग-अलग गुण प्रकट करता है। पहला मुख 'अघोर' मुख है, जो दक्षिण की ओर है। पूर्व मुख को 'तत्पुरुष' कहते हैं। उत्तर मुख 'अर्धनारीश्वर' रूप है। पश्चिमी मुख को 'सद्योजात' कहा जाता है। ऊपरी भाग 'ईशान' मुख के नाम से पुकारा जाता है। यह निराकार मुख है। यही भगवान पशुपतिनाथ का श्रेष्ठतम मुख माना जाता है।

इतिहास को देखने पर ज्ञात होता है कि पशुपतिनाथ मंदिर में भगवान की सेवा करने के लिए 1747 से ही नेपाल के राजाओं ने भारतीय ब्राह्मणों को आमंत्रित किया है। इसके पीछे यह तथ्य बताये जाते है कि भारतीय ब्राह्माण हिन्दू धर्मशास्त्रों और रीतियों में ज्यादा पारंगत होते है। बाद में 'भाल्ला राजवंश' के एक राजा ने दक्षिण भारतीय ब्राह्मण को **'पशुपतिनाथ मंदिर'** का प्रधान पुरोहित नियुक्त किया। दक्षिण भारतीय भट्ट ब्राह्मण ही इस मंदिर के प्रधान पुजारी नियुक्त होते रहे है।

मंदिर के निर्माण का कोई प्रमाणित इतिहास तो नहीं है किन्तु कुछ जगह पर यह जरुर लिखा गया है कि मंदिर का निर्माण सोमदेव राजवंश के पशुप्रेक्ष ने तीसरी सदी ईसा पूर्व में कराया था।

कुछ इतिहासकार पाशुपत सम्प्रदाय को इस मंदिर की स्थापना से जुड़ा मानते है। पशुपति काठमांडू घाटी के प्राचीन शासकों के अधिष्ठाता देवता रहे है। 605 ईस्वी में अंशुवर्मन ने भगवान के चरण छूकर अपने को अनुग्रहीत माना था। बाद में मध्य युग तक मंदिर की कई नकलों का निर्माण कर लिया गया। ऐसे मंदिरों में भक्तपुर (1480), ललितपुर (1566) और बनारस (19वीं शताब्दी के प्रारंभ में) शामिल है। मूल मंदिर कई बार नष्ट हुआ है। इसे वर्तमान स्वरूप नरेश भूपतेंद्र मल्ला ने 1697 में प्रदान किया।

मंदिर की आध्यात्मिक शक्ति की वर्चाग्रासपास में काफी प्रवलित है। भारत समेत कई देशों से लोग यहाँ आध्यात्मिक शांति की तलाश में आते है। अगर आप भी भगवान शिव के दर्शनों के अभिलाषी है तो यहाँ साफ़ और छल रहित दिल से आकर, आप शिव के दर्शन कर सकते है।

मंदिर की महिमा के बारे में आसपास के लोगों से आप काफी कहानियां भी सुन सकते है। मंदिर में अगर कोई घंटा-आधा घंटा ध्यान करता है तो वह जीव कई प्रकार की समस्याओं से मुक्त भी हो जाता है।

विशेष,,,,

भारत के उत्तराखण्ड राज्य में स्थित प्रसिद्ध केदारनाथ मंदिर की किंवदंती के अनुसार पाण्डवों को स्वर्गप्रयाण के समय भैंसे के स्वरूप में शिव के दर्शन हुए थे जो बाद में धरती में समा गए लेकिन भीम ने उनकी पूँछ पकड़ ली थी। ऐसे में उस स्थान पर स्थापित उनका स्वरूप केदारनाथ कहलाया, तथा जहाँ पर धरती से बाहर उनका मुख प्रकट हुआ, वह पशुपतिनाथ कहलाया।

शिव पूर्ण काम हैं, तृप्त काम हैं। काम का अर्थ केवल वासना ही नहीं अपितु कामना भी है।

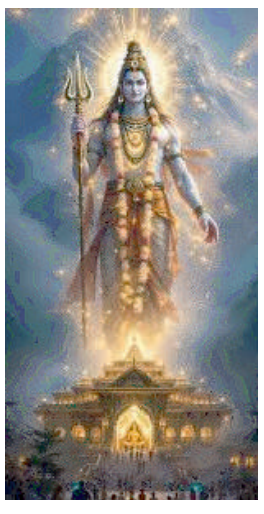

शिव तत्व विचार जीवन में काम पर विजय प्राप्त करना अति कठिन है। भगवान शिव इसलिये भी देवों के देव महादेव हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में काम को भस्म किया है। अधिकतर देव काम के अधीन हैं पर भगवान शिव राम के अधीन हैं। भगवान महादेव के जीवन में वासना नहीं, उपासना है। शिव पूर्ण काम हैं, तृप्त काम हैं। काम का अर्थ केवल वासना ही नहीं अपितु कामना भी है।

भगवान महादेव ने सभी प्रकार की कामनाओं, इच्छाओं और वासनाओं को नष्ट किया है। शिवजी के जीवन में कोई लोभ नहीं केवल राम दर्शन, राम कथा श्रवण और राम नाम गायन ही उनकी कामना है। भगवान शिव बहिर्मुखी नहीं, अंतर्मुखी रहते हैं। अंतर्मुखी रहने वाला साधक ही शांत, प्रसन्नचित, परमार्थी, सम्मान की इच्छा से मुक्त, क्षमावान और लोक मंगल के शिव संकल्पों को पूर्ण करने की सामर्थ्य रखता है..

शिवपुराण में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं। इसलिए जल से उनकी अभिषेक के रूप में अराधना का उत्तमोत्तम फल है जिसमें कोई संशय नहीं है।

शास्त्रों में वर्णित है कि सावन महीने में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। इसलिए ये समय भक्तों, साधु-संतों सभी के लिए अमूल्य होता है। यह चार महीनों में होने वाला एक वैदिक यज्ञ है, जो एक प्रकार का पौराणिक व्रत है, जिसे 'चौमासा' भी कहा जाता है; तत्पश्चात सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व भगवान शिव ग्रहण करते हैं। इसलिए सावन के प्रधान देवता भगवान शिव बन जाते हैं।

साइनस कारण, लक्षण व उपचार

साइनस नाक का एक रोग है। आयुर्वेद में इसे प्रतिश्याय नाम से जाना जाता है।

सर्दी के मौसम में नाक बंद होना, सिर में दर्द होना, आधे सिर में बहुत तेज दर्द होना, नाक से पानी गिरना इस रोग के लक्षण हैं। इसमें रोगी को हल्का बुखार, आंखों में पलकों के ऊपर या दोनों किनारों पर दर्द रहता है।

तनाव, निराशा के साथ ही चेहरे पर सूजन आ जाती है। इसके मरीज की नाक और गले में कफ जमता रहता है। इस रोग से ग्रसित व्यक्ति धूल और धुवां बर्दाश्त नहीं कर सकता। साइनस ही आगे चलकर अस्थमा, दमा जैसी गंभीर बीमारियों में भी बदल सकता है। इससे गंभीर संक्रमण हो सकता है।

क्या होता है साइनस रोग ?

साइनस में नाक तो अवरूद्ध होती ही है, साथ ही नाक में कफ आदि का बहाव अधिक मात्रा में होता है। भारतीय वैज्ञानिक सुश्रुत एवं चरक के अनुसार चिकित्सा न करने -से सभी तरह के साइनस रोग आगे जाकर 'दुष्ट प्रतिश्याय' में बदल जाते हैं और इससे अन्य रोग भी जन्म ले लेते हैं। जिस तरह मॉर्डन मेडिकल साइंस ने साइनुसाइटिस को क्रोनिक और एक्यूट दो तरह का माना है

आम धारणा यह है कि इस रोग में नाक के अंदर की हड्डी का बढ़ जाती है या तिरछा हो जाती है जिसके कारण श्वास लेने में रुकावट आती है। ऐसे मरीज को जब भी ठंडी हवा या धूल, धुवां उस हड्डी पर टकराता है तो व्यक्ति परेशान हो जाता है।

चिकित्सकों अनुसार साइनस मानव शरीर की खोपड़ी में हवा भरी हुई कैविटी होती हैं जो हमारे सिर को हल्कापन व श्वास वाली हवा लाने में मदद करती है। श्वास लेने में अंदर आने वाली हवा इस थैली से होकर फेफड़ों तक जाती है। इस थैली में हवा के साथ आई गंदगी यानी धूल और दूसरे तरह की गंदगियों को रोकती है और बाहर फेंक दी जाती है। साइनस का मार्ग जब रुक जाता है अर्थात बलगम निकलने का मार्ग रुकता है तो 'साइनोसाइटिस' नामक बीमारी हो सकती है। वास्तव में साइनस के संक्रमण होने पर साइनस की झिल्ली में सूजन आ जाती है। सूजन के कारण हवा की जगह साइनस में मवाद या बलगम आदि भर जाता है, जिससे साइनस बंद हो जाते हैं। इस वजह से माथे पर, गालों व ऊपर के जबाड़े में दर्द होने लगता है।

इसका उपचार

इस रोग में सर्दी बनी रहती है और कुछ लोग इसे सामान्य सर्दी समझ कर इसका इलाज नहीं करवाते हैं। सर्दी तो सामान्यतः तीन-चार दिनों में ठीक हो जाती है, लेकिन इसके बाद भी इसका संक्रमण जारी रहता है। अगर वक्त रहते इसका इलाज न कराया जाए तो ऑपरेशन कराना जरूरी हो जाता है। लेकिन इसकी रोकथाम के लिए योग में क्रिया और प्राणायाम को सबसे कारगर माना गया है। नियमित क्रिया और प्राणायाम से बहुत से रोगियों को 99 प्रतिशत लाभ मिला है।

इस रोग में बहुत से लोग या सिकाई का प्रयोग करते हैं और कुछ लोग प्रतिदिन विशेष प्राकृतिक चिकित्सा अनुसरा नाक की सफाई करते हैं। योग से यह दोनों की कार्य संपन्न होते हैं। प्राणायाम जहां स्टीम का कार्य करता है वही जलनेती और सूत्रनेती से नाक की सफाई हो जाती है। प्रतिदिन अनुलोम विलोम के बाद पांच मिनट का ध्यान करें। जब तक यह करते रहेंगे साइनस से आप कभी भी परेशान नहीं होंगे।

शुद्ध भोजन से ज्यादा जरूरी है शुद्ध जल और सबसे ज्यादा जरूरी है शुद्ध वायु। साइनस एक गंभीर रोग है। यह नाक का इंफेक्शन है। इससे जहां नाक प्रभावित होती है वहीं, फेंफड़े, आंख, कान और मस्तिष्क भी प्रभावित होता है इस इंफेक्शन के फैलने से उक्त सभी अंग कमजोर होते .एक चम्मच मेथी दाने को एक कप पानी में पांच मिनट तक उबालें। इसके बाद इस पानी को छान लें। चाय की तरह पानी को पिएं। फायदा होगा। आधा कप पानी में कुछ बूंदे युकेलिप्स तेल की डालें। इस पानी को ढककर उबालें। फिर स्टीम लें। यह साइनस सिरदर्द से तुरंत राहत देने वाला नुस्खा है।

इसके अलावा सिकाई भी की जा सकती है. करना ये होगा कि गर्म पानी की बोतल गालों के ऊपर रखकर इसे प्रकिया को कुछ देर तक दोहराएं. ऐसा करने से आपको काफी राहत मिलगी।

जब साइनस की समस्या ज्यादा परेशान करने लगे तो सहजन की फली का सूप लहसुन, प्याज, काली मिर्च और अदरक डालकर बनाएं। इस सूप को गर्मा गर्म पीने से बहुत लाभ होता है।

एक कप पानी गुनगुना कर लें। इस पानी में अदरक को बारीक काटकर डाल लें। कुछ देर बाद छानकर धीरे-धीरे इस पानी को पी जाएं। राहत मिलेगी।

गाजर

में प्राकृतिक रूप से ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो साइनस रोग में लाभकारी होता है. इसे आप चुकंदर, खारे पालक के रस के साथ भी ले सकते हैं और अकेले भी।

इसके लिए आप जीरा लेकर किसी कपडे.में बांध लें. इसके बाद इसे नाक के करीब ले जाकर तेज-तेज सांस लें. ऐसा करने से आपको तुरंत राहत मिलेगी.

साइनस और नाक से जुड़ी सभी बीमारियों के लिए जैसे नाक की हड्डी बढना, नजला, सिरदर्द, छींकें इत्यादि के लिए बेहद ही सरल सा रामबाण उपाय है. शुद्ध देशी गाय का घी

जो आपको बहुत महंगा मिलेगा इसकी 2-2 बूद गुनगुना करके रात्रि में सोने से पहले दोनो नासिकाओ में डाले और बहुत हल्का सा पिछे की ओर खींचे जैसे सास लेते हैं जब पहला नाक में डाले तो दूसरी नाक को बंद करके हल्का सा ऊपर खींचे। इसी तरह जब दूसरी नाक में डाले तो पहली, नाक बंद रखे और हल्का सा ऊपर खींचे। बिना तकिया लिए 15 मिनट तक लेटे रहे फिर तकिया लगाकर से जाये, बिना किसी से बात किये।

योग को अपनाएं

योग में हर बीमारी का इलाज होता है। साइनसाइटिस एक सांस से संबंधित बीमारी है। इसलिए इस रोग को ठीक करने के लिए कपालभाती प्राणायामकरना चाहिए। जो साइनसाइटिस की समस्या को को जड़ से ठीक कर देता है।

साइनस की बीमारी में अजवाइन एक कारगर घरेलू औषधि है।

कैसे करें अजवाइन का प्रयोग

सबसे पहले आप अजवाइन की तीन बड़ी चम्मच लें और उसे एक तवे पर भूने।

अब किसी सूती कपड़े में इन भुने हुए अजवाइन के दानों को डालकर इसे बांध लें। और इसे थोड़ा सा ठंडा होने दें।साइनस की वजह से आपको चेहरे व जबड़े में जिस भी हिस्से में दर्द हो रहा हो उस जगह पर हल्का.हल्का इसे रखें। इस उपाय से साइनस के दर्द से बहुत ज्यादा आराम मिलता है।

मेथी की चाय

मेथी की चाय में मौजूद गुण साइनस की बीमारी की रोकथाम करते हैं। चाय आप जैसे बनाते हैं वैसे ही बनाएं बस उसमें मेथी के कुछ दानों को भी डाल लें। और इस चाय का नियमित सेवन करें। मेथी के दानों की चाय साइनस के दर्द में भी राहत देती है।

तुलसी का उपयोग

काली मिर्च के चूर्ण को तुलसी के पत्तों में डालकर इसे दिन में दो से तीन बार सेवन करें। इस उपाय से साइनस रोग मे राहत मिलती है।साइनस की बीमारी से परेशान लोगो को शहद को तुलसी के रस में डालकर इसका सेवन करना चाहिए। इससे सांस लेने में आ रही परेशानी दूर हो जाती है।

तुलसी का अन्य घरेलू उपाय

काली मिर्च के दस दाने
एक गिलास पानी
15 तुलसी के पत्ते
और अदरक

इन तीनों को अच्छी तरह से मिक्सर या सिलबट्टे पर पीस कर चूर्ण बना लें और इसको एक गिलास पानी में डालकर तब तक उबालें जब तक यह आधा न रह जाए। इसके बाद इसे छानें और हर एक घंटे के बाद इसे पीते रहें। यह उपाय साइनस के रोग को ठीक करता है।

जीरे का काढ़ा हर घर में जीरा मौजूद रहता है। जीरे में प्राकृतिक गुण होते हैं और यह भी साइनस का इलाज करता है।

बनाएं जीरे का काढ़ा बहुत ही आसान तरीके से बना सकते हैं जीरे का काढ़ा। इसके लिए आपको थोड़ा अदरक जीरे की एक छोटी चम्मच, तुलसी के पत्ते और एक बड़ा गिलास पानी सबसे पहले आप एक गिलास पानी को उबालें और इसमें अदरक, तुलसी के पत्ते और जीरे को डाल दें। और फिर इसे छानकर गुनगुना करके इसका सेवन करें। यह उपाय आपको साइनस के दर्द में राहत देगा।

गरम पानी साइनसाइटिस के रोगियों को चाहिए कि वे हमेशा गरम या गुनगुना पानी पीएं।

भाप ले किसी बर्तन में पानी को गर्म करें और उसमें काली तुलसी के पत्तों को डालकर उसका भाप लें। इस घरेलू उपाय से साइनसाइटिस के दर्द और कफ से राहत मिलती है।

इन आसान घरेलू नुस्खों को अपनाकर आप साइनस रोग से राहत पा सकते हो। लेकिन इसके लिए इस बात का ध्यान जरूर रखें कि जो भी उपाय आप कर रहे हो वे नियमित रूप में हो।

ऑपरेशन सिंदूर को लेकर दिल्ली विधानसभा की कार्रवाई में जोरदार हंगामा

सुषमा रानी

नई दिल्ली ऑपरेशन सिंदूर को लेकर सोमवार से शुरू हुई दिल्ली विधानसभा की कार्यवाही में जोरदार हंगामा हुआ। इस बीच भाजपा विधायकों ने एक ओर सेना के शौर्य पर चर्चा की तो वहीं विपक्षी दलों ने पूरे ऑपरेशन पर सवाल खड़े कर दिये।

इस बीच प्रधानमंत्री पर अभद्र टिप्पणी को लेकर आम आदमी पार्टी के बुराड़ी निर्वाचन क्षेत्र से विधायक संजीव झा को सदन से मार्शल आउट तक करना पड़ा। वहीं, ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव में किये गए साहसिक कार्रवाई पर चर्चा के बीच विपक्षियों को हंगामा करता देख विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने पूछा कि ऑपरेशन सिंदूर पर विपक्ष को क्या दिक्कत है, यह समझ नहीं आ रहा। इस बीच सदन में तकनीकी विशेषज्ञ ई-विधान प्रणाली के लिए विधायकों की सहायता भी करते दिखे।

चर्चा से पूर्व ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए सेना के जवानों को भी बधाई दी गई। मुख्य सचेतक अभय वर्मा ने सदन के पटल पर बधाई प्रस्ताव रखा। वहीं, सदन में विपक्ष के हंगामे पर कैबिनेट मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा कि जब भी आतंकवादी मरेगा केजरीवाल के चमचे रोएंगे। इस बीच विपक्ष ने हंगामा करते हुए कहा कि सदन में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर भी चर्चा कराएं।

वहीं, जंगपुरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक तरविंदर सिंह मारवाह ने कहा कि जब देश से संबंधित मुद्दे पर चर्चा हो रही है तो विपक्ष को हंगामा नहीं करना चाहिए। उधर, विपक्ष की लगातार टोकाटोकी पर मारवाह भड़क गये। उन्होंने कहा कि अगर गुंडागर्दी करोगे तो उसका जवाब गुंडागर्दी से मिलेगा। हालांकि, गुंडागर्दी वाले शब्द को विधानसभा अध्यक्ष ने कार्रवाई से बाहर निकलवाया।

वहीं, चर्चा को आगे बढ़ाते हुये कैबिनेट मंत्री आशीष सूद ने कहा के पहलगाम आतंकी हमले के बाद ऑपरेशन सिंदूर और ऑपरेशन महादेव पर चर्चा हो रही है, इस दौरान सेना पर कोई सवाल उठा रहा है तो यह देशद्रोह से कम नहीं है। सूद ने कहा कि यह दर्शाता है कि अरविंद केजरीवाल ने जिस तरह सेना पर सवाल उठाया था वही मानसिकता विपक्ष में आज भी जिंदा है।

इसी बीच विपक्षी दल आप विधायक संजीव झा ने कहा, ₹हमें सेना पर कोई संशय नहीं है, हमें हमारी सेना पर गर्व है। मगर जब हमारी सेना आगे बढ़ रही थी,तो हमारे देश के मुखिया ने सेना को रोक दिया। मगर प्रधानमंत्री ने कमजोर और कायराना कदम उठा कर सेना को रोक लिया।₹ इस कथन पर सदन में हंगामा हो गया। विधानसभा अध्यक्ष ने विधायक संजीव झा को माफी मांगने के लिए कहा। अंत में मार्शल को बुलाकर संजीव को सदन की कार्यवाही से बाहर कर दिया गया। साथ ही, उनके कहे वक्तव्य को भी रिकॉर्ड से हटाने का आदेश दे दिया गया।

ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा को आगे बढ़ाते हुए भाजपा विधायक सूर्य प्रकाश खत्री ने कहा कि पहलगाम हमले के बाद देश के पीएम ने पहले पाकिस्तान को चेतावनी दी और फिर बाद में ऑपरेशन सिंदूर के लिए सेना को खुली छूट दी। सम्पूर्ण विपक्ष को मुखर होकर इस ऑपरेशन की तारीफ करनी चाहिए थी लेकिन ये लोग सवाल खड़े कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कुछ गद्दार पाकिस्तान में बैठे हैं, कुछ गद्दार इस देश में बैठे हैं, वे भारतीय सेना से सुबूत मांगते हैं।

वहीं, भाजपा विधायक शिखा राय ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने बता दिया कि भारत अब सिर्फ बयान नहीं देता बल्कि कार्रवाई करता है। हमारे जाबांज सैनिकों ने जिस तरह से आतंकवादियों का सफाया किया, वह प्रशंसनीय है। ऐसे में सेना के पराक्रम पर सवाल उठाने वालों की जितनी निंदा की जाए, वह कम है। शिखा राय ने मांग की कि दिल्ली के स्कूलों में भी ऑपरेशन सिंदूर को पाठ के रूप में पढ़ाया जाए।

वहीं, भाजपा विधायक अरविंदर सिंह लवली ने कहा कि हमें अपनी सेना पर तो गर्व है ही, भारत अब ऐसा देश बन गया है, जो किसी के आगे झुकता नहीं है। युद्ध कब रुकेगा, ये नेता नहीं बल्कि सेना तय करती है। विपक्ष के लिए भी सलाह है कि देश को सबसे सर्वोपरि है। इस मामले में गलत लाइन नहीं लेनी चाहिए। देश है तो हम सभी हैं, लोकतंत्र है, राजनीतिक दल हैं।

इस पर नेता प्रतिपक्ष आतिशी सहित सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों ने भी स्पीकर को बधाई दी। इसके बाद विधानसभा में पूर्व कांग्रेस विधायक जयकिशन, पहलगाम हमले के मृतकों एवं अहमदाबाद विमान हादसे के मृतकों सहित झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को भी श्रद्धांजलि दी गई।

स्कूल छोड़ती बेटियाँ: संसाधनों की कमी या सामाजिक चूक?

(बेटियाँ क्यों छोड़ रही हैं स्कूल? सवाल सड़कों, शौचालयों और सोच का हैर ₹39% लड़कियाँ स्कूल से बाहर : किसकी जिम्मेदारी?₹ ₹'बेटी पढ़ाओ' का सच : किताबों से पहले रास्ते चाहिए)

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट ने चौंकाने वाला सच उजागर किया है कि 15 से 18 वर्ष की उम्र की लगभग 39.4% लड़कियाँ स्कूल से बाहर हो चुकी हैं। शिक्षा के इस मौन पलायन के पीछे स्कूलों की दूरी, परिवहन की अनुपलब्धता, शौचालयों की कमी और सुरक्षा को लेकर भय जैसे कारण हैं। यह स्थिति केवल एक व्यवस्था की विफलता नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता की कमजोरी को भी दर्शाती है। यह लेख सवाल करता है कि क्या हम सच में बेटियों की शिक्षा को प्राथमिकता दे रहे हैं या सिर्फ नारे गढ़कर आत्मतुष्टि पा रहे हैं?

-- प्रियंका सौरभ

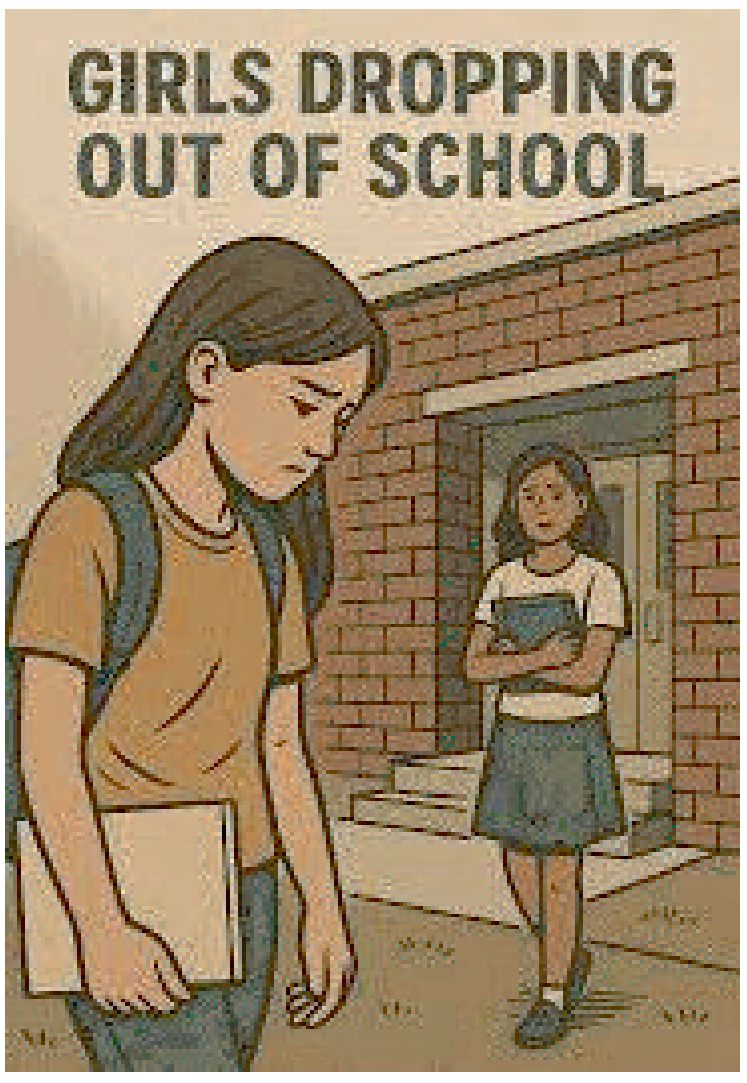

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा हर गली-चौराहे, सरकारी इमारतों और बैनरों पर चमकता है, लेकिन यह नारा उन गाँवों और बस्तियों तक नहीं पहुँच पाता जहाँ बेटियाँ रोज़ स्कूल छोड़ रही हैं। हालिया रिपोर्ट से पता चला है कि 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग की 39.4% लड़कियाँ स्कूल से बाहर हैं। यह आंकड़ा केवल संख्या नहीं, यह हमारे सामाजिक ढांचे पर एक कठोर टिप्पणी है।

घर से स्कूल की दूरी, सुरक्षित परिवहन की कमी, उच्च माध्यमिक विद्यालयों का अभाव, शौचालयों की स्थिति और सामाजिक असुरक्षा – ये सारी बातें किसी शोधपत्र की विषयवस्तु नहीं, बल्कि ज़मीनी हकीकत हैं जिनसे रोज़ हज़ारों बच्चियाँ जूझ रही हैं। और अंततः उन्हें शिक्षा से हाथ धोना पड़ता है। सरकारी आंकड़े भले ही बढ़े हुए नामांकन दिखाते हों, लेकिन हकीकत यह है कि नामांकन के बाद लड़कियाँ स्कूल तक टिक नहीं पातीं।

एक आम ग्रामीण परिदृश्य को देखें। पाँचवीं तक की स्कूल तो आसपास है, लेकिन आठवीं के बाद विद्यालय दूर है। परिवहन की कोई सुविधा नहीं। न बस, न साइकिल, न ही कोई महिला सहकर्मी या मार्गदर्शक। माता-पिता अपनी बेटी को पाँच किलोमीटर दूर अकेले भेजने से डरते हैं। उन्हें चिंता होती है कि रास्ते में कोई छेड़छाड़ न हो, कोई हादसा न हो। उस चिंता में स्कूल जाना बंद हो जाता है।

शौचालयों की बात करें तो यह सिर्फ सुविधा नहीं, आत्मसम्मान और स्वास्थ्य से जुड़ा मुद्दा है। किशोरावस्था में लड़कियाँ उन परिवर्तनों से गुजरती हैं, जहाँ एक स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय उनकी शिक्षा की निरंतरता तय कर सकता है। लेकिन अधिकांश सरकारी स्कूलों में या तो शौचालय हैं ही नहीं, या हैं तो गंदे, असुरक्षित, या क्षतिग्रस्त। माता-पिता के लिए यह एक और कारण बन जाता है अपनी बेटियों को स्कूल से हटाने का।

सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा है। जिन स्कूलों में कोई महिला शिक्षक नहीं होतीं, कोई सीसीटीवी कैमरा या गार्ड नहीं होता, वहाँ किशोर लड़कियों को भेजना आज भी माता-पिता के लिए जोखिम उठाने जैसा है। यह डर केवल अव्यवस्था से नहीं, समाज की असंवेदनशीलता से भी उपजा है। आए दिन होने वाली घटनाएं, समाचारों में आती छेड़छाड़ की खबरें इस भय को और गहरा करती हैं।

इन सबके अलावा शिक्षा को लेकर समाज की प्राथमिकताएँ भी स्पष्ट नहीं हैं। एक लड़का पढ़े तो 'परिवार का भविष्य' बनता है, लेकिन लड़की पढ़े तो 'शादी की उम्र निकलने का डर' पैदा होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह मानसिकता अब भी गहराई से मौजूद है। लड़कियों की शिक्षा को 'लाभ' से ज्यादा 'खर्च' माना जाता है।

अब यदि इन परिस्थितियों में एक बेटी स्कूल छोड़ दे, तो क्या इसमें उसकी गलती है? या यह एक सामूहिक चूक है — व्यवस्था की, समाज की, और हमारी?

इस स्थिति का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से नहीं, ठोस क्रियान्वयन से होगा। सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि हर गाँव से तीन किलोमीटर के दायरे में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हो। यह बुनियादी शैक्षिक ढांचा हर बच्चे का अधिकार है।

परिवहन की सुविधा उतनी ही ज़रूरी है जितनी शिक्षक की उपस्थिति। यदि बच्चियाँ स्कूल नहीं पहुँच पाएंगी तो पढ़ेंगी कैसे? सरकार को स्कूल वैन, छात्रा साइकिल योजना या सार्वजनिक परिवहन में 'स्कूल पास' जैसे विकल्प सुनिश्चित करने होंगे।

हर स्कूल में स्वच्छ और उपयोगी शौचालयों की अनिवार्यता केवल 'स्वच्छ भारत मिशन' का हिस्सा नहीं, बल्कि 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के सच्चे मर्म का आधार होना चाहिए। महिला कर्मचारियों की नियुक्ति, नियमित निरीक्षण और साफ-सफाई के लिए स्थानीय प्रशासन को उत्तरदायी बनाया जाए।

सुरक्षा के लिए प्रत्येक स्कूल में महिला शिक्षकों की उपस्थिति बढ़ाई जाए। सुरक्षा गार्ड, सीसीटीवी कैमरा और स्कूल परिसर में अभिभावकों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाए। यह कदम न केवल बेटियों को सुरक्षा का भरोसा देगा, बल्कि अभिभावकों को मानसिक शांति भी।

इसके साथ ही स्कूलों के भवन और अधोसंरचना को केवल औपचारिकता के लिए नहीं, गुणवत्ता के साथ विकसित किया जाना चाहिए। पुस्तकालय, कंप्यूटर कक्ष, विज्ञान प्रयोगशालाएं, खेल का मैदान — ये सब स्कूल के मानक हिस्से होने चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण बिंदु डिजिटल शिक्षा है। महामारी ने दिखा दिया कि जिनके पास मोबाइल, इंटरनेट और बिजली नहीं, वे पढ़ाई से बाहर हो जाते हैं। ग्रामीण स्कूलों में डिजिटल साक्षरता और उपकरण की उपलब्धता अब विलासिता नहीं, अनिवार्यता है।

शिक्षा विभाग को उन लड़कियों की नियमित सूची बनानी चाहिए जो स्कूल छोड़ चुकी हैं। उनके घर जाकर कारण जानना, उन्हें वापस लाने के लिए प्रेरित करना, और माता-पिता को विश्वास में लेना प्रशासन की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

साथ ही समाज को भी आत्मावलोकन करना होगा। हम अपनी बेटियों को क्यों पढ़ाना चाहते हैं — नौकरी के लिए, शादी के लिए या आत्मनिर्भरता के लिए? जब तक समाज का जवाब अस्पष्ट रहेगा, तब तक समाधान भी अधूरा रहेगा।

प्रशासन, समाज और परिवार को मिलकर यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि कोई भी बच्ची शिक्षा से वंचित न हो। इसका अर्थ है केवल विद्यालय खुलवाना नहीं, बल्कि उसमें बेटी के जाने और टिके रहने की पूरी ज़िम्मेदारी लेना।

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अगर केवल बैनर की पंक्ति नहीं रहना है तो इसे पंचायतों, स्कूल समितियों, शिक्षक संगठनों, अभिभावकों और छात्रों के साझा प्रयास में बदलना होगा। तभी एक ऐसा समाज बनेगा, जहाँ कोई भी बेटी पढ़ाई से वंचित नहीं होगी।

एसआईएस लिमिटेड ने Q1 FY26 में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया, ₹3,549 करोड़ का राजस्व, 13.4% सालाना वृद्धि

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली । एसआईएस लिमिटेड ने Q1 FY26 में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया, ₹3,549 करोड़ का राजस्व, 13.4% सालाना वृद्धि की। सिक्योरिटी सॉल्यूशंस इंडिया ने 9.2% सालाना वृद्धि और 1.7% तिमाही से वृद्धि की । मुख्य क्लाइंट्स ई-कॉमर्स, कंस्ट्रक्शन, मैन्युफैक्चरिंग, BFSI और रिटेल सेक्टर से मिले।

सिक्योरिटी सॉल्यूशंस इंटरनेशनलः ₹1,513 करोड़ का राजस्व, 18.5% सालाना वृद्धि और 6.2% तिमाही वृद्धि। एयरपोर्ट और एनर्जी सेक्टर में नए कॉन्ट्रैक्ट मिले।

फैसिलिटी मैनेजमेंट सॉल्यूशंसः ₹594 करोड़ का राजस्व, 12.1% सालाना और 1.2% तिमाही वृद्धि। एनर्जी, मैन्युफैक्चरिंग, कंस्ट्रक्शन और ऑटोमोबाइल सेक्टर में अच्छे कॉन्ट्रैक्ट मिले।

ग्रुप मैनेजिंग डायरेक्टर रितुराज किशोर सिन्हा ने कहा ₹Q1 FY26 में एसआईएस ने मजबूत राजस्व और PAT ग्रोथ हासिल की है। हमारा मंथली कंसॉलिडेटेड राजस्व ₹1,200 करोड़ से अधिक हो गया है और सभी तीन बिजनेस सेगमेंट्स में अच्छी ग्रोथ दिख रही है। हमें गर्व

है कि ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टिट्यूट ने 2025 के लिए हमें देश के टॉप 10 एम्प्लॉयर्स में शामिल किया है।

आज़मी मेडिकल सेंटर द्वारा निःशुल्क मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन

शम्स आगाज

नई दिल्ली। हीलिंग हैंड्स चैरिटेबल ट्रस्ट के तहत संचालित आज़मी मेडिकल सेंटर ने अबुल फज़ल, ओखला, नई दिल्ली में एक बड़े निःशुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन किया। सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक चले इस कैंप में लगभग 300 मरीज़ों ने लाभ उठाया और विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए परामर्श प्राप्त किया। यह कैंप विशेष रूप से ग़रीब और ज़रूरतमंद वर्गों को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया था, ताकि वे बिना किसी आर्थिक बोझ के गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सलाह और जांच की सुविधा प्राप्त कर सकें।

इस कैंप में वरिष्ठ डॉक्टरों और विशेषज्ञों ने मरीज़ों की जांच की, उनकी बीमारी की प्रकृति को समझा और उचित इलाज की सिफारिश की। जांच के बाद ज़रूरतमंद मरीज़ों को निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गईं। टीएसएच, शुगर, यूरिक एसिड और हीमोग्लोबिन जैसी बुनियादी रक्त जांचें पूरी तरह निःशुल्क की गईं, जबकि लीवर फंक्शन, किडनी फंक्शन, लिपिड और थायरॉइड प्रोफाइल जैसे महत्वपूर्ण टेस्ट मात्र ₹100 में उपलब्ध कराए गए, जो आम तौर पर बाज़ार में काफ़ी महंगे होते हैं।

इसके अतिरिक्त, महंगे

डायग्नोस्टिक टेस्ट जैसे एमआरआई सिर्फ ₹1500 में और अल्ट्रासाउंड ₹500 में किया गया। ख़तना की सुविधा मात्र ₹500 में उपलब्ध कराई गई, जबकि सामान्य डिलीवरी ₹7000 और पित्त की थैली की सर्जरी ₹18000 में की गई। इससे यह स्पष्ट होता है कि कैंप में केवल तत्काल उपचार ही नहीं, बल्कि भविष्य की चिकित्सा सुविधाएं भी किफ़ायती दरों पर प्रदान की गईं।

बच्चों का भी कैंप में विशेष ध्यान रखा गया। 5 से 15 वर्ष की आयु के बच्चों की आंखों की जांच की गई और जिन्हें दृष्टि दोष पाया गया, उन्हें निःशुल्क चश्मे भी दिए गए।

कैंप में भाग लेने वाले लोगों ने इस चिकित्सा सेवा की जमकर सराहना की। कई मरीज़ों का कहना था कि महंगाई के इस दौर में, जब सामान्य चिकित्सा सुविधाएं भी आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रही हैं, ऐसे कैंप किसी वरदान से कम नहीं हैं। इस कैंप का उद्देश्य सिर्फ एक दिन की चिकित्सा सुविधा देना नहीं था, बल्कि यह दिखाना भी था कि अगर नीयत साफ़ हो, इरादा नेक हो और उद्देश्य मानवता की सेवा हो, तो सीमित संसाधनों के साथ भी व्यापक स्तर पर लाभ पहुँचाया जा सकता है।

आज़मी मेडिकल सेंटर और हीलिंग हैंड्स चैरिटेबल ट्रस्ट का यह प्रयास इसी भावना का प्रतीक है।

कैंप के समापन पर आयोजकों ने अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए सभी डॉक्टरों, सहायक स्टाफ, स्वयंसेवकों और स्थानीय लोगों का दिल से धन्यवाद किया, जिनकी मेहनत, लगन और सहयोग से यह कैंप सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

दिल्ली का अपना, सबसे बड़ा फिल्म फेस्टिवल: सेलिब्रेटिंग इंडिया फिल्म फेस्टिवल (CIFF)

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली — 78वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राजधानी दिल्ली एक भव्य सांस्कृतिक उत्सव "सेलिब्रेटिंग इंडिया फ़िल्म फेस्टिवल (CIFF 2025)" की मेज़बानी करने जा रही है।

अब तक जब भी फ़िल्म फेस्टिवल की बात होती थी, लोग आमतौर पर गोवा या मुंबई के बारे में सोचते थे। लेकिन इस बार दिल्ली को अपना पहला प्रमुख फ़िल्म महोत्सव मिलने जा रहा है। 8 से 10 अगस्त तक NCUI ऑडिटोरियम, Siri Fort Road, नई दिल्ली में इसका आयोजन ग्राफिसैड्स द्वारा किया जा रहा है, जिसमें FTII, FCG और IGNCA सहयोगी संस्थान हैं।

मुख्य आकर्षण: राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक मधुर भंडारकर द्वारा निर्देशित और प्रणव जैन द्वारा निर्मित फिल्म "इंडिया लॉकडाउन" की स्क्रीनिंग व चर्चा। 4K रीस्टोर्ड "उमराव जान" की स्क्रीनिंग और

मनोज कुमार की "क्रांति" के जरिए देशभक्ति को सलाम। "माँ तुझे सलाम" और "वंदे मातरम" से प्रसिद्ध भारतबाला की डॉक्यूमेंट्री "अहं भारतम्" का वर्ल्ड प्रीमियर और उनसे "वर्चुअल भारत" पर संवाद। पद्मश्री रिकी केज, तीन बार के ग्रैमी अवॉर्ड विजेता, अपना नया म्यूज़िक वीडियो "Gandhi – Mantra of Compassion" रिलीज़ करेंगे। बॉलीवुड सिंगर हेमा सरदेसाई की खास प्रस्तुति।

संवाद एवं सत्र: "सितारे ज़मीन पर" फेम फिल्मकार आर.एस. प्रसन्ना, दिव्य निधि शर्मा, और "Stolen" के प्रोड्यूसर गौरव ढींगरा के साथ बातचीत। हाल ही में राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए नामित "केरला स्टोरी" के निर्देशक सुदीप्तो सेनगुप्ता। "ओह माई गॉड2" के निर्देशक अमित राय। बॉलीवुड स्टार पवन मल्होत्रा, हेमंत पांडे, गीतांजलि मिश्रा, आस्था चौधरी, ऋषिता भट्ट, द्वारा OTT और सिनेमा पर एक्सपीरियंस साझा करना। IGNCA की बीडी गर्ग कलेक्शन विंटेज पोस्टर प्रदर्शनी और भारतीय कहानियों के डिजिटलीकरण पर सत्र। फ़िल्म क्रिटिक्स गिल्ड द्वारा भारतीय सिनेमा की विरासत पर चर्चा। FTII की टीम द्वारा फ़िल्म निर्माण पर मास्टर क्लास।

मुख्य अतिथि: रेखा गुप्ता, मुख्यमंत्री, दिल्ली विजेंद्र गुप्ता, विधान सभा अध्यक्ष, दिल्ली

कपिल मिश्रा, कैबिनेट मंत्री, दिल्ली

मनोज तिवारी, सांसद

मुख्तार अब्बास नक़वी, पूर्व केंद्रीय मंत्री

रक्षाबंधन पर धूम मचाने को तैयार स्टार प्लस, पेश है 'स्टार परिवार: बहन का ड्रामा, भाई का स्वैग'

मुख्य संवाददाता

टीवी पर त्योहारों को खास अंदाज़ में दिखाने के लिए मशहूर स्टार प्लस हमेशा की तरह इस बार भी रक्षाबंधन को धूमधाम और प्यार के साथ मनाने जा रहा है। इस मौके पर चैनल एक खास शो स्टार परिवार – बहन का ड्रामा, भाई का स्वैग लेकर आ रहा है, जिसमें होगा मज़ेदार ड्रामा, धमाकेदार डांस और भाई-बहन के रिश्ते की प्यारी झलक।

नए रिलीज़ हुए प्रोमो में इस खास जश्न की एक झलक दिखाई गई है, जिसमें अनुपमा शाम की होस्ट के रूप में नज़र आ रही हैं। इसके बाद फोकस जाता है एक मज़ेदार और जोशीले मुकाबले पर, जो होता है ये रिश्ता क्या कहलाता है के अरमान और अनुपमा के प्रेम के बीच। दोनों मंच पर जबरदस्त परफॉर्मेंस देकर माहौल गरमा देते हैं और हर हाल में झनक के भाई का खिताब जीतना चाहते हैं।

यह सीन राखी के त्योहार पर भाईचारे के प्रतीक को दिखाते हुए

क्रिएटिव तरीके से तैयार किया गया है। दमदार एक्टिंग और जोश से भरी कोरियोग्राफी के साथ दोनों कंटेस्टेंट अपने-अपने अलग अंदाज़ और पर्सनैलिटी मंच पर दिखाते हैं। कहानी एक दिलचस्प सवाल खड़ा करती है कि आखिर झनक का भाई किसे चुना जाएगा? यह मज़ेदार टक्कर और त्योहार की कहानी में आया अनपेक्षित मोड़ दर्शकों का उत्साह और भी बढ़ा देता है।

यह खास राखी का कार्यक्रम त्योहार की असली भावना दिखाता है, जैसे प्यार भरे रिश्ते, मजेदार मुकाबला और दिल से की गई खुशियां और यह सब स्टार प्लस की जानी-पहचानी कहानियों की गर्माहट में पेश किया गया है।

9 अगस्त शाम 7 बजे देखें स्टार परिवार – बहन का ड्रामा, भाई का स्वैग, सिर्फ़ स्टार प्लस पर।

छत्तीसगढ़ कुंज में अष्ट दिवसीय अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत कथा एवं जन्माष्टमी महोत्सव 13 अगस्त से

श्रीतुलसी पीठाधीश्वर, पद्मविभूषण जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य महाराज कराएंगे श्रीमद्भागवत महापुराण का रसास्वादन

नित्य धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत देश के प्रख्यात कलाकार देंगे अपनी-अपनी प्रस्तुतियां

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। जगन्नाथ घाट/परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीपंच हरिव्यासी महानिर्वाणी निर्मोही अखाड़ा (छत्तीसगढ़ कुंज) में साकेतवासी श्रीमहंत रामबली दास महाराज की स्मृति में अष्ट दिवसीय अष्टोत्तरशत श्रीमद्भागवत कथा एवं जन्माष्टमी महोत्सव 13 से 20 अगस्त 2025 पर्यन्त महामंडलेश्वर महन्त गोपीकृष्ण दास महाराज के पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।इसकी तैयारियों को लेकर आयोजित हुई आवश्यक बैठक में जानकारी देते हुए छत्तीसगढ़ कुंज के महन्त गोपीकृष्ण दास महाराज ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत 13 से 19 अगस्त पर्यन्त प्रातः 10 बजे से दोपहर 01 बजे तक श्रीतुलसी पीठाधीश्वर, पद्मविभूषण जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य महाराज अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा विश्वभर से आए समस्त भक्त-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की अमृतमयी का श्रवण कराएंगे।साथ ही 108 वेदज्ञ ब्राह्मणों के द्वारा श्रीमद्भागवत महापुराण का सस्वर मूल पाठ किया जाएगा।

प्रमुख समाजसेवी पण्डित बिहारीलाल वशिष्ठ ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत नित्य सायं 05 बजे से 07 बजे तक धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।जिसके अंतर्गत 13 अगस्त को बाबा विग्र-विचित्र महाराज की भजन संध्या, 14 अगस्त को सांसद, अभिनेता व प्रख्यात भजन गायक मनोज तिवारी की भजन संध्या, 15 अगस्त को प्रसिद्ध गायिका नीति मोहन (मुम्बई) की भजन संध्या, 16 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय रामलीला महोत्सव एसोशियशन, द्वारका-दिल्ली के द्वारा श्रीकृष्ण लीला, 17 अगस्त को पद्मश्री मालिनी अवस्थी के द्वारा भजनों का गायन, 18 अगस्त को प्रख्यात भजन गायक कन्हैया मित्तल के द्वारा भजन संध्या आदि के आयोजन होंगे। प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि 19 अगस्त को विराट संत-सम्मेलन का आयोजन होगा।जिसमें देश के कई प्रख्यात संत, विद्वान और धर्माचार्य आदि भाग लेंगे। इसके अलावा 20 अगस्त को प्रातः 11 बजे से संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा होगा।जिसमें असंख्य व्यक्तियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाएगा।

पापियों व अधर्मियों के नाश के लिए प्रत्येक युग में पृथ्वी पर अवतरित होते हैं भगवान नारायण : भागवताचार्य शैलेन्द्र कृष्ण महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ग्राम धौरैरा/राधा मोहन नगर स्थित मां धाम आश्रम में श्रावण मास झूलन महोत्सव के उपलक्ष्य में चल रहे सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव के अंतर्गत प्रख्यात भागवताचार्य धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने व्यासपीठ से विश्वभर से आए सभी भक्तों-श्रृद्धालुओं को भगवान के जन्म की कथा श्रवण श्रवण कराई।इस अवसर पर बालकृष्ण की भव्य झांकी सजाई गई।इसके अलावा नंदोत्सव आयोजित हुआ।जिसमें संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य जन्म की बधाइयों का गायन किया गया।साथ ही रुपए-पैसे, खेल-खिलौने, वस्त्र-आभूषण आदि लुटाए गए।

धर्म पथिक शैलेन्द्र कृष्ण महाराज ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण को यदि वर्तमान परिपेक्ष्य में देखा जाए तो वे न केवल भगवान हैं, अपितु वर्तमान और हर युग के सर्वश्रेष्ठ गुरु भी हैं।हम सभी को इनकी नित्य पूजा करने के साथ-साथ इनके द्वारा बताए गए सद्मार्ग को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।तभी हमारा कल्याण हो सकता है।

पूज्य महाराजश्री ने कहा कि ऋषि-मुनियों

की वाणी सिद्ध करने के लिए स्वयं भगवान नारायण नर रूप में पृथ्वी पर अवतरित होकर उनकी भक्ति को सुदृढ बनाते हैं।पृथ्वी पर जब-जब पाप व अधर्म बढ़ने लगता है और धर्म का क्षय होने लगता है, तब-तब धर्म की पुनः स्थापना व पापियों व अधर्मियों का नाश करने के लिए भगवान नारायण प्रत्येक युग में पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।द्वापर युग में आताताई कंस के अत्याचारों से त्रस्त संत, वैष्णव, ब्रजवासियों की रक्षा करने के लिए भगवान नारायण ने श्रीकृष्ण के रूप में भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में कंस के कारागार में अवतार लिया था।

इस अवसर पर विश्वहिन्दू महासंघ भारत मठ मन्दिर प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्याय पण्डित आर.एन. द्विवेदी (राजू भैया), प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, श्यामपाल बाबूजी, महोत्सव के मुख्य यजमान सीताराम चौरसिया (मध्यप्रदेश), श्रीमती गीता चौरसिया, पंकज, डॉ. राधाकांत शर्मा, मोहन बाबा, चंद्रमोहन मास्टर साहब, सुमन दीदी, श्वेता, स्वाति, आकाश, साक्षी, मुन्ना भैया, पप्पू भैया आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश वाराणसी बजरडीहा सराय नंदन में ए आई एम आई एम की सदस्यता ग्रहण मिटिंग संपन्न

खोजवा वाराणसी में मो० अनस भाई के नेतृत्व में सरायबंदन नई बाज़ार खोजवां में मिटिंग रखी गयी मिटिंग में लोगो को पद दिया गया व सदस्ता दी गयी और पार्टी को आगामी चुनाव को मददेनज़र रखते हुए विचार विमर्ष-किया गया जिसमें विधानसभा, नगर व जिला के लोग उपस्थित रहे जिसकी अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष मो जबूर खान ने किया ? मोह्म्मद अनस भाई को कैन्ट विधानसभा से महासचिव बनाया गया मुख्य रूप से शामिल, विधानसभा अध्यक्ष ज़हूर खान, पुर्वांचल सचिव सांसद खान, जिला सचिव छिटक भाई, पूर्व नगर अध्यक्ष मुस्तकीम अनवर विधानसभा , महासचिव मो अनस व अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे इस कार्यक्रम में पार्टी के विचार धारा के अनुसार पार्टी को मजबूत करने पर जोर दिया गया और सदस्यता कैंप लगाकर लोगों को जोड़ने के निर्देश दिए गए। मिटिंग में शामिल पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता शमशाद खान ल्फीज़ुर्रहमान गुलाम नबी मुहम्मद अनस सरफराज़ शाहनवाज़ अबी अरफ़ी मुख्तार अहमद महताब आलम शाहनवाज आलम शहीद अनवर मोहम्मद फैज़ अहमद जमाल इरफान अहमद मोहम्मद। ज़हीर मुस्तकीम व अन्य लोग मौजूद थे।

अपने भक्त का सभी मनोरथ पूर्ण करते हैं हनुमानजी : महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। बांके बिहारी कॉलोनी स्थित ठा. श्रीकौशल किशोर राम मन्दिर में अखिल भारतीय श्रीराम मित्र मंडल के द्वारा चल रही पंच दिवसीय श्रीहनुमान कथा के तीसरे दिन व्यास पीठाधीन ठा. श्रीकौशल किशोर राम मन्दिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी ने कहा कि बल के अथाह सागर, सुमेरु पर्वत के समान उज्जवल, दानवों का नाश करने वाले, ज्ञानियों में अग्रणी, संपूर्ण गुणों के स्वामी, श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त श्री हनुमान जी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। उनके गुणों को बखान करते हुए प्रभु श्रीराम जी महर्षि अगस्तय जी से कहते हैं कि हनुमानजी तेज, धैर्य, सामर्थ्य, नीति, पुरुषार्थ, विवेक इत्यादि गुणों के भंडार हैं।

आचार्य रामदेव चतुर्वेदी ने कहा कि यदि सच्चे मन से महाबली पवन पुत्र श्रीहनुमानजी की आराधना की जाए, तो वो अपने भक्त का हर मनोरथ पूर्ण कर देते हैं। श्रीराम भक्त हनुमानजी अपने भक्तों की पीड़ा हरने वाले तथा श्रीरामायण रूपी महामाला के महारत्न के रूप में माने जाते हैं। प्रभु के सेवक होने के साथ-साथ हनुमानजी श्रीराम व माता जानकी के सुत भी कहे गए हैं।

इससे पूर्व श्रीहनुमानजी महाराज की आरती उतारी गई।साथ ही वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य व्यासपीठ का पूजन-अर्चन किया गया।

इस अवसर पर प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महोत्सव के संयोजक आचार्य लवदेव चतुर्वेदी,आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी, श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी, श्रीमती प्रिया चतुर्वेदी, संगीताचार्य शंभू शरण, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

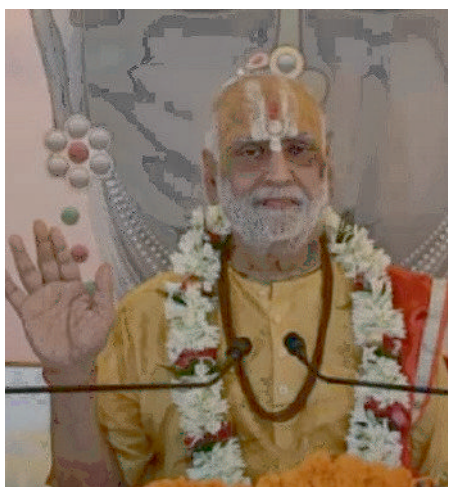

अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी के खिलाफ कानपुर के पार्षदों का धरना, हटाने की मांग

सुनील बाजपेई

कानपुर। सुबह 5:00 नहीं पहुंचने पर सफाई कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई किए जाने के मुद्दे ने तूल पकड़ लिया है। इससे नाराज पार्षदों ने आज सोमवार को अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चंद्रशेखर के खिलाफ धनराज देने के रूप में उनके खिलाफ मोर्चा खोल दिया। सभी पार्षद उन्हें हटाए जाने की मांग कर रहे हैं।

पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने बताया कि खिलाफ प्रस्ताव पारित हो जाने के बाद भी अभी तक अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चंद्रशेखर को हटाया नहीं गया है। इसके खिलाफ पार्षदों ने नगर निगम में आज सोमवार को गेट पर बैठकर धरना प्रदर्शन किया। यहां अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चंद्रशेखर के खिलाफ 40 से अधिक पार्षदों ने निगम के गेट पर एकत्रित होकर नारेबाजी की।

पार्षदों का कहना है कि दिसंबर महीने में सदन की बैठक के दौरान अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी को हटाने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था। पार्षदों में आरोप लगाया कि उनके क्षेत्रों के सफाई कर्मचारियों और सफाई इंस्पेक्टरों को जबरन हटाए जाने की वजह से क्षेत्रों में गंदगी की समस्या बढ़ रही है। प्रशासन द्वारा सदन के निर्णय की अनदेखी किए जाने का भी आरोप लगाते हुए पार्षद दल के नेता नवीन पंडित समेत अन्य पार्षदों ने भी चेतावनी दी कि जबतक अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी को हटाया नहीं जाता, उनका विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

याद रहे कि यहां नगर निगम द्वारा हाल में ही सफाई कर्मचारियों को लेकर एक ऐसा फरमान

जारी किया है, जो ना केवल गंदगी कायम रहे के संकल्प को पूरा करने वाला है ,बल्कि सफाई कर्मियों को उनकी जान लेने की हद तक प्रताड़ित करने वाला भी है। जिसकी शुरुआत भी संविदा पर नियुक्त एक सफाई पर्यवेक्षक लगभग 45 साल के संदीप कुमार की असमय मौत से हो चुकी है ,क्योंकि जारी किए गए इसी फरमान के आधार पर सुबह 5:00 बजे सफाई करने वाले समय को लेकर नगर निगम के एक वरिष्ठ अधिकारी ने उसे नौकरी से हटा देने की धमकी भी दी थी। जिसकी वजह से बहुत तनाव में तनाव में था। इसी के बाद अचानक उसकी हालत बिगड़ गई। जानकारी होने पर पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने हर संभव सहायता करते हुए उसे तत्काल ही हालत अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई थी।

इस फरमान के मुताबिक जो भी सफाई कर्मी सुबह 5:00 बजे संबंधित वार्ड में सफाई करने नहीं जाएगा। उसे वापस कर दिया जाएगा।

यही वजह है कि पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने इस फरमान को तत्काल वापस दिए जाने की मांग सबसे पहले की।

पार्षद दल के नेता नवीन पंडित पंडित यह भी सवाल उठाते हैं कि जारी आदेश निर्देश के मुताबिक प्रातः 5:00 बजे से 7:00 बजे तक मुख्य मार्गो की साफ-सफाई, कूड़ा उठान का कार्य पूरा किए जाने के बाद भी अगर सुबह 7:30 या 8:00 बजे आवारा कुत्तों और गायों आदि ने जगह-जगह फिर गंदगी कर दी तो फिर उसे साफ करने कौन आएगा ? पार्षद दल के नेता नवीन पंडित ने कहा कि जारी किया गया फरमान किसी भी दृष्टिकोण से आम जनता के हित में नहीं है।

उन्होंने बताया कि इसीलिए पार्षदों का धरना तब तक जारी रहेगा। जब तक पास किए गए प्रस्ताव के मुताबिक अतिरिक्त नगर स्वास्थ्य अधिकारी को हटा नहीं दिया जाएगा। क्योंकि गंदगी और सफाई कर्मचारी के उत्पीड़न की असली वजह वही है।

राष्ट्रवादी भारतीय जाटव समाज ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात, सौंपा मांगपत्र

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने विषम परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर समाज को एक नई दिशा दी – मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

उन्होंने कहा, "आज करोड़ों लोग डॉ. बाबा साहेब के संघर्षों के कारण सक्षम हुए हैं – अब ज़रूरत इस बात की है कि वे समाज के अन्य शोषित व वंचित वर्गों को ऊपर उठाने में सार्थक भूमिका निभाएं।"

₹आगरा जिला अस्पताल का नाम 'डॉ. भीमराव अंबेडकर'जी के नाम पर रखे जाने की महत्वपूर्ण मांग पर मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि सभी मांगों पर सकारात्मक और शीघ्र निर्णय लिया जाएगा सरकार हर समाज के सम्मान, अधिकार और विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

लखनऊ, संजय साग़र सिंह। राष्ट्रवादी भारतीय जाटव समाज के एक प्रतिनिधिमंडल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लखनऊ स्थित उनके सरकारी आवास पर भेंट की। इस दौरान संगठन की ओर से समाज के आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण से जुड़ी कई अहम मांगों को लेकर एक ज्ञापन सौंपा गया। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह ने किया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतिनिधिमंडल से सौहार्दपूर्ण वार्ता करते हुए कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर ने विषम परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर समाज को एक नई दिशा दी। उन्होंने कहा, "आज करोड़ों लोग बाबा साहेब के संघर्षों के कारण सक्षम हुए हैं। अब ज़रूरत इस बात की है कि वे समाज के अन्य शोषित व वंचित वर्गों को ऊपर उठाने में सार्थक भूमिका निभाएं।"

प्रमुख मांगें और सुझाव

प्रतिनिधिमंडल द्वारा प्रस्तुत ज्ञापन में कई प्रमुख मांगें शामिल थीं:

1. जाति प्रमाणपत्रों से अपमानजनक शब्द हटाकर केवल 'जाटव' लिखा जाए:

संगठन ने मांग की कि उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में जारी जाति प्रमाणपत्रों से ऐसे शब्द हटाए जाएं जो समाज की गरिमा को ठेस पहुँचाते हैं। प्रमाणपत्रों में केवल 'जाटव' शब्द का ही प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। प्रतिनिधिमंडल ने छत्तीसगढ़ सरकार के उदाहरण का हवाला देते हुए इस बदलाव को उचित ठहराया।

2. निजी क्षेत्र में दलित युवाओं को आरक्षण मिलेः

श्री उपेन्द्र सिंह ने कहा कि जब बड़े उद्योगपतियों को सरकार से भूमि, ऋण और सब्सिडी का लाभ मिलता है, तो उन्हें भी सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत दलित युवाओं को नौकरियों व प्रशिक्षण में प्राथमिकता देनी चाहिए।

3. शाहदरा बुद्धा पार्क को 'राजकीय पर्यटन पार्क' का दर्जा मिलेः

आगरा स्थित यह ऐतिहासिक स्थल पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। संगठन ने इसे पर्यटन विभाग के अंतर्गत लाकर विकसित करने की मांग की ताकि इसका सामाजिक और आर्थिक प्रभाव दलित समुदाय तक पहुंचे।

4. आगरा के पूर्ववोदय बुद्ध विहार का सौंदर्यीकरण और संरक्षणः

चक्कीपाट स्थित इस स्मारक को समाज की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र बताते हुए इसके जीर्णोद्धार और समुचित विकास की मांग की गई।

5. आगरा जिला अस्पताल का नाम 'डॉ. भीमराव अंबेडकर' के नाम पर रखा जाए: प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि इससे समाज में जागरूकता और गौरव का भाव उत्पन्न होगा।

6. धनौली क्षेत्र में बेदखली के आदेशों को निरस्त किया जाए: दलित बहुल नगला कारे गाँव के 100 से अधिक परिवारों को बेदखली नोटिस मिलने पर प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से भूमि परिवर्तन प्रक्रिया में राहत देने की अपील की।

7. धनौली एवं अजीजपुर को नगर पंचायत घोषित किया जाए: दोनों क्षेत्रों की सम्मिलित आबादी दो लाख से अधिक होने के चलते इन्हें नगर पंचायत का दर्जा देने की मांग भी ज्ञापन में शामिल थी।

मुख्यमंत्री ने दिए आश्वासन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि सभी मांगों पर सकारात्मक और शीघ्र निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि सरकार हर समाज के सम्मान, अधिकार और विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

अंत में भारतीय जाटव समाज की ओर से मुख्यमंत्री को भगवान बुद्ध की पीतल की प्रतिमा भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रतिनिधिमंडल में संगठन के राष्ट्रीय सचिव पूर्व न्यायाधीश श्री अनिल कुमार, उत्तर प्रदेश अध्यक्ष नेत्रपाल सिंह, लोकेश कुमार, तेज कपूर सहित कई अन्य गणमान्य पदाधिकारी शामिल रहे।

पीएम व केंद्रीय गृहमंत्री अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की- राजनीतिक गलियारों में सियासी अटकलें चरम पर पहुंची !

सरकार के दो सर्वोच्च दिग्गजों का राष्ट्रपति से एक ही दिन अलग -अलग मिलना, किसी बड़े महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर इशारा करता है-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की नजरें भारत की हर गतिविधियों पर लगी रहती है वैसे भी अभी 21 जुलाई से 21 अगस्त तक मानसून सत्र चल रहा है तो निगाहें और भी पैनी हो जाती है कि, संसद किस तरह के बड़े फैसले लेता है, या फिर ऑपरेशन सिंदूर पर 32 घंटों की बहस के बाद अब फ़िरे एसआई आर पर संसद में हंगामें केकारण कामकाज ठप्प पड़ा है, ऊपर से उपराष्ट्रपति का चुनाव 9 सितंबर 2025 को होने की घोषणा हो चुकी है सांसद में बड़े-बड़े बिल पेंडिंग है, इस बीच भारत सरकार व पार्टी के दो मुख्य पावरफुल सर्वोच्च दिग्गजों का अचानक रविवार 3 अगस्त 2025 को राष्ट्रपति भवन में जाकर राष्ट्रपति से मुलाकात करने की गतिविधि ने भारत ही नहीं पूरे विश्व का ध्यान खींचा है, इसीलिए मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि जरूर कोई अति खास महत्वपूर्ण मुद्दा होगा जो दोनों दिग्गज अलग-अलग रूप से राष्ट्रपति भवन में जाकर उनसे मुलाकात की है, जिसका खुलासा कुछ दिनों में हो जाएगा, परंतु राजनीतिक हल्कों में सियासी अटकलों का बाजार गर्म हो गया है, विपक्ष अलर्ट हो गया है कि कहीं कोई बड़ा फैसला तो नहीं लिया जा रहा है, या फिर मानसून सत्र में कोई बड़ा बिल तो पेश नहीं किया जाएगा और हंगामें के बीच ध्वनिमत से पारित कर लिया जाएगा या फिर जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने की भी तैयारी या फिर उपराष्ट्रपति के नाम पर मोहर लग चुकी है इसके कयास लगाए जा रहे हैं। चूँकि सरकार के दो मुख्य स्तंभों का मानसून सत्र में राष्ट्रपति से मिलना कोई बड़ा फैसला, बड़ा बिल, जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा या फिर उपराष्ट्रपति के चुनाव का मामला हो सकता है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे पीएम गृहमंत्री नें अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की, राजनीतिक गतिविधियों में सियासी अटकलें चरम सीमा पर पहुंची।

साथियों बात अगर हम रविवार 3 अगस्त 2025 को भारत में सियासी हलचल तेज होने की करें तो, रविवार को पीएम ने और केंद्रीय गृह मंत्री ने राष्ट्रपति से मुलाकात की। दोनों नेताओं के राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद सियासी हलचल तेज हो गई है ।हालांकि अभी तक यह सामने नहीं आया है कि पीएम और गृहमंत्री के राष्ट्रपति से मिलने के पीछे क्या कारण है। राष्ट्रपति भवन ने एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा- केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की। सियासी दरअसल, दोनों नेताओं की राष्ट्रपति से मुलाकात के बाद अलग-अलग तरह के कयास लगाए जा रहे है ।मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सरकार या तो कोई बड़ा फैसला लेने पर विचार कर रही है या फिर सदन में कोई बड़ा बिल लाना चाहती है। इसलिए दोनों नेताओं ने राष्ट्रपति से मुलाकात की है। बता दें कि संसद का मानसून सत्र चल रहा है। मानसून सत्र के पहले दिन से ही विपक्ष ऑपरेशन सिंदूर और बिहार में एसआईआर को लेकर चर्चा की मांग कर रहा है। इन दोनों मांगों को लेकर विपक्ष ने लगातार प्रदर्शन किया। विपक्ष की मांग के बाद संसद के दोनों सदनों में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा हो गई है, लेकिन एसआई आर पर अभी तक चर्चा नहीं हुई है। विपक्ष इस मुद्दे पर सदन में चर्चा चाहता है लेकिन सरकार अभी तक इसपर बिल्कुल ही तैयार नहीं है।

साथियों बात अगर हम इस मुलाकात के माइनें 9 सितंबर 2025 को होने वाले चुनाव से जोड़कर देखें तो, चुनाव आयोग ने तारीखों की घोषणा कर दी है। 9 सितंबर को मतदान होगा। वर्तमान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 21 जुलाई को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसके कारण नए उपराष्ट्रपति का चुनाव हो रहा है। 7 अगस्त को चुनाव आयोग की तरफ से अधिसूचना जारी की जाएगी।

बता दें कि 21 जुलाई को पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया। ऐसे में फिर से उपराष्ट्रपति पद पर चुनाव होना है। यहां समझें दोनों सदनों का नंबर गेम, संसद की दोनों सदनों में सांसदों की कुल संख्या 782 है।

उपराष्ट्रपति पद पर जीत दर्ज करने के लिए उम्मीदवार को 391 मतों की आवश्यकता होती है। लोकसभा में 542 सदस्यों में, एनडीए के 293 सांसद हैं। वहीं, राज्यसभा में 240 सदस्यों में से 129 सदस्य एनडीए के हैं। कुल मिलाकर एनडीए को 422 सांसदों का समर्थन प्राप्त है। ऐसे में एनडीए का उम्मीदवार ही उपराष्ट्रपति पद का दावेदार हो सकता है। फिलहाल की तरफ से उम्मीदवार की घोषणा नहीं की गई है। यहां रेखांकित करने वाली बात यह है कि पार्टी के पास इस समय उपराष्ट्रपति चुनाव में धनखड़ और नायडू जैसी स्थिति नहीं है अभी तीन पहियों पर सरकार सवार है इसलिए बाकी दो पहियों से उम्मीदवार के नाम पर सहमति लेना जरूरी हो गया है, नहीं तो नंबर गेम में बड़ा खेला होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता नंबर गेम के हिसाब से और दो पहिए अगर क्रॉस वोटिंग कर गए गए तो हो सकता है उपराष्ट्रपति विपक्ष का हो जाए पर इसकी संभावना बहुत कम है।

साथियों बात अगर हम इस मुद्दे पर कांग्रेस नेता शशि थरूर के बयान की करें तो, जब कांग्रेस सांसद शशि थरूर से पूछा गया कि देश का अगला उपराष्ट्रपति कौन होगा ? तो इसके जवाब में उन्होंने कहा कि केवल सत्तारूढ़ पार्टी का उम्मीदवार इस पद पर बैठ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें यह मालूम नहीं है कि वह किसे उपराष्ट्रपति बनाएगी। थरूर ने कहा कि हम बस इतना जानते है कि वह जिसे उम्मीदवार बनाएगी, वह व्यक्ति ही अगला उपराष्ट्रपति होगा। यह संसद के दोनों सदनों का चुनाव है ।उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति चुनाव में राज्य की विधानसभाएं भी चुनाव करती हैं, लेकिन उपराष्ट्रपति के लिए केवल लोकसभा और राज्यसभा ही मतदान करते हैं। इसलिए हम बहुमत पहले से ही जानते हैं। आगे कहा कि इतना समझ लीजिये कि अगला उपराष्ट्रपति सत्तारूढ़ दल द्वारा नामित व्यक्ति होगा उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें उम्मीद है कि केंद्र अगले उपराष्ट्रपति को चुनने के लिए विपक्ष की भी सलाह लेगा, लेकिन कौन जाने ?

साथियों बात अगर हम उपराष्ट्रपति चुनाव की प्रक्रिया व योग्यता की करें तो, उपराष्ट्रपति चुनाव प्रक्रिया और योग्यता (1) भारत का नागरिक होना चाहिए (2) कम से कम 35 वर्ष की आयु होनी चाहिए (3) राज्यसभा का सदस्य चुने जाने की योग्यता होनी चाहिए (4) उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया होती है (5) उम्मीदवार को 15,000 रूपए की जमानत राशि जमा करनी होती है (6) 1/6 वोट न मिलने पर जमानत राशि जब्त हो जाती है (7) नामांकन पत्रों की जांच के बाद वैध उम्मीदवारों की सूची तैयार की जाती है (8) मतदान प्रक्रिया में, मतदाता अपनी पसंद के अनुसार उम्मीदवारों को प्राथमिकता देते हैं (9) उदाहरण के लिए, यदि तीन उम्मीदवार A, B, और C हैं, तो मतदाता प्राथमिकता दर्शा सकता है (10) हर सांसद एक वोट देता है (11) प्राथमिकता के आधार पर उम्मीदवारों को 1, 2, 3...के क्रम में दर्शाता है (12) मतों की गिनती के बाद, उम्मीदवारों को उनकी प्राथमिकता के अनुसार मतों का आवंटन किया जाता है (13) सबसे ज्यादा मत पाने वाले उम्मीदवार को राष्ट्रपति चुनाव का विजेता घोषित किया जाता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेषण करें तो हम पाएंगे कि पीएम व केंद्रीय गृहमंत्री अचानक राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मुलाकात की- राजनीतिक गलियारों में सियासी अटकलें चरम पर पहुंची !सरकार के दो मुख्य स्तंभों का मानसून सत्र में राष्ट्रपति से मिलना कोई बड़ा फैसला, बड़ा बिल, जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा या फिर उपराष्ट्रपति चुनाव का मामला ?सरकार के दो सर्वोच्च दिग्गजों का राष्ट्रपति से एक ही दिन अलग-अलग मिलना, किसी बड़े महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर इशारा करता है।

सिट्रोएन ई स्पेसटॉरेर : दमदार फीचर्स और जबरदस्त रेंज के साथ यह इलेक्ट्रिक MPV , क्या भारत में होगी लॉन्च ?

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Citroen की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से जल द ही लग जरी इलेक ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में नई गाड़ी के तौर पर Citroen e-Spacetourer को लॉन च किया जा सकता है। इसमें कैसे फीचर्स मिलते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में सिट्रॉएन की ओर से नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। यह Citroen e-Spacetourer नाम से आ सकती है। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आ सकती है Citroen e-Spacetourer

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिट्रॉएन की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इसे इलेक्ट्रिक लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में लाया जा सकता है। इस गाड़ी को दुनिया के कई देशों में Citroen e-Spacetourer नाम से ऑफर किया जाता है।

ईवी वर्जन होगा पेश

कई देशों में इसे ICE वर्जन में भी ऑफर किया जाता है। लेकिन भारत में इसे सिर्फ ईवी सेगमेंट में ही लाया जा सकता है। हांलाकि अभी निर्माता की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है।

क या है खासियत

Citroen e-Spacetourer में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें 16 इंच स्टील रिम व्हील, ऑटो हेडलाइट्स, ऑटो वाइपर, ब्लूटूथ टेलीफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस मिरर स्क्रीन, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट, 10 इंच एचडी स्क्रीन, चार स्पीकर, चार ट्विटर ऑडियो सिस्टम, एसी, इलेक्ट्रिक और हीटेड डोर मिरर, 10 इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, रियर पार्किंग असिस्ट, ट्विन स्लाइडिंग रियर डोर, एबीएस, ईबीडी, क्रूज कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, टीपीएमएस जैसे कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं।

कितनी है रेंज

निर्माता की ओर से Citroen e-Spacetourer में 49 और 75 kWh की क्षमता की बैटरी के विकल्प दिए जाते हैं। जिससे इसे सिंगल चार्ज में 215 किलोमीटर से 455 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से अभी इसके लॉन्च को लेकर भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। ऐसे में कीमत की जानकारी लॉन्च के बाद ही दी जा सकती है। फिलहाल इसे ब्रिटेन सहित कई यूरोपिय देशों में ऑफर किया जाता है। ब्रिटेन में इसकी कीमत 44.56 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की कीमत 64.69 लाख रुपये तक है।

किनसे होगा मुकाबला

अगर इसे भारत में लॉन्च किया जाता है तो इसका बाजार में MG M9 से सीधा मुकाबला होगा। इसके अलावा इसे BYD eMAX7 और Kia Carnival जैसी लग्जरी एमपीवी से भी चुनौती मिल सकती है।

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाईराइडर का प्रेस्टीज पैकेज हुआ पेश, नई एक्सेसरीज से बेहतर होगी लुक

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Toyota की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए नए Prestige Package को पेश कर दिया है। इस पैकेज में किस तरह की एक सेसरीज को ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों को ऑफर करने वाली निर्माता Toyota की ओर से मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए Prestige Package को पेश कर दिया गया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरी को दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुआ Prestige Package

टोयोटा की अर्बन क्रूजर हाइराइडर एसयूवी को मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी के लिए निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज को पेश कर दिया है। इस पैकेज में कई एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है।

कौन सी एक सेसरीज को किया गया ऑफर

निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज में 10 अतिरिक्त एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है। जिसमें डोर वाइज़र – प्रीमियम एसएस इंसर्ट के साथ, हुड प्रतीक, रियर डोर लिड गार्निश, फेंडर गार्निश, बॉडी क्लैडिंग, फ्रंट बम्पर गार्निश, हेड लैंप गार्निश, रियर बम्पर गार्निश, रियर लैंप गार्निश – क्रोम और बैक डोर गार्निश को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

टोयोटा की ओर से एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें प्रोजेक्टर एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, ऑटो हेडलाइट, एलईडी टेल लैंप, हाई माउंट स्टॉप लैंप, रूफ रेल, रियर विंडो वाइपर और वॉशर, शॉर्क फिन एंटीना, ड्यूल टोन इंटीरियर, एंबिएंट लाइट्स, नौ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, आर्किमिस ऑडियो सिस्टम, सात इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हेड-अप डिस्प्ले, क्रूज कंट्रोल, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलेस चार्जर, ऑटो एसी, रियर एसी वेंट्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पीएम 2.5 फिल्टर, की-लैस एंट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी है कीमत

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर की एक्स शोरूम कीमत 11.34 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.19 लाख रुपये है।

किनसे होता है मुकाबला

Toyota की ओर से Hyryder को कंपनी चार मीटर से बड़ी एसयूवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Kia Seltos, Hyundai Creta, Honda Elevate, Maruti Grand Vitara, Mahindra XUV 700, Scorpio N जैसी SUVs के साथ होता है।

2025 रिनॉल्ट ट्राइबर की लॉन्च डेट फाइनल, अर्टिगा को टक्कर देगी नई फैमिली एमपीवी

परिवहन विशेष न्यूज

रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Renault Triber 2025 को लॉन च करने की तैयारी हो रही है। इसे किस तारीख को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल ली। हैचबैक से लेकर एसयूवी तक ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Renault की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से किस गाड़ी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन च होगी 2025 Renault Triber

रेनो की ओर से जल्द ही बजट एमपीवी सेगमेंट में 2025 Renault Triber को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी के लॉन्च की तारीख भी तय कर दी गई है।

कब होगी लॉन च

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 2025 Renault Triber को 23 जुलाई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। इस एमपीवी में कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जाएगा। लेकिन इंजन में किसी भी तरह का बदलाव होने की उम्मीद कम है।

लॉन च से पहले हो रही टेस्टिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में एमपीवी के फेसलिफ्ट को सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान फिर से देखा गया है। हालांकि इस यूनिट को भी पूरी तरह से ढंका गया था, लेकिन फिर भी इसके फ्रंट की कुछ जानकारी सामने आई है। इसमें नया बंपर, हेडलाइट और ग्रिल को दिया जाएगा। जिससे यह मौजूदा वर्जन के मुकाबले अलग नजर आएगी।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर एमपीवी के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसमें मौजूदा इंजन को ही ऑफर किया जाएगा। फिलहाल इस एमपीवी में एक लीटर की क्षमता का इंजन दिया जाता है जिसके साथ मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इस एमपीवी को पेट्रोल के साथ ही सीएनजी में भी ऑफर किया जाएगा।

किनसे है मुकाबला

रेनो की ओर से ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga के साथ होता है। इसके अलावा भी कीमत के मामले में इसे कई सब फोर मीटर एसयूवी और हैचबैक कारों से भी चुनौती मिलती है।

भारी छूट के साथ घर लाएं मारुति सुजुकी की कारें !

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर Arena डीलरशिप पर कई कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इन कारों को July 2025 में खरीदने पर कितना क या ऑफर मिल रहे हैं। कैश डिस-काउंट एक सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर कितना डिस-काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Maruti Arena डीलरशिप के जरिए कई बेहतरीन कारों की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस महीने कंपनी की किसी गाड़ी को Arena डीलरशिप से खरीदने का मन बना रहे हैं, तो July 2025 में किस तरह के Discount Offer दिए जा रहे हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Swift

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में स्विफ्ट की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी पर इस महीने के दौरान सबसे ज्यादा ऑफर दिए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इसके पेट्रोल एएमटी वेरिएंट पर 1.10 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। इसके सीएनजी और पेट्रोल वेरिएंट्स पर भी इस महीने 1.05 लाख रुपये के ऑफर मिल रहे हैं।

Maruti Alto K10

मारुति की ओर से ऑल्टो के10 पर July 2025 में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी ऑल्टो के10 के AMT वेरिएंट पर अधिकतम डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ इसे खरीदने पर इस महीने में 62500 रुपये तक की बचत की जा सकती है।

Maruti S-Presso

मारुति की एस प्रेसो कार पर भी July 2025 में अधिकतम 62500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। इस महीने में इस गाड़ी के भी AMT वेरिएंट को खरीदने पर यह बचत की जा सकती है। इसके अलावा इसके मैनुअल पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट्स पर अधिकतम 57500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा लिया जा सकता है।

Maruti Celerio

सेलेरियो पर मारुति की ओर से July महीने में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। सेलेरियो पर इस महीने में यह ऑफर AMT वेरिएंट पर दिया जा रहा है। इसके अलावा पेट्रोल मैनुअल और सीएनजी मैनुअल पर इस महीने 62500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा दिया जा रहा है।

Maruti Wagon R

कंपनी की ओर से वैगन आर पर भी अधिकतम 1.05 लाख रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वैगन आर पर July महीने में यह बचत LXI पेट्रोल मैनुअल और सीएजी वेरिएंट्स पर की जा सकती है।

Maruti Brezza

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर Brezza को लाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को इस महीने में खरीदने पर अधिकतम 35 से 45 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Maruti Ertiga

मारुति की सात सीटों वाली अर्टिगा पर भी इस महीने निर्माता की ओर से 10 हजार रुपये की बचत का मौका दिया जा रहा है।

हयुंडई इन्स्टेर ईवी के मजबूती का यूरो एनसीएपी क्रैश टेस्ट में

खुलासा, इन 4 कमियों से नहीं मिल पाई 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन मदिन मना रहे हैं। धोनी को कारों और बाइक स का काफी ज यादा शौक है और दुनिया की कई बेहतरीन कारें उनके गैराज में शामिल हैं। कौन सी पांच सबसे बेहतरीन कारें महेंद्र सिंह धोनी के गैराज में खड़ी हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान या कैप्टन कूल के नाम से पहचाने जाने वाले महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन (MS Dhoni Birthday) मना रहे हैं। उनको क्रिकेट के साथ ही कारों का भी काफी ज्यादा शौक है। धोनी के गैराज में वैसे तो कई कारें खड़ी हुई हैं, लेकिन कौन सी पांच ऐसी बेहतरीन कारें हैं जिनमें धोनी अक्सर सफर करते हुए नजर आते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Jeep Grand Cherokee TrackHawk

महेंद्र सिंह धोनी को अमेरिकी वाहन निर्माता जीप की ग्रैंड चिरोकी की ट्रैकहॉक काफी पसंद है। इस एसयूवी को अपने ताकतवर इंजन और परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। इसके साथ ही इसमें ज्यादा जगह के साथ अग्रेसिव स्टाइल भी मिलता है। एसयूवी में 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Mercedes Benz G 63 AMG

मर्सिडीज बेंज की ओर से ऑफर की जाने वाली Mercedes Benz G 63 AMG भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। देश के कई बॉलीवुड एक्टर और व्यापारियों के पास भी इस एसयूवी को देखा जा सकता है। इसमें चार लीटर का ट्विन टर्बो वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Nissan Jonga

महेंद्र सिंह धोनी की कार कलेक्शन में Nissan Jonga भी शामिल है। विंटेज और दमदार गाड़ी के तौर पर इसकी दुनियाभर में अलग पहचान है। इसमें भी चार लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक धोनी ने इस गाड़ी को अपनी कलेक्शन में 2019 में शामिल किया था।

Hummer H2

अमेरिकी सेना की पसंदीदा गाड़ी हम्वी से बनी हमर भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। धोनी के पास Hummer H2 है जिसमें 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। धोनी को अक्सर इस एसयूवी में सफर करते हुए देखा जाता है।

Citroen Basalt

महेंद्र सिंह धोनी हाल में ही सिट्रॉएन की बेसाल्ट कूप एसयूवी में सफर करते हुए नजर आए हैं। उम्मीद है कि यह धोनी की कार कलेक्शन में शामिल सबसे नई गाड़ी है। हालांकि धोनी सिट्रॉएन के ब्रॉन्ड अंबेसडर भी हैं और उनको हाल में ही बेसाल्ट के ब्लैक एडिशन में सफर करते हुए देखा गया था।

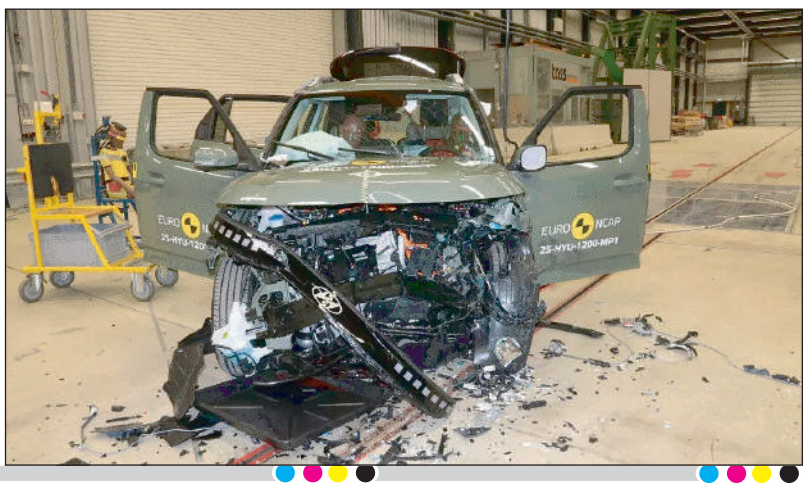

भारतीय महिला गणितज्ञ रमन परिमाला जिन्होंने विश्व को बदल दिया

विजय गर्ग

(गणितज्ञ जिसने बाधाओं को तोड़ दिया और बीजगणित को फिर से परिभाषित किया)

भारत हमेशा शानदार गणितीय दिमागों का घर रहा है - लगता है कि भास्कराचार्य या श्रीनिवास रामानुजन। उस गर्व की विरासत को आगे ले जाना रमन परिमाला है, जो एक गणितज्ञ है जिसने बीजगणित में अपने असाधारण योगदान के साथ एक वैश्विक निशान बनाया है।

शुरू से नंबरों के लिए एक प्यार

1948 में जन्मे परिमाला एक प्रगतिशील घर में पले-बढ़े, जहां गणित के लिए उनके प्यार का पोषण जल्दी हुआ। एक बच्चे के रूप में भी, वह संख्या के लिए एक आदत थी और स्कूल में बाहर खड़ी थी। जबकि उस समय अधिकांश महिलाओं को शिक्षण या चिकित्सा की ओर आकर्षित किया गया था, एक अंग्रेजी प्रोफेसर, उनके पिता ने गणित का पता लगाने के अपने सपने का समर्थन किया।

चेन्नई के सारदा विद्यालय में उनकी स्कूली शिक्षा ने उनके जुनून को बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। बाद में, स्टेला मैरिस कॉलेज फॉर वुमन में अपने समय के दौरान, प्रोफेसर थंगामणि अपने करियर पथ पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव बन गए। दिलचस्प बात यह है कि परिमाला ने संक्षेप में संस्कृत कविता का पीछा करने पर विचार किया, लेकिन जल्दी से महसूस किया कि उसका दिल वास्तव में संख्याओं का था।

अपने परिवार के पूर्ण समर्थन के साथ, परिमाला ने गणित में रामानुजन इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज में शोध किया। वह अपने शोध के शुरुआती दिनों में प्रोफेसरों भानुमूर्ति और रेमा जैसे गणितज्ञों को प्रोत्साहित करने का श्रेय देती हैं।

यह हमेशा आसान नहीं था। ऐसे समय में जब गणित में महिलाएं दुर्लभ थीं, परिमाला को अपनी जगह खोजने के लिए बाधाओं को तोड़ना पड़ा। और उन बाधाओं को तोड़ें जो उसने की थीं - उनका काम महिला गणितज्ञों की प्रेरित पीढ़ियों से है।

परिमाला की विशेषज्ञता बीजगणित में निहित है, बीजगणितीय ज्यामिति, टोपोलॉजी और संख्या सिद्धांत के कनेक्शन के साथ। उनकी सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक एक एफ़िन विमान पर एक अशाब्दिक द्विघात स्थान का पहला उदाहरण प्रकाशित कर रहा था। उन्होंने बीजगणित के क्षेत्र में एक प्रमुख मील का पत्थर, दूसरे सेरे अनुमान को हल करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परिमाला के काम ने भारत और विदेश दोनों में अपना अपार सम्मान और मान्यता अर्जित की है। वह देश की कुछ सबसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक अकादमियों की फेलो हैं:

- भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (नई दिल्ली)
- भारतीय विज्ञान अकादमी (बैंगलोर)
- राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (इलाहाबाद)

1987 में, उन्हें विज्ञान में भारत के सर्वोच्च पुरस्कार शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिर, 2010 में, उन्हें गणितज्ञों की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में एक शानदार वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था - एक गणितज्ञ को प्राप्त होने वाले सबसे महान सम्मान में से एक।

2020 में, उनकी उपलब्धियों को एक बार फिर से मान्यता दी गई जब महिला और बाल विकास मंत्रालय ने विज्ञान में 11 कुर्सियों में से एक का नाम उनके नाम पर रखा ताकि अधिक लड़कियों को एसटीईएम करियर बनाने के लिए प्रेरित किया जा सके। परिमाला उस सूची की एकमात्र जीवित वैज्ञानिक हैं, जो उनकी विरासत की मात्रा बोलती है।

परिवार और समर्थन

परिमाला अक्सर अपने परिवार को इतना कुछ हासिल करने में मदद करने का श्रेय देती हैं। अपनी शादी के बाद, वह तंजानिया में अपने पति रमन के साथ जुड़ गई, जहां वह मुख्य आंतरिक लेखा परीक्षक के रूप में काम कर रही थी। उस समय, उसे यकीन नहीं था कि उसका अगला करियर कदम क्या होगा। लेकिन फिर रमन ने एक अविश्वसनीय निर्णय लिया - उसने अपनी नौकरी छोड़ दी ताकि परिमाला ईटीएच ज्यूरिख में पोस्टडॉक्टरल काम कर सके।

परिमाला को सिर्फ गणित से प्यार नहीं है - उसे इसे पढ़ाना भी पसंद है। वह छात्रों, विशेष रूप से महिलाओं को सलाह देने और उन्हें कैरियर के रूप में गणित को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में भावुक है। इच्छुक गणितज्ञों के लिए उसका संदेश सरल है:

रमन परिमाला की कहानी प्रतिभा, दृढ़ संकल्प और लकीर के फकीर को तोड़ने में से एक है। उनके योगदान ने बीजगणित की सीमाओं का विस्तार किया है, और उन्होंने महिलाओं की भावी पीढ़ियों के लिए बिना किसी डर के गणित को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

जीवन-व्यवहार में हताश करता सोशल मीडिया

विजय गर्ग

अपने हालिया अध्ययन में यूरोपीय आयोग ने चिंता जतायी है कि सोशल मीडिया पर अतिसक्रियता से युवा पीढ़ी तनाव व थकान से जूझ रही है। इस संकट को लेकर भारतीय समाजविज्ञानी, चिकित्सक व मीडिया भी लंबे समय से चेतावनी देता रहा है। लेकिन जब कोई मुहिम व अध्ययन पश्चिमी जगत से आता है तो हम उसे विशेष महत्व देने लगते हैं। अब जब यूरोपीय आयोग जेनरेशन जेड को लेकर अपने निष्कर्ष सामने ला रहा है तो भारत में नये सिरे से उसकी चर्चा होने लगी है। विडंबना यह है कि पिछली सदी के अंतिम वर्षों से लेकर इस सदी के पहले दशक में पैदा हुए बच्चों की यह पहली पीढ़ी है, जिसे कम उम्र में ही सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों से रूबरू होने का मौका मिल गया था। यह पीढ़ी पारंपरिक मानकों को चुनौती देकर अपना नया आकाश तलाशने की जद्दोजहद में जुटी रही है। इस पीढ़ी ने परंपरागत जीवन मूल्यों को तिलांजलि देकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को अंजाम दिया। साथ ही नये नजरिये की जीवनशैली का अंगीकार किया। यह पीढ़ी डिजिटल युग के साथ कदमताल करती नजर आई। इंटरनेट के विस्तार के साथ वह सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्मों के साथ सहज दिखी। लेकिन काल्पनिक धरातल पर उगा सोशल मीडिया इस पीढ़ी को यथार्थ से बहुत दूर ले गया। फलतः कठोर यथार्थ से जूझते हुए यह पीढ़ी कल्पना व वास्तविकता के द्वंद्व के चलते तनाव व असहजता के भंवर में जा फंसी। इस बात की पुष्टि यूरोपीय आयोग का अध्ययन भी करता है। आयोग कहता है कि लगातार सोशल मीडिया में सक्रियता के चलते युवाओं में चिंता, मानसिक थकान, कुछ खोने का भय व मोबाइल में चिपके रहने की विसंगतियां सामने आई हैं। यहां उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 के विश्व खुशी सूचकांक रिपोर्ट में भी इन खतरों की तरफ इशारा किया गया था। इस रिपोर्ट में कहा गया था कि युवा वर्ग सबसे अधिक दुखी है। चौंकाने वाली बात यह थी कि उनमें तनाव व डिप्रेशन की वजह पढ़ाई या कैरियर की चिंता नहीं थी बल्कि इसकी मूल वजह सोशल मीडिया ही था।

वास्तव में हमने कोरोना संकट से उबरने के लिये जिस ऑनलाइन व्यवस्था को अस्त्र के रूप में अपनाया था, कालांतर वह ही शस्त्र बनकर युवा पीढ़ी को जख्मी करने लगा। उल्लेखनीय है कि विश्वव्यापी कोरोना महामारी के दौरान जब संचार बंदी लागू हुई तो पूरी दुनिया में जनजीवन ठप पड़ गया। जिसके चलते घरों में कैद लोगों को इंटरनेट ही अंतिम सहारा नजर आया। धीरे-धीरे युवाओं का जीवन इंटरनेट पर बहुत ज्यादा आश्रित हो गया। जहां छात्रों की पढ़ाई ऑनलाइन कक्षाओं पर निर्भर हो गई, वहीं मनोरंजन की दुनिया भी मोबाइल आदि तक सिमट कर रह गई। वहीं दूसरी ओर युवाओं के लिये शिक्षा व कैरियर का दबाव यथावत बना रहा। लेकिन एक हकीकत यह है कि जीवन व्यवहार में सब कुछ ऑनलाइन हो पाना संभव नहीं है। जीवन तो हमारी कठोर वास्तविकता और सामाजिक सहभागिता से ही चलता है। वैसे फिलहाल हमारा वैश्विक परिवेश भी कम उथल-पुथल वाला नहीं है। जब तक दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं कोरोना काल में लगे झटके से उबर पाती, दुनिया में कई युद्धों व क्षेत्रीय संघर्षों ने पूरी दुनिया की आर्थिकी की स्वाभाविक गति को रोक दिया। निस्संदेह, रूस-यूक्रेन युद्ध, इस्राइल-हमास संघर्ष व इस्राइल तथा ईरान के बीच हुए संघर्ष ने विश्व विकास की स्वाभाविक गति को बाधित किया, जिसका नकारात्मक प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ा। वहीं वैश्विक टकराव के अलावा युवाओं के अपने राष्ट्रों की विषम स्थितियां व जलवायु परिवर्तन के कारकों के चलते रोजगार के सिमटते अवसरों ने भी नई पीढ़ी को हताश किया। इसके बावजूद युवा पीढ़ी उस सोशल मीडिया में लिप्त रही, जिसका जीवन की ठोस वास्तविकताओं से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसे में यथार्थ से जूझते वक्त युवाओं का हताश व निराश होना स्वाभाविक ही है। कालांतर में उनका आत्मविश्वास भी प्रभावित हुआ। कुछ देशों ने सोशल मीडिया के नियमन की कोशिश की भी, लेकिन प्रयास सिरे न चढ़ सके। ऐसे में सरकारों को स्क्रीन समय के नियमन के साथ ही सोशल मीडिया का बेहतर उपयोग शिक्षा तथा रचनात्मक संवाद बढ़ाने के लिये करने की जरूरत है।

सही कैरियर पथ चुनना हर छात्र के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, व्यक्तिगत विकास और व्यावसायिक सफलता दोनों को आकार देना

विजय गर्ग

कैरियर पथ चुनना एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है। चाहे छात्र वैज्ञानिक नवाचार, वित्तीय रणनीति या सामाजिक प्रभाव की ओर झुका हो, प्रत्येक धारा मजबूत करियर बनाने के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करती है। सभी धाराओं में पारंपरिक से आधुनिक प्रौद्योगिकी-संचालित पाठ्यक्रमों तक उपलब्ध विकल्पों की एक सरणी के साथ, यह और भी अधिक भारी बनाता है। छात्रों को अपने हितों और वर्तमान बाजार के रुझानों के साथ संरेखित मार्ग का चयन करने की आवश्यकता है, एक बार सोच समझकर, उन्हें उज्ज्वल भविष्य से कुछ भी नहीं रोक सकता है।

विज्ञानः दुनिया भर में नवाचार को स्थानांतरित करना जबकि चिकित्सा, नर्सिंग और इंजीनियरिंग में पारंपरिक पाठ्यक्रम उच्च मांग में बने हुए हैं और सुरक्षित कैरियर विकल्प प्रदान करते हैं, प्रौद्योगिकी में उन्नति ने नए कैरियर विकल्पों को जन्म दिया है जो भविष्य के प्रमाण हैं। सॉफ्टवेयर विकास, साइबर सुरक्षा, एयरोस्पेस और सिस्टम इंजीनियरिंग में भूमिकाएं एआई / एमएल, रोबोटिक्स और डेटा विज्ञान के उदय के साथ तेजी से विस्तार कर रही हैं।

जीव विज्ञान के साथ प्रौद्योगिकी के एकीकरण के कारण जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, खाद्य प्रौद्योगिकी, माइक्रोबायोलॉजी, चिकित्सा और डिजाइन इंजीनियरिंग जैसे विविध विषयों का उद्भव हुआ है, जो वैज्ञानिक नवाचार के साथ रचनात्मकता को सम्मिश्रण करता है।

वाणिज्य स्ट्रीम उन छात्रों के लिए आदर्श है जो संख्या, रणनीति और प्रबंधन में रुचि रखते हैं। जबकि बीबीए, बी.कॉम, एमबीए जैसे पाठ्यक्रम कॉर्पोरेट, उद्यमशीलता और सार्वजनिक क्षेत्रों में कैरियर पथ प्रदान करते हैं, फिनटेक, ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग के उद्भव ने छात्रों के लिए नए कैरियर पथ खोले हैं। जिन लोगों के लिए वित्त और प्रौद्योगिकी में विशेष रुचि है, वे क्रिप्टोक्यूरेंसी, ब्लॉकचेन और डिजिटल भुगतान समाधान में करियर पर विचार कर सकते हैं।

कलाः सृजन की समीक्षा की यह स्ट्रीम रचनात्मक झुकाव और महत्वपूर्ण सोच वाले छात्रों के लिए उपयुक्त है और विशेष रूप से डिजिटल प्लेटफार्मों के विकास और रचनात्मक पेशेवरों की मांग के साथ विविध कैरियर के अवसर प्रदान करता है। एआर / वीआर टेक्नोलॉजी के आगमन से एनीमेशन, ग्राफिक डिजाइन और यूएक्स / यूआई डिजाइन में एक संपन्न कैरियर बना है। डिजिटल मीडिया बूम ने पत्रकारिता, जनसंपर्क और ऑनलाइन सामग्री निर्माण में एक विस्तारित कैरियर का नेतृत्व किया है। रचनात्मक कला जैसे रंगमंच, संगीत और घटना समन्वय में अवसर पनप रहे हैं। ऐसे आकर्षक कैरियर विकल्पों में से कुछ मनोविज्ञान, यात्रा और पर्यटन, फोटोग्राफी, लिबरल आर्ट्स, पाक कला, फैशन डिजाइन, कपड़ा डिजाइन, आंतरिक डिजाइन और कई और अधिक हैं।

आज के तेजी से विकसित होने वाले आर्थिक परिदृश्य में, क्षेत्रों में कैरियर के अवसरों की अधिकता है। छात्रों को अपने हितों और शक्ति पर ध्यान केंद्रित करने, प्रासंगिक पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने और इस विकसित इलाके को नेविगेट करने और सफल और पूरा करने वाले करियर को पूरा करने के लिए बदलती गतिशीलता के बराबर रहने की आवश्यकता है।

पुस्तकों से परे पाठ

विजय गर्ग

जीवन "पुस्तकों से परे सबक" से भरा है, अमूल्य अंतर्दृष्टि और कौशल की पेशकश करता है जो औपचारिक शिक्षा अक्सर प्रदान नहीं कर सकती है। ये अनुभव, चुनौतियां और बातचीत हैं जो हमें गहन तरीकों से आकार देती हैं। किताबों से परे सबक समझना ये पाठ आमतौर पर कई श्रेणियों में आते हैं:

व्यावहारिक कौशलः वित्त का प्रबंधन करना सीखना, खाना बनाना, घर के आसपास की चीजों को ठीक करना, या सार्वजनिक परिवहन को नेविगेट करना सभी महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं जो आमतौर पर कक्षा में नहीं पढ़ाए जाते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ताः सहानुभूति विकसित करना, भावनाओं का प्रबंधन करना, संघर्षों को हल करना और सामाजिक संकेतों को समझना स्वस्थ संबंधों और व्यक्तिगत कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। ये विविध लोगों के साथ बातचीत करने और विभिन्न सामाजिक स्थितियों का सामना करने के माध्यम से सीखे जाते हैं।

लचीलापन और अनुकूलनशीलताः असफलताओं पर काबू पाना, अप्रत्याशित परिवर्तनों के अनुकूल होना, और कठिनाइयों के माध्यम से दृढ़ होना मानसिक क्रूरता और लचीलेपन का निर्माण करता है, जीवन की अनिश्चितताओं को नेविगेट करने के लिए आवश्यक गुण।

क्रिटिकल थिंकिंग एंड प्रॉब्लम-सॉल्विंगः जबकि किताबें अवधारणाओं को पेश कर सकती हैं, उन्हें वास्तविक दुनिया की समस्याओं के लिए लागू करने के लिए अक्सर एक अलग तरह की महत्वपूर्ण सोच की आवश्यकता होती है। स्थितियों का विश्लेषण करना, दबाव में निर्णय लेना और रचनात्मक समाधान खोजना शैक्षणिक सेटिंग्स के बाहर सम्मानित कौशल हैं।

आत्म-जागरूकताः अपनी ताकत, कमजोरियों, मूल्यों और जुनून को समझना अक्सर आत्मनिरीक्षण और वास्तविक जीवन के अनुभवों से आता है, न कि केवल पाठ्यपुस्तकों से।

पारस्परिक कौशलः प्रभावी ढंग से संवाद करना, दूसरों के साथ सहयोग करना और तालमेल बनाना मुख्य रूप से प्रत्यक्ष बातचीत और अनुभव के माध्यम से विकसित कौशल हैं। ये सबक कहां से आते हैं? ये ₹अलिखित₹ पाठ कई स्थानों पर पाए जा सकते हैं:

यात्राः विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और जीवन के तरीकों का अनुभव दृष्टिकोण को व्यापक बनाता है और अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देता है।

कार्य अनुभवः अंशकालिक नौकरियों से लेकर पेशेवर करियर तक, कार्यस्थल जिम्मेदारी, टीम वर्क, संचार और समस्या को हल करना सिखाता है।

स्वयंसेवाः दूसरों की मदद करना अक्सर सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ प्रदान करता है, सहानुभूति बनाता है, और नेतृत्व कौशल विकसित करता है।

रिश्तेः परिवार, दोस्त और रोमांटिक साथी हमें प्यार, समझौता, माफी और संचार के बारे में सिखाते हैं।

शौक और व्यक्तिगत परियोजनाएंः शैक्षणिक आवश्यकताओं के बाहर जुनून का पीछा करना अनुशासन, रचनात्मकता और दृढ़ता सिखा सकता है।

विफलताओं और गलतियोंः शायद सबसे गहरा सबक हमारे गलत कदम से आते हैं। असफलताओं से सीखना लचीलापन बनाता है और भविष्य के प्रयासों के लिए अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। वे महत्वपूर्ण क्यों हैं? जबकि अकादमिक ज्ञान निस्संदेह महत्वपूर्ण है, पुस्तकों से परे सबक वास्तविक दुनिया में पनपने के लिए आवश्यक व्यावहारिक ज्ञान और चरित्र विकास प्रदान करते हैं। वे व्यक्तियों को क्षमता से लैस करते हैं:

जटिल सामाजिक स्थितियों पर नेविगेट करें।

व्यक्तिगत और पेशेवर चुनौतियों को संभालें।

सार्थक संबंध बनाएं।

कभी बदलते वातावरण के अनुकूल।

खुद को और दूसरों को अधिक गहराई से समझें। अंततः, ये पाठ एक अच्छी तरह से गोल व्यक्ति में योगदान करते हैं जो न केवल जानकार है, बल्कि बुद्धिमान, लचीला और एक पूरा जीवन जीने में सक्षम है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

राष्ट्र रक्षाबंधन अनुष्ठान पर्व

डा. विनोद बब्बर

संस्कृति और पर्व एक दूसरे के उसी तरह से पूरक है जैसे नदी और जल। रक्त और मज्जा। शरीर और आत्मा। संस्कृति जीवन दर्शन, कला, साहित्य, अध्यात्म और संस्कारों जैसे असंख्य रंग-बिरंगे पुष्पों का वह गुलदस्ता है जिसकी सुगंध हजारों वर्षों से निरंतर प्रवाहमान है। पर्व समय-समय पर उस सुगंध की छटा बिखेरने का अवसर होते हैं। बाल गंगाधर द्वारा गणेशोत्सव को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ना एक उदाहरण है कि पर्व राष्ट्र- ऋषियों के चिंतन का प्रसाद है जो आनंद से आरंभ होकर राष्ट्र चिंतन की ओर ले जाता है। यदि वह वैभव के प्रदर्शन और आनंद की मस्ती पर ही अटक जाते हैं तो समझा जा सकता है कि पर्व ने अपने चरम को स्पर्श नहीं किया। इसीलिए वह अपनी राह भटक गया। भविष्य में ऐसी चूक न हो, इसके लिए राग, द्वेष रहित निष्पक्ष चिंतन-मंथन आवश्यक है।

यूं तो रक्षाबंधन को सांस्कृतिक पर्व है लेकिन इस बार रक्षाबंधन राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में हमारी परीक्षा भी है। यह महत्वपूर्ण रक्षाबंधन कब से मनाया जा रहा है, किस-किसने इस पर्व में अपने प्राण-प्रण से रंग भरे हैं, इसपर अनेक विचार हो सकते हैं। सूक्ष्मान्वेषण करने पर सुदर्शन चक्र से श्रीकृष्ण की घायल अंगुली पर अपनी साड़ी फाड़कर बांधती द्रोपदी की छवि सामने अंकित होती है तो राजा बलि का दंभ तोड़ने का पराक्रम देखने को मिलता है। कहा तो यह भी जाता है कि देवों और दानवों के युद्ध में जब देवता हारने लगे, तब वे देवराज इंद्र के पास गए। देवताओं को भयभीत देखकर इंद्राणी ने उनके हाथों में रक्षासूत्र बाँध दिया। इससे देवताओं का आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने दानवों पर विजय प्राप्त की।

यदि बहुत पुराने समय में न जायें तो याद आता है कि गुजरात में नागौर किले की फिरोजशाह द्वारा घेराबंदी किए जाने पर वहाँ के राजा मानसिंह की पुत्री पन्नादेवी द्वारा अरिकन्द के राजा उम्मेद सिंह को भावभरे पत्र संग भेजी गई राखी ने गौड़वान किले की पराजय और हजारों क्षत्राणियों को जौहर करने से बचा लिया था। वामपंथियों द्वारा इतिहास को मनमानी ढंग से प्रस्तुत करने की श्रृंखला में महारानी कर्मवती द्वारा हुमायुं को भेजी राखी की चर्चा भी की जाती है जबकि वास्तविकता से उसका कोई लेना देना नहीं है। लेकिन हाँ, विदेशी आक्रांता सिकन्दर (अलेक्जेंडर) की प्रेमिका ने भारतीय नरेश पोरस को राखी बांधकर सिकन्दर की प्राण रक्षा का वचन लेना इतिहास का एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। कहा जाता है कि विश्वविजेता बनने निकले सिकन्दर संग युद्ध में एक अवसर ऐसा भी आया था जब राजा पोरस उसका आसानी से वध कर सकते थे लेकिन उन्होंने राखी की लाज रखते हुए ऐसा नहीं किया।

राखी आज बेशक बहन द्वारा भाई को राखी बांधने तथा भाई द्वारा उसे उपहार देने तक सिमटता दिखाई दे रहा हो लेकिन कभी मातृभूमि पर आये संकट का सामना करने जा रहे वीरों को उस नगर की नारियाँ तिलक लगा, हाथ पर रक्षा सूत्र बांधते हुए जहाँ उससे वतन की रक्षा का वचन लेती थी वहीं परमात्मा से उन भुजाओं को बल और अमरत्व प्रदान करने की प्रार्थना भी करती थी ताकि वे राष्ट्र-रक्षा कर सके।

यजुर्वेद: 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:' हम (वयं) प्रबुद्धजन (पुरोहिता:) राष्ट्र का (राष्ट्रे) जागरण करें (जागृयाम) का उद्घोष करता है। इसका आशय स्पष्ट है कि राष्ट्र रक्षा के लिए हम सबको सावधान होकर कार्य करना चाहिए। भारतीय संस्कृति में जननी और जन्मभूमि के प्रति विशेष श्रद्धा है। पश्चिमी भक्त बेशक राष्ट्र शब्द को पश्चिमी विचारकों की देन बताये लेकिन हमारे वेदों में अनेकों बार 'राष्ट्र' शब्द का उल्लेख है। किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी सर्वभौमिकता उसकी प्राण-वायु है। पराजित अथवा पराधीन राष्ट्र को प्रतिक्षण अपमानित होना पड़ता है इसीलिए उस राष्ट्र के सुपुत्र अपने प्राणों का बलिदान देकर भी इस कलंक को समाप्त करते हैं।

इतिहास साक्षी है भारत की आजादी की लड़ाई ऐसे असंख्य बलिदानों की बुनियाद पर ही लगातार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रही है। मंगल पाण्डे से आरंभ हुई यह श्रृंखला तिलका मांझी, लाला लाजपतराय, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाकुल्ला खां, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसे असंख्य, अनाम रणबांकुरों की दास्तान है। 15 अगस्त 1947 को प्राप्त हुई खंडित आज़ादी न केवल हमारे लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए खतरे का सबक बन रही है। पिछले दिनों पहलगाम में हुए कायरतापूर्ण आतंकी हमले ने प्रत्येक भारतीय को विचलित कर दिया। हमारी २२ बहनों बेटियों के सिंदूर को पोछने वाले आतंक के पर्याय पाकिस्तान को हमारी आधुनिक तकनीक से लैस पराक्रमी सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से ऐसा सबक सिखाया जो उसे लंबे समय तक स्मरण रहेगा।

रक्षाबंधन पर यह विचारणीय है कि एक ओर पाकिस्तान के आतंक तो दूसरी पाकिस्तान के मददगार चीन के अधिनायकवाद से किस तरह से निपटा जाए। क्या भारतीय अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के प्रयासों में संलग्न तथा हमारी सीमाओं को अशांत करने वाले चीन को समृद्ध बनाने में हमारी कोई भूमिका होनी चाहिए? प्रत्येक भारत पुत्र एक स्वर में इसे अस्वीकार करेगा। इसलिए आप सभी का कर्तव्य है कि अपनी और अपनों की कलाई पर 'केवल भारतीय रक्षा सूत्र' (चीनी राखी हर्गिज नहीं) बांधते/ बंधवाते हुए संकल्प ले कि हम अपमान का अमृत पीने की बजाय स्वाभिमान का विष पीने से भी पीछे नहीं हटेंगे। ऐसे तत्वों से खरीदना तो दूर मुफ्त में भी कोई वस्तु नहीं लेंगे।

भारत जब विश्वअर्थव्यवस्था से पांचवें स्थान पर पहुंच चुका है और शीघ्र ही तीसरे स्थान को प्राप्त करने वाला है, राष्ट्र जागरण और उत्थान की इस बेला पर राष्ट्र- विरोधी शक्तियां जाति, धर्म, प्रान्त, भाषा, सम्प्रदाय के नाम पर हमें बांटने के प्रयासों को तेजी ला रही हैं। पंजाब सहित सारे देश में बहुत तेजी से धर्मान्तरण की प्रयास हमारी संस्कृति पर कुठाराघात है। झूठे प्रायोजित आरोपों के माध्यम से देश के उत्थान में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले तपवीरों का रास्ता रोकने के लिए ये तत्व किसी भी सीमा तक जा सकते है। अत: इस बार रक्षाबंधन अवसर है राष्ट्र-रक्षा बंधन के संकल्प को प्रबल बनाने का। राष्ट्र-रक्षा का अर्थ उसकी सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं होता अपितु राष्ट्र की संस्कृति, उसके समस्त नागरिक, वन, पर्यावरण, परंपरा, प्रतिष्ठा की रक्षा भी शामिल है। जब तक इस राष्ट्र का एक भी नागरिक उपेक्षित है, राष्ट्र के विकास की सार्थकता नहीं हो सकती। हमें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और हमारे पूर्वजों की कीर्ति से विमुख करके हर प्रयास को असफल बनाना ही होगा।

राष्ट्र रक्षाबंधन यज्ञ को सफल बनाने के लिए सामाजिक समरसता अनिवार्य है। हर प्रकार के भेद को हमेशा के लिए त्याग कर 'सभी हिन्दु सहोदर' का भाव स्थायी रूप से हृदयांगम करना चाहिए।

राष्ट्र रक्षा बंधन अनुष्ठान का एक महत्वपूर्ण सोपानहर बहन बेटी की रक्षा और उसे पूर्ण स्वाभिमान से उन्नति के हर अवसर प्रदान करने का वचन देना है। कन्या भ्रूण हत्या मानवता के प्रति अपराध तथा माथे पर कलंक है। इसके विरुद्ध जनजागरण के लिए स्वयं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने का संकल्प लेना हर्गिज नहीं भूलना है। हमें आज और अभी जागना होगा वरना कल देर हो चुकी होगी। यदि बेटियां ही नहीं बचेगी तो राष्ट्र-रक्षा के लिए वीरों को जन्म देने वाली माताएं कहाँ से आएगी? भाई की कलाई पर राखी बांधने वाली बहने कहां से आएगी ?

दुनिया भर के सभी पूजा-पंथ अपने पूर्वजों के पंथ अर्थात 'हम जो हैं उन्हीं की वजह से हैं' के परिस्कृत विस्तार होते हैं। एक गौरवशाली अतीत की नींव पर उज्ज्वल भविष्य की कामना हमारे आने वाली वीडियो के अधिकारों को सुरक्षित रखना है। विवेक की सजगता और मन का उत्साह राष्ट्र की जीवांतता की कसौटी होती है। आइये राष्ट्र रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम स्वयं से पूछें कि क्या हम जीवंत राष्ट्र के जीवंत पुत्र हैं? यदि आपके बुद्धि विवेक से प्राप्त उत्तर हाँ है तो तभी आपको रक्षाबंधन मनाने का अधिकार है क्योंकि आप जानते और मानते है- इदं राष्ट्राय इदं न मम!

निष्पक्षता की आड़ में हार की बौखलाहट? पीसीबी का विरोध कितना जायज़

क्रिकेट, जो जुनून और भावनाओं का दूसरा नाम है, अक्सर अपने शानदार शॉट्स और रिकॉर्ड्स से ज्यादा विवादों के लिए चर्चा में रहता है। वर्ल्ड चैम्पियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) २०२५ का फाइनल इसका ताजा उदाहरण है। २ अगस्त को बर्मिंघम में खेले गए इस रोमांचक फाइनल में दक्षिण अफ्रीका चैंपियंस ने पाकिस्तान चैंपियंस को ९ विकेट से बुरी तरह रौंद दिया। इस करारी हार के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने एक ऐसा फैसला लिया, जिसने क्रिकेट जगत में तूफान खड़ा कर दिया। पीसीबी ने ऐलान किया कि वह भविष्य में डब्ल्यूसीएल में हिस्सा नहीं लेगा, यह दावा करते हुए कि आयोजकों ने पक्षपात और दोहरे मापदंड अपनाए। लेकिन यह फैसला कई सवालों को जन्म देता है—क्या यह कदम निष्पक्षता की सच्ची लड़ाई है, या हार की खीझ और प्रशंसकों को शांत करने की चाल? क्या टूर्नामेंट के दौरान पीसीबी की चुप्पी और जोरदार विरोध का अभाव उनकी मंशा पर सवाल नहीं उठाता? डब्ल्यूसीएल एक अनूठी निजी टी-२० लीग है, जहां विश्व के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर अपनी प्रतिभा का जादू बिखेरते हैं। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, भारत, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज की छह टीमें इस मंच पर अपनी चमक दिखाती हैं। फाइनल में दक्षिण अफ्रीका का शानदार प्रदर्शन सराहनीय रहा, लेकिन टूर्नामेंट तब विवादों में घिर गया, जब पीसीबी ने लाहौर में रविवार को हुई बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की बैठक के बाद डब्ल्यूसीएल से अलग होने का फैसला किया। पीसीबी चेयरमैन मोहसिन नकवी की अगुवाई में हुई इस बैठक में आयोजकों पर "दोहरे मापदंड" और "पक्षपात" का गंभीर आरोप लगाया गया। पीसीबी ने दावा किया कि भारत-पाकिस्तान के बीच दो अहम मुकाबले (२० जुलाई का ग्रुप स्टेज मैच और 31 जुलाई का सेमीफाइनल) रद्द कर दिए गए। ग्रुप स्टेज में भारत ने खेलने से मना कर दिया, जबकि सेमीफाइनल में भारत को बिना गेंद फेंके वॉकओवर दे दिया गया। हैरानी की बात यह रही कि रद्द हुए इन मैचों के लिए भारत को अंक दिए गए, जिसे पीसीबी ने खेल भावना के विरुद्ध बताया।

पीसीबी ने अपने बयान में दावा किया, डब्ल्यूसीएल ने जानबूझकर एकतरफा फैसले लिए और न खेलने वाली टीम को अंक दिए, जो खेल की निष्पक्षता के पवित्र सिद्धांतों का खुला उल्लंघन है। बोर्ड ने आगे कहा कि वह ऐसी प्रतियोगिता का हिस्सा नहीं बन सकता, जो संकीर्ण राजनीतिक मानसिकता से ग्रस्त हो। यह बयान साहसिक लगता, अगर यह हार की कड़वाहट में न डूबा होता। जब अन्याय इतना साफ था, तो पीसीबी ने टूर्नामेंट के दौरान चुप्पी क्यों साधे रखी? जब भारत को ग्रुप स्टेज के रद्द मैच में दो अंक दिए गए, तब उनकी खामोशी क्या कोई सोची-समझी चाल थी? अगर आयोजकों का रवैया इतना पक्षपातपूर्ण था, तो पीसीबी ने टूर्नामेंट के बीच में ही बगावत का बिगुल क्यों नहीं फूंका? क्या फाइनल तक इंतजार इसलिए किया गया, क्योंकि उन्हें खिताब जीतने का भरोसा था? या फिर हार के बाद यह बयान सिर्फ प्रशंसकों के गुस्से को शांत करने और अपनी नाकामी पर पर्दा डालने का एक हथकंडा है?

भारत-पाकिस्तान क्रिकेट केवल एक खेल नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है, जहां जुनून, भावनाएं और कभी-कभी राजनीति का रंग भी गहरा हो जाता है। डब्ल्यूसीएल जैसे टूर्नामेंट, जो पूर्व क्रिकेटरों को एकजुट करने का दम भरते हैं, को इन जटिलताओं से परे रहना चाहिए था। लेकिन रद्द हुए भारत-पाकिस्तान मैचों और भारत को दिए गए अंकों ने इस टूर्नामेंट को विवादों की भेंट चढ़ा दिया। पीसीबी का यह दावा कि टूर्नामेंट राजनीति की संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित है, गंभीर और विचारणीय है। लेकिन उनकी टूर्नामेंट के दौरान चुप्पी और कोई ठोस कदम न उठाना उनके इरादों पर सवाल खड़े करता है। क्या यह संभव है कि पीसीबी ने जानबूझकर इस मुद्दे को फाइनल तक टाला, ताकि हार की स्थिति में उनके पास आयोजकों को कठघरे में खड़ा करने का बहाना रहे? यह सवाल न केवल पीसीबी की विश्वसनीयता को चुनौती देता है, बल्कि यह भी पूछता है कि क्या यह कदम सैद्धांतिक है, या मात्र हार की बौखलाहट और प्रशंसकों को तसल्ली देने का एक चतुर उपाय?

डब्ल्यूसीएल एक निजी लीग है, जिसे आईसीसी जैसे संगठन नियंत्रित नहीं करते। ऐसे में आयोजकों की जवाबदेही और फैसलों की पारदर्शिता पर सवाल उठना स्वाभाविक है। लेकिन पीसीबी का यह कदम भी उतना ही संदिग्ध प्रतीत होता है। अगर उन्हें आयोजकों के रवैये पर इतना गहरा ऐतराज था, तो तत्काल कार्रवाई क्यों नहीं हुई? टूर्नामेंट के दौरान चुप रहकर और फाइनल की हार के बाद यह जोरदार बयान देकर, क्या पीसीबी अपनी हार का ठीकरा आयोजकों पर फोड़ने की कोशिश कर रहा है? यह सवाल इसलिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि भारत-पाकिस्तान मुकाबले प्रशंसकों के लिए हमेशा एक भावनात्मक उत्सव होते हैं। इन रद्द हुए मैचों ने प्रशंसकों को निराश किया, और पीसीबी के इस देर से उठाए गए कदम ने उनके इरादों को और संदिग्ध बना दिया। यह विवाद क्रिकेट में निष्पक्षता और खेल भावना की अहमियत को रेखांकित करता है। क्रिकेट सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि लाखों लोगों की भावनाओं का प्रतीक है। जब इस खेल में पक्षपात या राजनीति की छाया पड़ती है, तो यह प्रशंसकों के दिलों को चोट पहुंचाता है। पीसीबी का यह फैसला भले ही उनके प्रशंसकों के बीच एक साहसिक कदम माना जाए, लेकिन इसकी टाइमिंग इसे संदिग्ध बनाती है। अगर यह निष्पक्षता की लड़ाई है, तो यह लड़ाई टूर्नामेंट के दौरान ही लड़ी जानी चाहिए थी। डब्ल्यूसीएल आयोजकों के सामने अब एक बड़ी चुनौती है, उन्हें अपने फैसलों की पारदर्शिता सिद्ध करनी होगी और यह सुनिश्चित करना होगा कि भविष्य में ऐसे विवाद न उपजें।

इस पूरे प्रकरण ने क्रिकेट की दुनिया को एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया है। पीसीबी का यह फैसला न केवल डब्ल्यूसीएल के लिए, बल्कि पूरे क्रिकेट समुदाय के लिए एक चेतावनी है। अगर क्रिकेट को उसकी शुद्धता और जुनून के लिए जीवित रखना है, तो निष्पक्षता और पारदर्शिता को सर्वोपरि रखना होगा। लेकिन पीसीबी को भी यह समझना होगा कि सैद्धांतिक लड़ाई सही समय पर और सही मंच पर लड़ी जाती है। फाइनल की हार के बाद उठाया गया यह कदम भले ही सुर्खियां बटोर ले, लेकिन यह सवाल हमेशा बना रहेगा—क्या यह निष्पक्षता की जीत है, या हार की बौखलाहट और प्रशंसकों को तसल्ली देने का एक बहाना? जवाब शायद भविष्य के मैदानों और फैसलों में छिपा है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

संविधान से संस्कृति तक: भारत का पुनर्जागरण दिवस

जब 5 अगस्त की प्रभात ने भारत की धरती को अपने आलोक से सजाया, तो वह केवल एक सूर्योदय नहीं था—वह एक नवीन युग का उद्घाटन था, जिसमें भारत की आत्मा ने अपने गौरव को पुनः खोजा। यह वह क्षण था, जब समय की धारा ने एक नया मोड़ लिया, और भारत ने अपनी एकता, आस्था और सांस्कृतिक स्वाभिमान को एक अनुपम संगम में पिरोया। 5 अगस्त कोई साधारण तारीख नहीं, बल्कि एक ऐसी चेतना का प्रतीक है, जो इतिहास के पन्नों से निकलकर भविष्य के स्वप्नों को साकार करती है। यह वह दिन है, जब दो ऐतिहासिक घटनाओं—2019 में जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति और 2020 में अयोध्या में श्रीराम मंदिर के भूमिपूजन—ने भारत को एक नए शिखर पर स्थापित किया। यह दिन केवल घटनाओं का मिलन नहीं, बल्कि भारत की उस अटल यात्रा का उत्सव है, जो साहस, विश्वास और सनातन मूल्यों की विजय का गान गाती है।

5 अगस्त 2019 को जब भारत की संसद ने अनुच्छेद 370 को समाप्त करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया, तो वह केवल एक संवैधानिक कदम नहीं था। वह एक ऐसी दीवार का विध्वंस था, जिसने दशकों तक जम्मू-कश्मीर को भारत की मुख्यधारा से अलग रखा था। यह दीवार केवल भौगोलिक नहीं थी; यह एक भावनात्मक और सांस्कृतिक खाई थी, जो भारत की एकता को चुनौती देती थी। इस निर्णय ने उस खाई को पाटा और भारत के हर कोने को एक सूत्र में बांधा। यह केवल कागजी प्रक्रिया नहीं थी; यह उस स्वप्न की साकारता थी, जो भारत को अखंड और अटल देखना चाहता था। जम्मू-कश्मीर के लोगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान का मार्ग प्रशस्त हुआ, और भारत ने विश्व के सामने अपनी संप्रभुता की गर्जना की। यह एक संदेश था—भारत अब किसी भी विभाजन को स्वीकार नहीं करेगा, और उसकी एकता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

इस निर्णय ने न केवल राजनीतिक बदलाव लाया, बल्कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी नई संभावनाओं के द्वार खोले। जम्मू-कश्मीर में शांति, स्थिरता और विकास की नई किरणें फूटीं। यह वह क्षण था, जब भारत ने अपने भीतर की एकता को पुनर्जनन दिया और विश्व को दिखाया कि वह अपनी अखंडता के लिए किसी भी चुनौती से टकराने को तैयार है। यह साहस, दूरदृष्टि और राष्ट्रप्रेम का वह प्रतीक था, जो भारत की आत्मा को और सशक्त करता है।

यदि 5 अगस्त 2019 ने भारत की भौगोलिक और राजनीतिक एकता को मजबूत किया, तो 5 अगस्त 2020 ने उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जागृत किया। अयोध्या में श्रीराम मंदिर के लिए भूमिपूजन का वह क्षण केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं था। वह सदियों की प्रतीक्षा, असंख्य बलिदानों और एक अटूट आस्था की पराकाष्ठा था। अयोध्या—वह पवित्र भूमि, जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि के रूप में युगों से पूजित रही—उस दिन एक नए इतिहास की साक्षी बनी। जब मंत्रों की ध्वनि और दीपों की रोशनी ने अयोध्या को आलोकित किया, तो वह केवल एक मंदिर का शिलान्यास नहीं था। वह एक सभ्यता की पुनर्स्थापना थी, जो अपनी जड़ों से जुड़कर भविष्य की ओर बढ़ रही थी।

उस दिन, जब पहला पत्थर मंदिर की नींव में रखा गया, वह केवल एक संरचना का आरंभ नहीं था। वह एक संकल्प था—उस विश्वास का, जिसने रामभक्तों को सदियों तक एकजुट रखा। वह एक प्रतीक था—उस सांस्कृतिक स्वाभिमान का, जो भारत की आत्मा को जीवित रखता है। श्रीराम मंदिर का संघर्ष केवल एक भूखंड के लिए नहीं था; वह भारत की सनातन पहचान की खोज थी। रामायण केवल एक कथा नहीं, बल्कि भारत का वह जीवन दर्शन है, जो मर्यादा, त्याग और धर्म के मूल्यों को सिखाता है। श्रीराम का चरित्र भारत की सांस्कृतिक नींव है, और अयोध्या में मंदिर का निर्माण इस नींव को और सशक्त करने का प्रयास है।

5 अगस्त का यह दिन भारत की एकता और आस्था का एक अनुपम संगम है। एक ओर, अनुच्छेद 370 का अंत भारत की संप्रभुता और एकता की विजय का प्रतीक है। दूसरी ओर, श्रीराम मंदिर का शिलान्यास भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना की पुनर्स्थापना है। यह दिन यह सिद्ध करता है कि भारत अपनी जड़ों से जुड़कर ही अपने भविष्य का निर्माण कर सकता है। यह एक ऐसी कथा है, जो साहस, विश्वास और संकल्प की ताकत को रेखांकित करती है। यह हमें सिखाता है कि सत्य और न्याय की राह में चाहे जितनी भी बाधाएं आएं, अंत में विजय सत्य की ही होती है।

5 अगस्त अब केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक प्रबल प्रेरणा का प्रतीक है। यह हमें स्मरण कराता है कि भारत मात्र एक भूखंड नहीं, अपितु एक सजीव चेतना है, जो अपनी बहुरंगी विविधता में अखंड एकता का दर्शन कराती है। यही एकता भारत का परम बल है। यह दिन उन ताकतों के लिए एक सशक्त चेतावनी है, जो भारत को विखंडित करने का स्वप्न देखती हैं। यह उद्घोष करता है कि भारत की आत्मा अटल और अजेय है, जो किसी भी संकट के समक्ष झुकती नहीं।

प्रत्येक 5 अगस्त एक महोत्सव है, एक ऐसी दीपावली, जिसमें सत्य का दीप प्रज्ज्वलित होकर अज्ञान के तिमिर को चीरता है। यह दिन भारत की उस अमर यात्रा का गीत गाता है, जो कठिनाइयों के मध्य से निकलकर विजय के शिखर तक पहुंचती है। यह एक ऐसी सनातन कथा है, जो हर भारतीय के हृदय में गूंजती है—एक स्वावलंबी, सामर्थ्यशाली और सांस्कृतिक रूप से प्रबुद्ध भारत की कथा। यह वह दृढ़ निश्चय है, जो भारत को न केवल भौगोलिक रूप से एकाकार रखता है, बल्कि उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्योति को अनंतकाल तक देदीप्यमान बनाए रखता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बिहार में चुनाव सुधार और मतदाता पुनरीक्षण : लोकतंत्र की मजबूती बनाम सियासत की चाल

अशोक कुमार झा

लोकतंत्र की असली ताक़त मतदाता होता है। मतदाता का अधिकार केवल एक पर्ची या बटन दबाने तक सीमित नहीं, बल्कि लोकतंत्र की नींव का प्रतीक है। लेकिन जब मतदाता सूची ही त्रुटिपूर्ण, अधूरी और संदिग्ध हो, तो लोकतंत्र की पूरी इमारत खोखली हो जाती है। बिहार—जो हिंदुस्तान की राजनीति का धड़कता दिल माना जाता है—आज इसी चुनौती से जूझ रहा है।

चुनाव आयोग ने हाल में बिहार की मतदाता सूची के व्यापक पुनरीक्षण का प्रस्ताव रखा, जिसमें आधार से लिंकिंग, डिजिटल सत्यापन और फर्जी नामों की सफाई जैसी सख़्त प्रक्रियाएँ शामिल हैं। यह कदम लोकतंत्र को और मजबूत करने की दिशा में ऐतिहासिक साबित हो सकता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इस सुधार का सबसे बड़ा विरोध वही दल कर रहे हैं जो खुद को लोकतंत्र का संरक्षक बताते हैं—राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस। संसद ठप करना, सड़कों पर जनता को भड़काना और अदालतों में याचिकाएँ दायर करना उनकी रणनीति का हिस्सा बन चुका है।

वोटर लिस्ट की खामियाँ : लोकतंत्र के लिए खतरा

लोकतांत्रिक व्यवस्था का मूलभूत आधार मतदाता सूची है। जब सूची ही अपूर्ण और त्रुटिपूर्ण हो, तो पूरा चुनाव संदिग्ध हो जाता है।

फर्जी नाम और मृतकों के नाम : बिहार की सूचियों में हजारों मृत व्यक्तियों के नाम अब भी मौजूद हैं, जिन पर वोट डाले जाते हैं।

दोहरी प्रविष्टि : एक ही व्यक्ति का नाम दो-दो जगह दर्ज पाया गया है, जिससे फर्जी वोटिंग आसान हो जाती है।

प्रवासी मजदूरों की समस्या : हर चुनाव में लाखों मजदूर अपने कार्यस्थल से वापस नहीं आ पाते और मताधिकार से वंचित हो जाते हैं।

युवाओं का बहिष्कार : लाखों नए मतदाता 18 वर्ष की आयु पूरी करने के बावजूद नाम दर्ज नहीं करा पाते।

विदेशी नागरिकों का घुसपैठिया वोट : सबसे गंभीर आरोप यह है कि बिहार की वर्तमान यानी पुरानी वोटर लिस्ट में हजारों बांग्लादेशी और अन्य विदेशी नागरिकों के नाम शामिल हैं, जिन्हें विभिन्न दलों की मिलीभगत से जोड़ा गया है।

यह स्थिति न केवल लोकतंत्र की साख को कमजोर करती है, बल्कि राष्ट्र की सुरक्षा और सामाजिक संतुलन के लिए भी खतरा है।

2024 के चुनावों से मिले सबक

लोकसभा चुनाव 2024 और बिहार विधानसभा के हालिया उपचुनावों में बड़ी संख्या में फर्जी वोटिंग और बूथ कैप्चरिंग की शिकायतें दर्ज हुईं।

कई जगह मृत व्यक्तियों के नाम से वोट डाले गए।

कई सीटों पर दोहरी प्रविष्टियों ने नतीजे प्रभावित किए।

स्वतंत्र एजेंसियों की रिपोर्ट के अनुसार, कुल मतदाताओं का लगभग 8–10% हिस्सा या तो फर्जी या संदिग्ध पाया गया।

अगर यह सुधार नहीं किया गया, तो आने वाले विधानसभा चुनावों में भी यही परिदृश्य दोहराया जाएगा, और लोकतंत्र की नींव हिल जाएगी।

विपक्ष का विरोध : संसद से सड़क तक

चुनाव आयोग द्वारा सुधार की घोषणा के बाद विपक्ष ने आक्रामक रुख अपनाया।

संसद ठप : पूरे सत्र को बाधित कर दिया गया।

सड़क पर आंदोलन : यह प्रचारित किया गया कि सरकार जानबूझकर खास जातीय और धार्मिक समुदायों के नाम सूची से हटाना चाहती है।

न्यायालय का सहारा : बार-बार याचिकाएँ दायर कर प्रक्रिया को लंबा खींचने की कोशिश।

यह विरोध केवल राजनीतिक असहमति नहीं, बल्कि एक रणनीतिक चाल है।

विपक्ष ऐसा क्यों कर रहा है?

जातीय समीकरणों का डर

बिहार की राजनीति जातीय गणित पर टिकी रही है। अगर सूची शुद्ध कर दी गई तो कई पारंपरिक वोट बैंक टूट जाएंगे।

फर्जी वोटिंग पर रोक

बूथ कैप्चरिंग और फर्जी मतदान की प्रथा बिहार की राजनीति का हिस्सा रही है। जब आधार आधारित सत्यापन और डिजिटल निगरानी होगी, तो यह रास्ता बंद हो जाएगा।

विदेशी नागरिकों का वोट बैंक

आरोप है कि विपक्षी दल बांग्लादेशी और अन्य विदेशी नागरिकों के नाम मतदाता सूची में शामिल कराते रहे हैं। ये नाम हटने पर उनके वोट बैंक में भारी कमी आ सकती है।

नए युवाओं और प्रवासियों की भागीदारी का डर

नए मतदाता विकास और रोजगार जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देंगे। इससे जातीय राजनीति कमजोर होगी और विपक्ष के पारंपरिक समीकरण ढह सकते हैं।

विपक्ष को क्या लाभ होगा?

सहानुभूति की राजनीति : जनता को यह विश्वास दिलाना कि उनके समुदाय को वंचित किया जा रहा है।

सरकार को घेरना : संसद ठप कर और अदालत में केस डालकर सरकार को असफल दिखाना।

चुनावी फायदा : डर और भ्रम फैलाकर अपने समर्थकों को संगठित रखना।

जनता पर असर

भ्रम और असुरक्षा : अफवाहों के कारण लोग असुरक्षित महसूस करेंगे।

विश्वास में कमी : जनता चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाने लगेगी।

सामाजिक तनाव : जातीय और सामुदायिक विभाजन गहरा होगा।

वोटिंग प्रतिशत पर असर : डर और असमंजस में मतदाता मतदान से दूर हो सकते हैं।

विदेशी नागरिकों के नाम हटाना क्यों जरूरी

लोकतंत्र केवल नागरिकों के अधिकारों पर आधारित होता है। जब गैर-नागरिकों को अवैध रूप से मताधिकार दिया जाता है, तो यह न केवल लोकतंत्र का अपमान है, बल्कि राष्ट्र की संप्रभुता के साथ सीधा खिलवाड़ है।

2024 की एक स्वतंत्र रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया कि बिहार की मतदाता सूची में लगभग 1.5 से 2% नाम विदेशी नागरिकों के हो सकते हैं।

इनमें अधिकांश बांग्लादेश से आए घुसपैठिए हैं, जिन्हें स्थानीय राजनीतिक संरक्षण के तहत नामांकित किया गया।

यह स्थिति न केवल चुनाव को प्रभावित करती है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक संतुलन पर भी गहरा असर डालती है।

इसलिए इन नामों को ईमानदारी से हटाना लोकतंत्र की पवित्रता के लिए आवश्यक है।

डिजिटल युग की चुनौती और समाधान

आज आधार, मोबाइल और डिजिटल पहचान ने नई संभावनाएँ खोली हैं।

आधार आधारित सत्यापन से फर्जी और दोहरे नाम हटाए जा सकते हैं।

ब्लॉकचेन तकनीक का इस्तेमाल वोटिंग प्रक्रिया को पूरी तरह सुरक्षित बना सकता है।

ऑनलाइन और डाक मतपत्र जैसी सुविधा प्रवासी मजदूरों को भी मताधिकार दिला सकती है।

क्या विपक्ष का विरोध उचित है?

लोकतंत्र में सवाल उठाना विपक्ष का अधिकार है। लेकिन लोकतंत्र की नींव को कमजोर करना कभी उचित नहीं हो सकता।

अगर वाकई गड़बड़ी है, तो विपक्ष को प्रक्रिया में शामिल होकर पारदर्शिता सुनिश्चित करनी चाहिए। संसद ठप करना और जनता को भड़काना यह बताता है कि असली मक़सद सुधार को रोकना नहीं, बल्कि अपने राजनीतिक हितों की रक्षा करना है।

आगे का रास्ता

नियमित और समयबद्ध पुनरीक्षण : हर साल तय समय पर सूची का शुद्धिकरण।

विदेशी नागरिकों की पहचान और विलोपन : सख़्त जाँच से सभी अवैध नाम हटाना।

प्रवासी मजदूरों के लिए सुविधा : डाक मतपत्र या ऑनलाइन वोटिंग व्यवस्था।

युवाओं को जोड़ना : स्वतः पंजीकरण और विशेष अभियान।

देवताओं की तृप्ति से क्या लाभ ?

आचार्य श्री चन्द्रभूषण मिश्र

एक राजा ने अपने पुरोहित से हवन के लाभ जानने की जिज्ञासा की। विद्वान् पुरोहित ने वेद शास्त्रानुसार यज्ञ-प्रक्रिया का वर्णन किया परन्तु परोक्षवाद पर निहित यज्ञ तत्त्वों को प्रत्यक्षवादी राजा पूरी तरह न समझ पाया। अन्ततोगत्वा पुरोहितजी ने यज्ञ प्रक्रिया समझाने की एक नवीन युक्ति निकाली। राजा से कहा तुम ब्रह्मभोज करो, तब कुछ समझ में आएगा। राजा ने पण्डित जी की बात मान कर वैसा ही किया.

पुरोहित जी ने यज्ञ-प्रक्रिया के प्रगाढ़ ज्ञाता वेदपाठियों को एक भवन में बिठाया और दूसरे ब्राह्मणों को दूसरे भवन में. इसके बाद नाना खाद्य पदार्थ परसे गए परन्तु भोजन से पूर्व पुरोहित जी के संकेतानुसार राजा ने सभी ब्राह्मणों के, हाथों में एक-एक डण्डा बांध दिया और भोजन करने की आज्ञा दी। ब्राह्मणों ने ज्यों ही ग्रास उठाकर मुख में डालना चाहा तो वह मुड़ न सका जिसके कारण हाथ शिर से भी ऊपर चला गया। इस घटना को देखकर सभी ब्राह्मण बड़े चकित हुए, राजा के भय से कोई ब्राह्मण कुछ पूछ न सका और सामने पड़ा भोजन देखकर सभी ब्राह्मण सांस भरते रह गए लेकिन कोई भी खा न सका।

इसके बाद याज्ञिक ब्राह्मणों ने आपस में परामर्श करके दो पंक्ति लगा ली, सामने वाला व्यक्ति. भोजन ग्रास उठाकर अपने सामने बैठे व्यक्ति के मुख में डालने लगा और दूसरा भी इसी भांति उसको खिलाने लगा। क्योंकि बंधा हुआ हाथ अपने मुख में नहीं पहुँच पाता था, सामने वाले के मुख में तो भलीभांति पहुँचता था। इस तरह सबने भरपेट भोजन किया और सभी ब्राह्मण तृप्त होकर डकार लेने लगे। राजा ने परितप्त याज्ञिक ब्राह्मणों से जब इस सूझ का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि महाराज! श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने कहा है-

देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

अर्थात् हे मनुष्यों ! तुम यज्ञ प्रक्रिया से देवताओं को तृप्त करो, देवता तुम्हें तृप्त करेंगे, इस प्रकार एक दूसरे को तृप्त करते हुए तुम दोनों का परम कल्याण होगा।

ब्राह्मणों ने कहा-हे राजन्! हमने यहाँ भी इसी यज्ञसूत्र से काम लिया। निःसन्देह मनुष्य संसार में सब पदार्थों के होते हुए भी कर्मबन्धन में बंधा हुआ उनका स्वतन्त्रता पूर्वक उपभोग कर सकने में स्वाधीन नहीं है। यदि मनुष्य यज्ञयागादि द्वारा देवताओं को तृप्त करे तो फिर देवता भी उपभोग क्षमता प्रदान करते हैं। इसलिये अमुक-अमुक संस्कार के समय विहित होमादि का श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करना चाहिए।

मैं बिंदी हूँ, मौन की ज्वाला

डॉ. प्रियंका सौरभ

माथे पर चुप बैठी मैं,
जैसे चाँदनी का एक बिंब –
किंतु पूछते हो मुझसे,
"तुम हो कौन, इस रंग में लिपटी?"

मैं तो चुप थी वर्षों से,
मौन की ज्वाला बनकर –
ना किया प्रतिकार कभी,
ना तोड़ी कोई परंपरा।

मैं बिंदी हूँ –
स्त्री की उस पहली
पुकार की जो किसी
आरती की थाली से
नहीं,
उसकी चुप पीड़ा से जन्मी।

तुम्हारी आंखों को खटकती क्यों
है मेरी धड़कन की यह लालिमा?
क्या अस्तित्व का कोई रंग नहीं होता?

मेरे माथे पर जो बिंदी है,
वह माँ की गोद से उठी आभा है,
वह दादी की कहानियों से गूंथी गई भाषा है।

क्या इसलिए मुझे विदेशी कह दोगे?
क्योंकि मैं अपनी चुप्पियों के साथ भी
अपनी संस्कृति से मुखर हूँ?

क्या अमेरिकन होने के लिए
स्वप्नों का रंग बदलना ज़रूरी है?

या अपना नाम, अपनी माँ की भाषा छोड़
देना ही कर्तव्य है?

मैं तो जलती रही एक दीपक की तरह,
जिसने तुम्हारी अदालतों में न्याय को ऊष्मा
दी।

तुमने मेरा न्याय नहीं
देखा,
केवल मेरे माथे की
बिंदी को जज
किया।

मैंने प्रश्न नहीं
किया तुम्हारे
सूट–बूट से,
तो तुम क्यों कांप उठे
मेरी परंपरा से?

मैं बिंदी हूँ –
मौन की वह सुलगती हुई रेखा
जो हर अपमान में भी सौंदर्य ढूंढ लेती है।

मैं बिंदी हूँ –
स्त्री की वह पहचान जो तुम्हारे तानों से
नहीं,
अपने मौन प्रतिरोध से संवरती है।

मैं बिंदी हूँ –
जिसे मिटाया जा सकता है शरीर से,
पर आत्मा से नहीं।

महिला सुरक्षा के नाम पर आश्वासनों की मात्र औपचारिकता नहीं निभाई जाए

संस्कृत में बड़े ही खूबसूरत शब्दों में नारी/स्त्री के बारे में कहा गया है कि-' नारीणां तु विशेषेण गुणान्संकीर्तयाम्यहम्। या यथा शक्तितः पूज्या धर्मे पन्थाः स एव सः।।' इसका मतलब यह है कि स्त्रियों के गुणों का वर्णन विशेष रूप से करना चाहिए। वे जैसे भी हों, जिस शक्ति से युक्त हों, पूजनीय हैं – यही धर्म का मार्ग है। एक अन्य श्लोक में कहा गया है कि-' स्त्री शक्तिः परमं बलम्। या मातरः, या प्रेरकाः, या रक्षिण्यः सदा शुभाः।।' इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि स्त्री ही परम शक्ति है - वह माँ है, प्रेरणा है, रक्षक है और सदा शुभव है, लेकिन भारतीय संस्कृति में स्त्रियों को इतना महत्व प्रदान किए जाने, नारी सशक्तीकरण की बातों के बीच भी यदि आज देश की महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं, तो यह हम सभी के लिए एक विडंबना होने के साथ ही साथ बहुत दुखद बात भी है। आज महिलाओं की सुरक्षा की बातें तो कमोबेश सभी सरकारें और राजनीतिक दल, प्रशासन, पुलिस, विभिन्न संगठन करते नजर आते हैं, लेकिन महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर धरातल पर कुछ ठोस नज़र नहीं आता है। आज मीडिया की सुर्खियों में आए दिन हमें महिलाओं के प्रति विभिन्न अपराध, बलात्कार, हिंसा, अश्लील व अनर्गल, अनैतिक टिप्पणियां जैसी अनेक खबरें पढ़ने सुनने को मिलती रहतीं हैं। कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब हम महिलाओं की असुरक्षा पर कोई खबर नहीं पढ़ते सुनते हों। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भी हमारा समाज कहीं न कहीं पुरूष प्रधान समाज ही है और हमारे समाज में आज महिलाओं की समानता, उनके विभिन्न अधिकारों की बातें तो खूब की जातीं हैं, लेकिन उनके लिए होता कुछ खास नहीं है। महिला सुरक्षा के प्रति ऐसी असंवेदनशीलता का परिचय आखिर क्यों ? होना तो यह चाहिए कि महिलाओं की सुरक्षा के प्रति हमारा समाज, हमारी सरकारें,हमारा प्रशासन, हमारे सभी राजनेता मिलजुलकर धरातल पर काम करें। कानून को सख्त होना ही चाहिए। महिला सुरक्षा के नाम पर किन्हीं भी आश्वासनों की मात्र औपचारिकता नहीं निभाई जाए। कहना ग़लत नहीं होगा कि कुछ ठोस हासिल होना चाहिए, महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर। आज महिलाओं की सुरक्षा को लेकर देश में जगह-जगह तरह-तरह के अभियान, जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाते हैं,लेकिन इन अभियानों में या तो दृष्टि की कमी साफ दिखती है या फिर लापरवाही या कोताही बरती जाती है, इसे ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। इस क्रम में, पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में गुजरात के अहमदाबाद में महिलाओं को बलात्कार से बचने के लिए घर पर रहने का आग्रह किया गया। वास्तव में, यह बहुत ही शर्मनाक है कि ये आग्रह अहमदाबाद यातायात पुलिस द्वारा पोस्टर के जरिए किया गया। महिलाओं की सुरक्षा के लिए इस तरह के अभियान (प्रायोजित पोस्टरों) ने विवाद खड़ा कर दिया है। गुजरात के

अहमदाबाद से आई यह खबर हैरान करती है कि यातायात पुलिस की ओर से सुरक्षा अभियान के तहत जागरूकता फैलाने के लिए जिस तरह के संदेशों वाले पोस्टर लगाए गए, उससे तो यही पता चलता है कि या तो ऐसे आयोजन संचालित करने वाले के पास न्यूनतम संवेदना और समझ का अभाव है या फिर वे एक आपराधिक मानसिकता का बचाव कर रहे हैं। पाठकों को बताता चलूं कि शहर के कुछ इलाकों में चिपकाए गए इन पोस्टरों की विपक्ष ने कड़ी आलोचना की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन पोस्टरों को शहर के कुछ इलाकों में लगाया गया था, जिनमें लिखा था, 'देर रात पार्टी में न जाएं, आपके साथ बलात्कार या सामूहिक बलात्कार हो सकता है। 'अपने दोस्त के साथ अंधेरे और सुनसान इलाके में न जाएं, अगर उसके साथ बलात्कार या सामूहिक बलात्कार हो गया तो ?' यह सामने आया है कि यह पोस्टर सोला और चांदलोडिया इलाकों में सड़क डिवाइडर पर लगाए गए थे, जिन्हें अब हटा लिया गया है।एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक की एक रिपोर्ट के अनुसार गुजराती में लिखे पोस्टर उक्त इलाकों में (सोला और चांदलोडिया जैसे इलाकों में) डिवाइडर पर चिपके देखे गए, जिनमें से कई पर 'सतर्कता' नामक एक समूह का नाम था और प्रायोजक के रूप में अहमदाबाद यातायात पुलिस का उल्लेख था। इस संबंध में पुलिस उपायुक्त (पश्चिम यातायात) ने स्पष्ट किया कि-'ट्रैफिक पुलिस ने केवल सड़क सुरक्षा से जुड़े पोस्टरों को प्रायोजित किया था, न कि महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित पोस्टरों को प्रायोजित किया गया था।' मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ट्रैफिक पुलिस ने इन पोस्टरों को एक एनजीओ की ओर से लगाए जाना बताया गया है।जो भी हो, यह साफ दर्शाता है कि आज भी महिलाओं की सुरक्षा के प्रति हम ज़रा से भी संवेदनशील नहीं हैं और समाज की सोच बिल्कुल जड़, संकीर्ण हो चुकी है। ताज़ा मामले में अहमदाबाद यातायात पुलिस ने सफाई दी है कि ऐसे संदेशों वाले पोस्टरों में उनका हाथ नहीं है। हालांकि,इसके लिए वास्तव में दोषी कौन है,यह तो जांच पड़ताल के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा, लेकिन यहां यक्ष प्रश्न यह उठता है कि यदि ट्रैफिक पुलिस की जानकारी या सहमति के बिना किसी कथित गैरसरकारी संगठन(एनजीओ) ने ऐसे पोस्टर लगाए, तो सार्वजनिक स्थानों पर लगाए जाने से पहले किसी जिम्मेदार अधिकारी ने इसकी जांच क्यों नहीं की ? सवाल यह भी है कि क्या गुजरात की महिलाएं रात में घर से बेधड़क बाहर निकल सकती हैं या नहीं ?' सवाल यह भी कि क्या पुलिस और प्रशासन के साथ ही साथ हमारे समाज की जबावदेही तय नहीं होनी चाहिए ? बहरहाल, यह बहुत ही अफसोसजनक है कि जो संगठन और सरकारी महकमे महिलाओं की सुरक्षा के लिए काम करने का दावा करते हैं, वे ही असंवेदनशीलता बरतकर व संकीर्ण व ओछी मानसिकता का परिचय देकर किसी अपराध के लिए पीड़ित को ही कठघरे में खड़ा कर रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि लिंग-आधारित हिंसा को रोकने में पुरुषों और महिलाओं की भूमिका के बारे में उन्हें शिक्षित करने से दुर्व्यवहार और भेदभाव की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आ सकती है, लेकिन इसके लिए हमें सभी की(पुलिस , प्रशासन) जवाबदेही भी सुनिश्चित करनी होगी ।आम आदमी को तो आगे आना ही होगा। महिला सशक्तीकरण आज के समाज की आवश्यकता है। अंत में, यही कहूंगा कि हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी देश की असली ताकत उसकी महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण में निहित है। जब महिलाएं सुरक्षित महसूस करती हैं, तो वे जीवन के हर क्षेत्र में फल-फूल सकती हैं, योगदान दे सकती हैं और प्रगति को गति दे सकती हैं।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

पीएम मोदी ने अस्पताल जाकर शिबू सोरेन को दी श्रद्धांजलि, शोक में डूबे हेमंत सोरेन को बंधाया ढांढस

परिवहन विशेष न्यूज

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झामुमो के संस्थापक संरक्षक शिबू सोरेन का सोमवार सुबह निधन हो गया है. दिल्ली के गंगाराम अस्पताल में उन्होंने 81 साल की उम्र में अंतिम सांस ली. झारखंड और देश के बड़े आदिवासी नेता के तौर पर पहचाने जाने वाले शिबू सोरेन को सम्मान से दिशोम गुरु भी कहा जाता था.

पीएम मोदी ने किए अंतिम दर्शन

शिबू सोरेन के बेटे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सुबह उनके निधन की पुष्टि करते हुए एक इमोशनल मैसेज में लिखा, 'आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं. आज मैं शून्य हो गया हूं.' इसके अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत पक्ष-विपक्ष के तमाम दिग्गज नेताओं ने शिबू सोरेन के निधन पर शोक जताया है. पीएम मोदी ने दिल्ली के गंगाराम अस्पताल पहुंचकर शिबू सोरेन के पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन किए हैं.

इस दौरान अस्पताल से पीएम मोदी की कुछ तस्वीरें सामने आई हैं, जिसमें वह भावुक हेमंत सोरेन को ढांढस बंधाते दिख रहे हैं. हेमंत सोरेन हाथ जोड़कर पीएम मोदी के साथ खड़े हैं, और पीएम मोदी ने उनके कंधे पर अपना हाथ रख लिया है. इस फोटो में पीएम मोदी उन्हें सांत्वना देते दिख रहे हैं. दूसरी फोटो में हेमंत की पत्नी कल्पना सोरेन को भी देखा जा सकता है.

एक अन्य तस्वीर में पीएम मोदी, झामुमो नेता शिबू सोरेन के पार्थिव को सिर झुकाकर श्रद्धांजलि देते दिख रहे हैं. पीएम मोदी ने शिबू सोरेन के निधन पर दुख जताते हुए कहा, 'शिबू सोरेन एक जमीनी नेता थे, जिन्होंने जनसेवा के क्षेत्र में निरंतर समर्पण के साथ अपनी पहचान बनाई. वह खास तौर पर आदिवासी समुदायों, गरीबों और वंचितों के सशक्तिकरण के प्रति समर्पित थे.'

राहुल गांधी ने जताया दुख

पीएम मोदी ने आगे कहा, 'शिबू सोरेन के निधन से गहरा दुख हुआ है. मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और चाहने वालों के साथ हैं. मैंने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात कर शोक जताया है.' इसके अलावा नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अपनी संवेदनाएं जताते हुए कहा, 'झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और JMM के वरिष्ठ नेता शिबू सोरेन जी के निधन का समाचार सुनकर गहरा दुख हुआ. आदिवासी समाज की मज़बूत आवाज़, सोरेन जी ने उनके हक़ और अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया. झारखंड के निर्माण में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखा जाएगा. हेमंत सोरेन जी और पूरे सोरेन परिवार के साथ-साथ गुरुजी के सभी समर्थकों को गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं.'

झामुमो नेता शिबू सोरेन का अंतिम संस्कार मंगलवार को रांची में किया जाएगा. इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए रांची जाएंगे. झामुमो प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने पीटीआई को बताया कि गुरुजी का पार्थिव सोमवार शाम रांची लाया जाएगा और मंगलवार सुबह पार्थिव को रामगढ़ जिले में उनके पैतृक गांव नेमरा ले जाया जाएगा, जहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा.

रेत व गिट्टी खनन में करोड़ों का भ्रष्टाचार — प्रशासन मौन, जनता त्रस्त! ठेकेदार मस्त

ओड़शिा -सुंदरगढ़ जिला व उसके आस-पास के तहसील क्षेत्रों — गुरुंडिया, लाठीकाटा, बोनई, बारकोट एवं देवगढ़ तहसील — में रेत एवं गिट्टी खनन का कार्य बेतहाशा तरीके से, बिना वैध अनुमति और पर्यावरणीय शर्तों की अनदेखी करते हुए लगातार किया जा रहा है।

स्थानीय सूत्रों व क्षेत्रीय निरीक्षण के अनुसार, निम्नलिखित तथ्य सामने आए हैं:

गुरुंडिया व लाठीकाटा में नदी घाटों से रात के अंधेरे में बड़े पैमाने पर ट्रैक्टर व हाईवा से रेत की तस्करी खुलेआम की जा रही है, जिसमें स्थानीय प्रशासन की मौन सहमति बताई जा रही है ।गिट्टी का खनन लाखों टन किये गए पर रॉयल्टी व जी एस टी नाम मात्र1

बोनई एवं बारकोट क्षेत्रों में राजनीतिक संरक्षण में चल रहे खनन सिंडिकेट खुलेआम सरकारी नियमों की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं व कई पत्थर के भंडार एकड़ों में शून्य कर दिए गए हैं1

देवगढ़ तहसील में बिना पर्यावरणीय क्लियरेंस के खनन कर करोड़ों की अवैध कमाई हो रही है, जिसमें विभागीय अधिकारियों की संलिप्तता की पूर्णतः आशंका है - राष्ट्रीय राजमार्ग में करोड़ों के गिट्टी आपूर्ति किये गए बिना जी एस टी व रॉयल्टी के जो की निश्चय ही जाँच का विषय है1

प्रमुख आरोप

बिना टेंडर प्रक्रिया के पट्टे दिए गए,

खनिज रॉयल्टी व GST की भारी चोरी, नदी के इको-सिस्टम को गंभीर खतरा, ग्रामीण मार्गों की बर्बादी व ध्वनि- धूल प्रदूषण एंव मजदूरों के शोषण व सुरक्षा नियमों का उल्लंघन के साथ खनन में उपयोग किये जाने वाले विस्फोटक सामग्री के खरीद बिक्री व भंडारण में भारी अनिमियता1

प्रशासनिक उदासीनता - बार-बार शिकायतों के बावजूद न तो कोई कड़ी कार्रवाई हुई है, न ही पट्टों की वैधता की सार्वजनिक जांच। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशासनिक व राजनीतिक गठजोड़ के कारण यह अवैध व्यापार वर्षों से फल-फूल रहा है।

प्रमुख मांगें -

सभी ठेकादारों व विभागों में प्रयोग किये गए रेत व गिट्टी के रॉयल्टी व जीएसटी की पारदर्शिता पूर्ण जाँच हो, सभी टोलगेटों से खनन वाहनों के आवा जाहि की मिलान हो,

खनन पट्टों की न्यायिक जांच शीघ्रताशीघ्र कर उचित करवाई की जाए, अवैध खनन में लिप्त ठेकेदारों व अधिकारियों पर मुकदमे दर्ज हो, स्थानीय ग्रामीणों को पारदर्शिता के साथ लाभ व रोज़गार दिया जाए, रेत व गिट्टी परिवहन में लगे ट्रांसपोर्टर्स/ मोटर मालिकों का शोषण रोका जाए व 24x7 निगरानी हेतु ड्रोन व GPS आधारित निगरानी प्रणाली के सह प्रत्येक रेत घाटों व भंडारण क्षेत्रों में वैमेंट ब्रिज लगाएं जाएं।

हैदराबाद स्थित केसर गुट्टा धार्मिक स्थल पर सावन की सैर का कार्यक्रम मनाया गया

सीरवी समाज गुड़ा मोकमसिंह द्वारा सावन की सैर का कार्यक्रम मनाया गया । गुड़ा मोकमसिंह के सीरवी परिवार ने बताया की सावन महीने में सैर करना बहुत अच्छा लगा खासकर अगर आप प्रकृति प्रेमी हैं। बारिश के मौसम में हरियाली और ठंडी हवा का आनंद लेना एक सुखद अनुभव होता है। मंदिरों में भीड़ और कांवड़ियों को देखना भी एक अलग ही उत्साह भर देता है। मंदिर के प्रांगण में महिलाओं द्वारा सत्संग का आयोजन भी रखा गया था ।

उपमुख्यमंत्री कनक वर्धन सिंह देव ने घुमंतू प्रवासी संसाधन केंद्र का उद्घाटन किया

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: उपमुख्यमंत्री श्री कनक वर्धन सिंह देव ने आज कृषि भवन में घुमंतू प्रवासी संसाधन केंद्र या जागरूकता रथ का उद्घाटन किया। ओडिशा का पहला घुमंतू प्रवासी संसाधन केंद्र ओडिशा सरकार के कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) और अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन के संयुक्त सहयोग और संयुक्त राष्ट्र प्रवासी बहु-भागीदार ट्रस्ट फंड के सहयोग से शुरू किया गया है। यह गंजम और केंद्रपाड़ा के 5 प्रवासी-प्रभावित ब्लॉकों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से काम करेगा।इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री और प्रवासी श्रमिकों की सहायता के लिए गठित टास्क फोर्स के अध्यक्ष श्री कनक वर्धन सिंह देव ने कहा कि अब ओडिशा सरकार महिलाओं, युवाओं और वापस लौटे प्रवासियों के लिए विभिन्न आजीविका विकास कार्यक्रम और कौशल विकास, रोजगार मिलान पहल कर रही है। उन्हें अपने ही क्षेत्रों में रोजगार प्रदान करके आत्मनिर्भर बनाने के हमारे प्रयास शुरू हो गए हैं। आज का मोबाइल प्रवासी संसाधन केंद्र गाँवों में लोगों को जागरूक करेगा। इसके लिए सरकार द्वारा एक टोल-फ्री प्रवासी हेल्पलाइन - 1800-345-7885 शुरू की गई है। किसी भी आपात स्थिति या जानकारी के लिए आप इस नंबर पर डायल कर सकते हैं।

कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग के प्रमुख प्रशासनिक सचिव डॉ. अरविंद कुमार पाढ़ी ने कहा कि यह मोबाइल केंद्र प्रवासियों की मदद और पलायन की समस्या के स्थायी समाधान के लिए एक रूपरेखा योजना तैयार करने में मदद करेगा। उद्घाटन कार्यक्रम में भारत सरकार के श्रम, विदेश मंत्री श्री इंद्रमणि त्रिपाठी, मंत्रालय के प्रवासी संरक्षण अधिकारी, श्री सुनील शाह, कृषि विभाग के पूर्व सचिव श्री सुभ्रांशु मिश्रा, संयुक्त निदेशक डॉ. संजभव केशरी पटनायक, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन के सहायक निदेशक श्री नागेंद्र मल्लिक, श्री अमित चौधरी, अंकिता सुरभि, नवनीता, पूनमभरा प्रियदर्शिनी, श्रम एवं कर्मचारी राज्य बीमा विभाग, एफएओ, वासन, एसएमआरसी के अधिकारी उपस्थित थे।

किताबों में बंद कहानियाँ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास का आधार हैं

किताबें केवल काग़ज़ के पन्नों का ढेर नहीं होतीं। ये मानव के सदियों पुराने अनुभव, ज्ञान, आशाएँ और आँसुओं का अमूल्य संग्रह होती हैं। कहानियाँ वास्तव में हमारी संस्कृति, सभ्यता और सोच की दर्पण होती हैं। जब हम कहानियों को अपनाते हैं, तो हम अपने अतीत की आवाज़ और भविष्य की रौशनी से जुड़ते हैं। लेकिन जब हम इन्हे छोड़ देते हैं, तो हम अपनी पहचान, अपनी विरासत और अपनी सच्चाई से कट जाते हैं।

कहानियाँ क्यों ज़रूरी हैं?

1. पहचान और परिवार से जुड़ाव।

कहानियाँ हमें हमारी असली पहचान से जोड़ती हैं। यह हमारे पूर्वजों के संघर्ष, रीति-रिवाज और मूल्यों को सहेजकर, पीढ़ियों के बीच पुल का काम करती हैं।

2. ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान।

खाली बातों की जगह कहानियों के ज़रिये सीखना आसान और असरदार होता है। इनमें ज्ञान और नैतिकता प्राकृतिक ढंग से समाहित होती हैं।

3. कल्पना और सृजन।

जब हम कहानियाँ पढ़ते या सुनते हैं, तो हमारा मन नए-नए संसारों की रचना करता है, समस्याओं के नए समाधान खोजता है और जीवन के अनगिनत रंग खोजता है।

4. समझ और संवेदना।

दूसरों के अनुभवों, संघर्षों और सपनों से अवगत होकर हमारे भीतर करुणा विकसित होती है। यही भावना समाज को मानवता से जोड़ती है।

कहानियाँ छोड़ देना, क्या खो बैठते हैं?

कहानियाँ पढ़ना या सुनना बंद करने का अर्थ सिर्फ किताबें बंद करना नहीं है, बल्कि,

अपनी जड़ों से कट जाना

सामाजिक और नैतिक मूल्यों को भूल जाना

कल्पना और रचनात्मकता की शक्ति को खो देना

भिन्न संस्कृतियों और विचारों से अनजान रह जाना

और इस तरह सामाजिक चेतना में गिरावट आ जाना

हम क्या कर सकते हैं?

कहानियों को अपने और अपने बच्चों के जीवन में शामिल करें।

परिवार और मित्रों के साथ कहानियाँ साझा करें; अपने अनुभव सुनाएँ, दूसरों की कहानियाँ सुनें।

नई किताबें पढ़ें और पुरानी, अर्थपूर्ण कहानियों को ज़िंदा रखें।

कहानियों से मिले सबक को अपने हर रोज़ के निर्णयों और व्यवहार में लाएँ।

कहानी सिर्फ़ शब्द नहीं होती, वह सपना होती है, सबक होती है, भावना होती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलने वाली विरासत होती है। किताबों में बंद कहानियाँ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास का आधार हैं। इन्हें पढ़ना, बाँटना और समझना, खुद से जुड़ने और समाज से जुड़े रहने का सबसे सहज और सुंदर तरीका है।

कहानियाँ जीवन हैं, इनसे जितना जुड़ते जाएँगे, उतना ही अपनी असल पहचान, सभ्यता और चेतना से भी जुड़ते जाएँगे।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
सहज हरदा मध्य प्रदेश.

बहु चर्चित बालेशोर सौम्याश्री आत्महत्या कांड के 2 मुख्य अपराधी गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बालासोर फकीरमोहन ऑटोनॉमस कॉलेज की चर्चित इंटीग्रेटेड बी.एड छात्रा सौम्यश्री त्रियाकर की आत्महत्या के २३ दिन बाद क्राइम ब्रांच की टीम ने कार्रवाई की है। आत्महत्या के प्रयास में सहयोग करने वाले दो छात्रों को रविवार देर रात गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार छात्रों का नाम ज्योति प्रकाश बिस्वाल और सुधार संबित नायक है। दोनों को बालासोर एसडीजेएम के आवासीय कार्यालय से रात में गिरफ्तार किया गया। उनकी जमानत खारिज होने के बाद, दोनों को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।पीड़िता सौम्याश्री को बचाने की कोशिश में ज्योति प्रकाश घायल हो गए थे। कुछ दिन पहले ही कटक मेडिकल कॉलेज से इलाज कराकर वे घर लौटे थे। इलाज के दौरान ही क्राइम ब्रांच की टीम ने अस्पताल में उनसे घटना के संबंध में पूछताछ की। वहीं, सुधार संबित एबीवीपी छात्र संघ के प्रदेश संयुक्त सचिव हैं। सौम्याश्री को संभागीय विभागाध्यक्ष समीर साहू ने प्रताड़ित किया था। न्याय न मिलने पर १२ जुलाई को उन्होंने अध्यक्ष कार्यालय के सामने खुद पर पेट्रोल डाल लिया। 14 जुलाई को एम्स, भुवनेश्वर में इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इस सनसनीखेज घटना ने राज्य में हड़कंप मचा दिया। पुलिस ने विभागाध्यक्ष समीर साहू और अध्यक्ष दिलीप घोष को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया। क्राइम ब्रांच, उच्च शिक्षा विभाग और यूजीसी फैक्ट फाइंडिंग टीम की एक टीम कॉलेज पहुँची और घटना के विभिन्न पहलुओं की जाँच शुरू की। बताया जा रहा है कि क्राइम ब्रांच को आत्महत्या के आरोप में गिरफ्तार दोनों छात्रों के बीच संबंध के सबूत मिले हैं। जब छात्रा न्याय के लिए लड़ रही थी, तब कुछ छात्रों और समर्थकों ने उसे आत्महत्या के लिए उकसाया था। घटना के दिन सौम्याश्री के साथ मौजूद ज्योति प्रकाश ने अपने मोबाइल पर वीडियो रिकॉर्ड किया और उसे बचाने गए, लेकिन वे घायल हो गए।

सरायकेला में युवक का अपहरण कर फिरौती मांगने वाले धराये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला , इस जिले के सरायकेला अधीन सीनी आउट पोस्ट जो राजबाडे काल खंड में मोहित पुर थाना हुआ करता था , आज आहिस्ता आहिस्ता अपराध के गिरफ्त मे समा रहा है । अपराधकर्मी इंसान को उठाने लगे जहां कभी अंग्रेजो को आने में डर लगता था ।

इसी क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम कमलपुर के एक युवक का अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा अपहरण कर फिरौती की मांग की गयी थी ।इस संदर्भ में अज्ञात अपराधकर्मियों के विरूद्ध प्रसांगिक काण्ड अंकित किया गया था ।काण्ड की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक लुनायत ने सरायकेला-खरसावाँ जिला पुलिस द्वारा एक टीम का गठन किया । अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में गठित उस एस आई टी टीम द्वारा अनुसंधान के क्रम में दिनांक 24 जुलाई को अपहृत (युवक) को सकुशल बरामद कर लिया गया । तकनिकी एवं मनवीय साक्ष्य के आधार पर काण्ड का उद्भेदन करते हुए साजिशकर्ता अब्दुल्ला खान उर्फ अब्दुल्ला फैजी, उम्र 19 वर्ष, पिता जफर अली निवासी कमलपुर के पास से घटना में प्रयुक्त मोबाईल फोन तथा इनके निशानदेही परएक देशी कट्टा और एक गोली को बरामद करते हुए दिनांक 25 जुलाई को गिरफ्तार कर पूर्व में न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है ।

अनुसंधान के क्रम में घटना में शामिल मुख्य अपहरणकर्त्ता शेख अजहरुद्दीन उम्र 37 वर्ष निवासी कमलपुर, सीनी जो मुलत माधगो का रहने वाला है ।दुशरा मो0 कलिम, उम्र करीब 43 वर्ष ,तिहरा अमीर खान उर्फ भोन्दा उम्र – 20 वर्ष । इनके पास से घटना में प्रयुक्त मोबाईल फोन एवं गिरफ्तार अभियुक्तों के निशानदेही पर अपहरण करने के लिए इस्तेमाल किया गया एक कार तथा एक देशी पिस्टल 06 गोली के साथ बरामद करते हुए जप्त किया गया है ।पुलिस विज्ञप्ति अनुसार काण्ड में शेष बचे अभियुक्त के विरूद्ध छापामारी जारी है ।

सावन सैर का कार्यक्रम 6 अगस्त को

मेडचल एल्मपेट स्थित श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर 6 अगस्त बुधवार सावन शुक्लपक्ष द्वादशी तिथि १.08 मिनट से त्रयोदशी दो तिथियों का अदभुत मेल देव भूमि उत्तराखंड की तेलंगाना की प्रवासी भारतीय माताएं- बहनों का सावन की सैर (सावन के महीने में "सैर" का मतलब है, इस दौरान धार्मिक स्थलों, खासकर शिव मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता वाले स्थानों पर जाना। सावन, भगवान शिव को समर्पित एक पवित्र महीना है) श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर मेढ़चल में मनाई जाएगी । देवभूमि उत्तराखंड सेवा संस्थान की महिला अध्यक्षा श्रीमती दीप्ति रावत के अनुसार इस दिन प्रात: 10 बजे से सभी बहने सामूहिक सम्पूर्ण रुद्राभिषेक करवाएंगी और गौ सेवा करेंगी, बच्चों का तुला दान आदि पवित्र कार्यों में भाग लेंगी । उसके बाद 11 बजे से श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर प्रांगण में स्थित श्री रुद्रनाथ शिव मंदिर में भजन कीर्तन होंगे दोपहर भोजन प्रसाद के बाद सभी बहने राधा कृष्ण की मूर्ति के साथ झूला झूलने का दिव्य प्रोग्राम में शामिल होंगी और उसके बाद उत्तराखंड के देवी - देवताओं को मनाने झोड़ा चांचरी गाएंगी ।

जीडिमेटला स्थित श्री आई माताजी बडेर भवन मे स्व . श्रीमती नोजी देवी चोयल की श्रद्धांजलि सभा मे पुष्प अर्पित करते हुए खरताराम, जोराराम , चेनाराम , रुघाराम, सुरेश, दिलीप, हितेश,धावल,वेदांश चोयल। सीरवी समाज के गणमान्य मांगीलाल काग, प्रेम पंवार, संतोष चोयल , सोहनलाल परिहार,राजूराम बर्फा, मांगीलाल सोलंकी, ,मोहनलाल हाम्बड़, लुम्बाराम मुलेवा, भोलाराम पंवार,हरजीराम काग, आशाराम गेहलोत, भीकाराम काग,राजुराम, हुक्माराम सानपुरा,चुन्नीलाल , जीवाराम हाम्बड़,भीमाराम थानाराम, मगाराम, भीकाराम, झालाराम, मगनाराम, वेनाराम अमराराम,सजाराम, नेमाराम, पीथाराम, सुजाराम,कुनाराम चोयल, रमेश गेहलोत, प्रकाश पंवार, मोहन हाम्बड़, रामचन्द्र सुथार, महिला मंडल व समाज बन्धु ।

नगर निगम द्वारा मकबूलपुरा चौक पर 7 दिवसीय सफाई एवं सौंदर्यीकरण अभियान जारी

अमृतसर, 04 अगस्त (साहिल बेरी)

नगर निगम कमिश्नर गुलप्रीत सिंह औलख के नेतृत्व में शहर की सड़कों के सौंदर्यीकरण और सफाई के लिए एक 7 दिवसीय अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान की शुरुआत 28 जुलाई 2025 को शहर के मुख्य प्रवेश द्वार गोल्डन गेट से की गई थी।

इस मुहिम में डेरा बाबा भूरी वालों का विशेष योगदान है। नगर निगम और डेरा की टीमें मिलकर जी.टी. रोड पर सड़कों की सफाई, घास और जंगली झाड़ियों को हटाना, एस्टेट विभाग द्वारा अतिक्रमण और रेहड़ियों को हटाना, सिविल विभाग द्वारा मलबे के ढेर उठाना, सड़कों की मरम्मत और पैचवर्क, ओ एंड एम विभाग द्वारा मैनहोल और सीवरेज के ढक्कनों की मरम्मत तथा विज्ञापन विभाग द्वारा अवैध विज्ञापनों और बोर्डों को हटाने का कार्य कर रही हैं। इस अभियान में शहर की कई रिहायशी, सामाजिक और व्यावसायिक संस्थाएं सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

इसी कड़ी में आज 4 अगस्त 2025 को अभियान के सातवें दिन अतिरिक्त कमिश्नर सुरिंदर सिंह के नेतृत्व में मकबूलपुरा चौक, जी.टी. रोड पर अभियान को आगे बढ़ाया गया। आज के इस अभियान में महता रोड, मकबूलपुरा चौक की रिहायशी वेलवयर सोसाइटी के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर सहयोग दिया और सफाई संबंधी कार्यों में हिस्सा लिया।

अतिरिक्त कमिश्नर सुरिंदर सिंह ने बताया कि इस अभियान को शहरवासियों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। कई धार्मिक, व्यावसायिक और सामाजिक संस्थाएं नगर निगम से संपर्क कर रही हैं ताकि वे भी शहर की सुंदरता के लिए योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि यह अभियान शहर के हर क्षेत्र में चलाया जाएगा और जो संस्थाएं अपने-अपने इलाकों में विकास कार्य कर रही हैं, वे भी निगम के सहयोग से और अधिक सुधार कर सकती हैं।

उन्होंने कहा कि सफाई और सुंदरता तभी टिकाऊ हो सकती है जब समाज के हर वर्ग का सहयोग मिले। उन्होंने शहरवासियों से अपील की कि वे नगर निगम का साथ देकर शहर को साफ, स्वच्छ और हरा-भरा बनाने में योगदान दें। इस अवसर पर निगरानी इंजीनियर संदीप सिंह, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. किरण, डॉ. योगेश अरोड़ा, एस्टेट अधिकारी धर्मिंदरजीत सिंह, कार्यकारी इंजीनियर भलिंदर सिंह, मुख्य सैनिटरी इंस्पेक्टर और बड़ी संख्या में कर्मचारी और स्थानीय नागरिक उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023